

HONE { OFF. : 3237
RES. : 3237 EXT.

MIR 

louse

culture Goods,

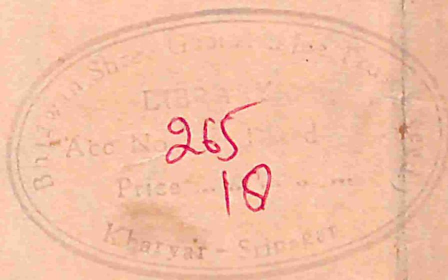
erials

Suppliers ★

BRIDGE, SRINAGAR,

KASHMIR.





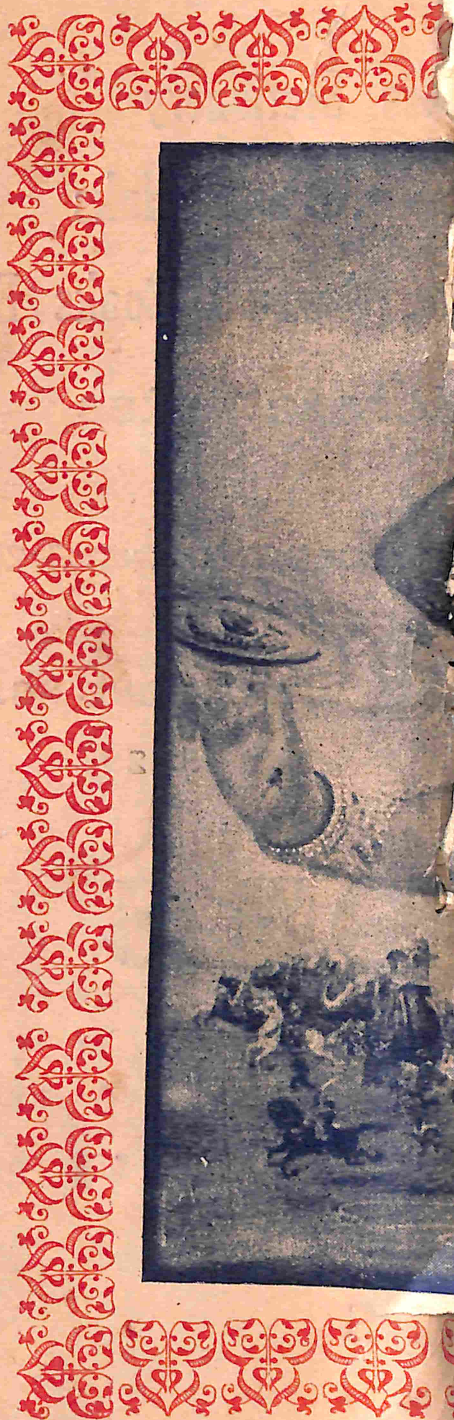
," ★

es

or Blasting Fuses







WISH YO

KIN

M

Distributors for :-

ARYAN Brush Co.	BLACK MAGIC & Broot products	H P

षभी उत्पन्नहुईनहीं ॥ ऐसेजेकर्मोंकेअधिकारीपुरुषहैं ॥ ऐसेकर्मोंकेअधिकारीपुरुषोंनैंकन्याजो किंचित्कर्मोंकाग्रहणकरिकै किंचित्कर्मोंकापरित्यागहै ॥ सोकर्मों
कापरित्याग त्यागअंशरूप गुणकेयोगतैं गौणीवृत्तितैं संन्यासशब्दकरिकै कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारका अंतःकरणकीशुद्धिवासतै अविद्वान्कर्मके अधिकारीपुरुषनैं
कन्याजो संन्यासहै ॥ जोसंन्यास सर्वप्रकारतैं कर्मोंकात्यागरूपहैनहीं ॥ किंतु किसीकरूपकरिकै कर्मोंकात्यागरूपहै ॥ इसप्रकारके संन्यासकेस्वरूपकूं मैंअर्जुन
सात्त्विक राजस तामस इसप्रकारकेभेदकरिकै जानणेकीइच्छाकरताहूं ॥ तथा त्यागकेस्वरूपकूंभी मैं सात्विकादिकभेदकरिकै जानणेकीइच्छाकरताहूं ॥ तहां
संन्यासत्यागयहदोनोंशब्द घट पट इनदोनोंशब्दोंकीन्यांई भिन्नभिन्नजातिवाले अर्थकेवाचकहैं ॥ अथवा घट कलश इनदोनोंशब्दोंकीन्यांई एकहीं जातिवाले
अर्थकेवाचकहैं ॥ तहां इनदोनोंपक्षोंविषे जबी आदिपक्ष अंगीकारहोवै ॥ तबी त्यागकेस्वरूपकूं संन्यासतैंपृथक्करिकै मैं जानणेकीइच्छाकरताहूं ॥ और
जबी द्वितीयपक्ष अंगीकारहोवै॥ तबी संन्यास त्याग इनदोनोंशब्दोंकेप्रवृत्तिकानिमित्तभूत अवांतरउपाधिकाभेदमात्र कह्याचाहिये॥ संन्यास त्याग इनदोनोंविषे एकके
व्याख्यानकरिकैहीं दोनोंकाव्याख्यान सिद्धहोवैगा इति ॥ तहां महान्हैंदोनोंबाहुजिसकी ताकानाम महाबाहुहै ॥ और केशिनामादैत्यकूं जो नाशकरताभयाहै
ताकानाम केशिनिषूदनहै ॥ इनदोनोंसंबोधनोंकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे बाह्यउपद्रवोंकेनिवृत्तकरणेकासामर्थ्य सूचनकन्या ॥ और हृषीकनाम इंद्रियोंका
है ॥ तिनइंद्रियोंकाजोईशहोवै अर्थात् प्रवर्त्तकहोवै ताकानाम हृषीकेशहै ॥ इससंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे अंतरकामक्रोधादिकउपद्रवोंकेनि
वृत्तकरणेकासामर्थ्य सूचनकन्या ॥ ईहां भगवत्विषयकअत्यंतअनुरागतैं अर्जुननैं भगवान्केतीनसंबोधनकथनकन्येहैं इति ॥ तहां इसश्लोकविषे अर्जुनकेदोप्रश्न
सिद्धहुए॥ तहां कर्मकेअधिकारीअविद्वान्पुरुषोंनैं कन्याजो संन्यासहै॥ तिससंन्यासविषे पूर्वउक्तयज्ञादिककर्मोंका साधर्म्यभी रहेहै ॥ तथा पूर्वउक्तगुणातीतरूपदोप्रका
रकेसंन्यासका साधर्म्यभी रहेहै ॥ तहां जैसे पूर्वउक्तयज्ञादिककर्म कर्मकेअधिकारीपुरुषनैंहीं करीतेहैं ॥ तैसे यहसंन्यासभी कर्मकेअधिकारीपुरुषनैंहीं कन्याहै ॥
यहहीं इससंन्यासविषे पूर्वउक्तयज्ञादिककर्मोंका समानधर्महै ॥ और जैसे पूर्वउक्त गुणातीतनामा दोप्रकारकासंन्यास संन्यासशब्दकरिकै प्रतिपादनकन्याजावैहै ॥
तैसे यहसंन्यासभी संन्यासशब्दकरिकै ॥ प्रतिपादनकन्याजावैहै ॥ यहहीं इससंन्यासविषे पूर्वउक्त गुणातीतनामा दोप्रकारकेसंन्यासका समानधर्महै ॥ इसप्रकार
यज्ञादिकोंकेसमानधर्मकरिकै तथागुणातीतनामादोनोंसंन्यासोंकेसमानधर्मकरिकै जो इससंन्यासविषे त्रिगुणताकेसंभवअसंभवदोनोंकरिकै संशयहोवैहै ॥ सोसंशयतौं
प्रथमप्रश्नकाबीजरूपहै ॥ और संन्यास त्याग इनदोनोंशब्दोंकूं घट कलश इनदोशब्दोंकीन्यांई पर्यायरूपताहोणेतैं कर्मोंकेत्यागरूपकरिकै तथाकर्मफलकेत्यागरूप
करिकै तिनदोनोंकेविलक्षणताकेकथनतैं उत्पन्नहुआजो [illegible] श्नकाबीजरूपहै इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां सूचीकटाहन्यायकरिकै

अंत्यप्रश्नकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् उत्तरकूं कथन[illegible]हुतप्रयत्नसाध्यकटाहकूं छोडिकै प्रथम अल्पप्रयत्नसाध्य सूचीकूंब नाइदेवैहै ॥ तैसे बहुतविस्तारतैंप्रतिपादनकरणेयोग्यअर्थकूं छोडिकै प्रथम थोडेमैंप्रतिपादनकरणेयोग्यअर्थकाकथनकरणा याकूं सूचीकटाहन्यायकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ काम्यानांकर्मणांन्यासंसंन्यासंकवयोविदुः ॥ सर्वकर्मफलत्यागंप्राहुस्त्यागंविचक्षणाः ॥ २ ॥

काम्यानां । कर्मणां । न्यासं । संन्यासं । कवयः । विदुः । सर्वकर्मफलत्यागं । प्राहुः । त्यागं । विचक्षणाः ॥२॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन काम्यकर्मोंके त्यागकूं सूक्ष्मदर्शीपुरुष संन्यास जानेहैं तथाविचारविषे कुशलपुरुष सर्वकर्मोंकेफलकेत्यागकूं त्याग कहेहैं ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन(स्वर्गकामोयजेत पुत्रकामोयजेत पशुकामोयजेत)इत्यादिकविधिवचनोंनैं स्वर्गादिफलकीकामनावालेपुरुषकेप्रति विधानकऱ्येजे ज्योतिष्टोमादिक काम्यकर्महैं ॥ जेकाम्यकर्म अंतःकरणकीशुद्धिविषे किंचित्मात्रभी उपयोगकरतेनहीं ॥ ऐसेकाम्यकर्मोंका जोत्याग ॥ तिसत्यागकूं केईकसूक्ष्मदर्शीपुरुष संन्यासरूपजानेहैं ॥ काहेतैं ॥ (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेन) इसश्रुतिनैं नित्यकर्मोंकाहीं प्रतिबंधकपापोंकीनिवृत्तिद्वारा आत्मज्ञानविषेउपयोग कथनकऱ्याहै॥ तहां इसश्रुतिविषे वेदानुवचनशब्द ब्रह्मचारीके सर्वधर्मोंकाउपलक्षणहै ॥ और यज्ञ दान यहदोनोंशब्द गृहस्थके सर्वधर्मोंकेउपलक्षणहै॥ और तप अनाशकयहदोनोंशब्द वानप्रस्थकेसर्वधर्मोंकेउपलक्षणहैं इति ॥ और (ज्ञानमुत्पद्यतेपुंसांक्षयात्पापस्यकर्मणः) इत्यादिकवचनोंनैंभी प्रतिबंधकपापकीनिवृत्तिद्वारा नित्यकर्मोंकाहीं आत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे उपयोग कथनकऱ्याहै ॥ यातैं नित्यकर्मोंकाहीं आत्माविषे अथवा आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषाविषे उपयोगहै ॥ काम्यकर्मोंका आत्मज्ञानविषे तथाविविदिषाविषे किंचित्मात्रभी उपयोगनहींहै ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक तथा विविदिषाकीउत्पत्तिपूर्वक आत्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छावान्पुरुषनैं भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै नित्यकर्मोंकाहींअनुष्ठानकरणा ॥ और काम्यकर्मतौं तिसतिस फलसहित सर्वहीं परित्यागकरणे ॥ यहएकमत कथनकऱ्या ॥ अब द्वितीयमतका कथनकरेहैं (सर्वकर्मफलत्यागंप्राहुस्त्यागंविचक्षणाःइति) हेअर्जुन सर्वकाम्यकर्मोंके तथासर्वनित्यकर्मोंके जोफलकात्यागहै ॥ अर्थात् अंतःकरणकेशुद्धिकीइच्छाकरिकै विविदिषाकीप्राप्तिवासतै जो तिन काम्यरूपनित्य सर्वकर्मोंकाअनुष्ठानहै ॥ तिस सर्व कर्मकेफलकेत्यागकूं विचारविषेकुशलपुरुष त्यागरूप कहेहैं ॥ यद्यपि (स्वर्गकामोयजेत पुत्रकामोयजेत पशुकामोयजेत) इत्यादिकवचनोंनैं ज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्मोंके स्वर्ग पुत्र पशु इत्यादिक भिन्नभिन्नफलहीं कथनकऱ्येहैं ॥ तथापि इसअधिकारीपुरुषनैं तिसतिसस्वर्गादिकफलकीनहींइच्छाक

रिकै तेकाम्यकर्मभी अंतःकरणकीशुद्धिवासतैंहींकरणे ॥ काहेतैं अग्निहोत्रादिककर्मोंविषे स्वभावतैंतौं नित्यपणा अथवा काम्यपणा होतानहीं ॥ किंतु कर्त्तापु रुषकेअभिप्रायविशेषकरिकैहीं तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंविषे नित्यपणा अथवा काम्यपणा सिद्धहोवैहै ॥ तहां जोअग्निहोत्र स्वर्गादिकफलकीइच्छापूर्वक कऱ्याजावैहै ॥ तिसअग्निहोत्रविषेतैं काम्यपणा होवैहै ॥ और जोअग्निहोत्र स्वर्गादिफलकीइच्छातैंरहितहोइकै केवलभगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै कऱ्याजावैहै ॥ तिसअग्निहोत्रविषे नित्यपणाहोवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषाविषे केवल नित्यकर्मोंकाहीं उपयोगहोवैहै ॥ तिसविविदिषाविषे काम्यकर्मोंका किंचित्मात्रभी उपयोगहोवैनहीं ॥ यातैं इसमुमुक्षुजनोंनैं तिनकाम्य कर्मोंका तिसतिसफलसहित स्वरूपतैंहींपरित्यागकरणा ॥ यहतौं इसश्लोकके पूर्वार्धकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ और तिसविविदिषाविषे जैसे नित्यकर्मोंकाउपयोगहोवैहै ॥ तैसे तिसतिसफलकीइच्छातैंरहित काम्यकर्मोंकाभी उपयोगहोवैहै ॥ यातैं तिसविविदिषाकीप्राप्तिवासतै तिनकाम्यकर्मोंका तथानित्यकर्मोंका स्वरूपतैंअनुष्ठानकीयेहुएभी इसअधिकारीपुरुषनैं तिसतिसकर्मके तिसतिसफलकीइच्छा मात्रका परित्यागकरणा ॥ यह श्लोककेउत्तरार्धकाअर्थ सिद्ध होवैहै ॥ इसकहणेकरिकै यहअर्थसिद्धभया ॥ फलसहित काम्यकर्ममात्रकाजोत्यागहै ॥ सोत्यागतौं संन्यासशब्दका अर्थहै ॥ और नित्यकाम्यरूपसर्वकर्मोंकेफलकीइच्छामात्रकाजोपरित्यागहै ॥ सोत्याग त्यागशब्दकाअर्थहै ॥ यातैं जैसे घट पट इनदोनोंशब्दोंका भिन्नभिन्नजातिवालाअर्थहोवैहै ॥ तैसे संन्यास त्याग इनदोनोंशब्दोंका भिन्नभिन्नजातिवालाअर्थनहींहै ॥ किंतु अंतःकरणकीशुद्धिवासतै स्वरूपतैंकर्मोंकेअनुष्ठानहुएभी तिसतिसकर्मके तिसतिसफलकीइच्छाकोपरित्यागरूप एकहींअर्थ तिनदोनोंशब्दोंकासिद्धहोवैहै इसप्रकारतै इसश्लोककरिकै एकप्रश्न कानिर्णय सिद्धभया इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ अब द्वितीयप्रश्नकेउत्तरकहणेवासतै संन्यासशब्दकेअर्थविषे तथात्यागशब्दकेअर्थविषे त्रिविधपणेकेनिरूपणकर णेवासतै प्रथम तिसअर्थविषे वादीयोंकेविप्रतिपत्तिकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) त्याज्यंदोषवदित्येकेकर्मप्राहुर्मनीषिणः ॥ यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यमितिचापरे ॥ ३ ॥ त्याज्यम् । दोषवत् । इति । एके । कर्म । प्राहुः । मनीषिणः । यज्ञदानतपःकर्म । न । त्याज्यम् । इति । च । अपरे ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअ र्जुन रागद्वेषादिकदोषकीन्यांई कर्मभी परित्यागकरणेयोग्यहैं इसप्रकार केईक बुद्धिमान्पुरुष कहतेहैं तथा यज्ञदानतपरूपकर्म नहीं त्यागकरणेयोग्यहैं इसप्रकार दूसरेबुद्धिमान्पुरुषकहतेहैं ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नित्य नैमित्तिक काम्य प्रायश्चित्त [illegible] सर्वहींकर्म [illegible]षके बंधकेहेतुहोणेतैं दोषवत्हैं ॥ अर्थात् तेसर्वकर्म दोषवालेहैं ॥ यातैं

अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित कर्मकेअधिकारीपुरुषोंनैंभी तैस [illegible] रित्यागही [illegible] योग्यहैं ॥ इसप्रकार केईक बुद्धिमान्‌पुरुष कहेहैं ॥ अथवा इसवचनका यहदूसराअर्थ करणा ॥ जैसे रागद्वेषादिकदोष इसअधिकारीपुरुषनैं परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ तैसे नहींउत्पन्नहुआ है आत्मज्ञानजिनोंकूं तथानहींउत्पन्नहुईहै विविदिषाजिनोंकूं ऐसेकर्मोंकेअधिकारीपुरुषोंनैंभी आपणेबंधकाहेतुजानिकै तेसर्वकर्म परित्यागहींकरणेयोग्यहैं ॥ यह श्लोककेपूर्वार्धकरिकै एकपक्षसिद्धभया ॥ अब श्लोककेउत्तरार्धकरिकै द्वितीयपक्ष कथनकरेहैं (यज्ञदानतपःकर्मइति) हेअर्जुन अंतःकरणकी शुद्धितैंरहित कर्मोंकेअधिकारीपुरुषोंनैं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा विविदिषाकीउत्पत्तिवासतै यज्ञदानतपरूपकर्म कदाचित्‌भीनहींपरित्यागकरणे ॥ इसप्रकार केईक दूसरेबुद्धिमान्‌पुरुष कहेहैं इति ॥ ३ ॥ ❁ ॥ इसप्रकार कर्मोंकेपरित्यागविषे वादीयोंकीविप्रतिपत्तिकूं कथनकरिकै अब श्रीभगवान् आपणेनिश्चयकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) निश्चयंशृणुमेतत्रत्यागेभरतसत्तम ॥ त्यागोहिपुरुषव्याघ्रत्रिविधःसंप्रकीर्त्तितः ॥ ४ ॥ निश्चयं । शृणु । मे । तत्र । त्यागे । भरतसत्तम । त्यागः । हि । पुरुषव्याघ्र । त्रिविधः । संप्रकीर्तितः ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभरतकुलविषेश्रेष्ठअर्जुन तिस कर्मत्यागविषे हमारे निश्चयकूं तूं श्रवणकर हेसर्वपुरुषोंविषे श्रेष्ठ अर्जुन जिसकारणतैं सोत्याग तीनप्रकारका कथनकऱ्याहै ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित जोकर्मोंकाअधिकारीपुरुषहै ॥ सोकर्मोंकाअधिकारीपुरुषहैकर्त्ताजिसका तथासंन्यासत्यागइनदोनोंशब्दोंकरिकै प्रतिपादनकऱ्याहुआ ऐसाजो फलकीइच्छापूर्वककर्मोंकापरित्यागहै ॥ जिसत्यागकास्वरूप पूर्वतुमनैं हमारेसैं पूछाहै ॥ तिसत्यागविषे पूर्वआचार्योंनैं कऱ्याजो निश्चयहै ॥ तिसनिश्चयकूं तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकेवचनतैं श्रवणकर ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसत्यागविषे ऐसीक्यादुर्विज्ञेयताहै ॥ जिसकूं मैंआपकेवचनतैं श्रवण करूं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिसत्यागकीदुर्विज्ञेयताकूंकथनकरेहै (त्यागोहिइति) हेअर्जुन कर्मोंकाअधिकारीपुरुषहैकर्त्ताजिसका ऐसाजो फलकी इच्छापूर्वककर्मोंकात्यागहै ॥ सोत्याग जिसकारणतैंवेदवेत्तापुरुषोंनैं तीनप्रकारका कथनकऱ्याहै॥ अर्थात् तामस राजस सात्विक इसभेदकरिकैसोत्यागतीनप्रकार का कथनकऱ्याहै ॥ अथवा (त्रिविधःसंप्रकीर्तितः) इसवचनका यहअर्थकरणा॥ फलकीइच्छारूपविशेषणकरिकै विशिष्ट जोकर्महै ॥ तिसइच्छाविशिष्टकर्मका जोत्यागहै॥सोविशिष्टाभावरूप त्यागविशेषणकेअभावतैं अथवा विशेष्यकेअभावतैं अथवा विशेषणविशेष्यदोनोंकेअभावतैं तीनप्रकारका कथकऱ्याहै ॥ सोप्रकार दिखावैहैं ॥ और कहांतौं विशेषणकेअभावतैं विशिष्टकाअभावहोवैहै ॥ और कहांतौं विशेष्यकेअभावतैं विशिष्टकाअभावहोवैहै॥ और कहां तौंविशेषण विशेष्य

दोनोंकेअभावतैं विशिष्टकाअभावहोवैहै ॥ जैसे दंडरूपविशेषणकारिकैविशिष्टदंडीपुरुषका जोअभावहै ॥ सोविशिष्टाभाव कह्याजावैहै ॥ सोशिविष्टाभाव विशे
षणकेअभावतैं अथवा विशेष्यकेअभावतैं अथवा विशेषणविशेष्यदोनोंकेअभावतैं होवैहै ॥ तहां जहां पुरुषरूपविशेष्यकेविद्यमानहुएभी दंडरूपविशेषणका अभाव
होवैहै ॥ तहांभी दंडीपुरुष नहींहै याप्रकारकी विशिष्टाभावविषयक प्रतीतिहोवैहै ॥ ईहां दंडरूपविशेषणकेअभावतैं दंडविशिष्टपुरुषका अभावहोवैहै ॥ और
जहांदंडरूपविशेषणकेविद्यमानहुएभी पुरुषरूपविशेष्यका अभावहोवैहै ॥ तहांभी दंडीपुरुष नहींहै याप्रकारकी विशिष्टाभावविषयक प्रतीतिहोवैहै ॥ ईहां पुरुष
रूपविशेष्यकेअभावतैं दंडविशिष्टपुरुषकाअभावहोवैहै ॥ और जहां दंडरूपविशेषणकाभीअभावहोवैहै तथापुरुषरूपविशेष्यकाभीअभावहोवैहै ॥ तहांभी दंडी
पुरुषनहींहै याप्रकारकी विशिष्टाभावविषयक प्रतीतिहोवैहै ॥ ईहां दंडरूपविशेषणके तथापुरुषरूपविशेष्यके दोनोंकेअभावतैं दंडविशिष्टपुरुषकाअभाव होवैहै ॥
तैसे ईहांप्रसंगविषे फलकीइच्छारूपविशेषणकरिकै विशिष्टजोकर्महै तिसविशिष्टकर्मकात्यागरूप विशिष्टाभावभी इच्छारूपविशेषणकेअभावतैं अथवा कर्मरूप
विशेष्यकेअभावतैं अथवा इच्छारूपविशेषणके तथाकर्मरूपविशेष्यके दोनोंकेअभावतैं तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां कर्मरूपविशेष्यकेविद्यमानहुएभी फलकीइच्छा
रूपविशेषणकेपरित्यागतैं जो इच्छाविशिष्टकर्मकात्यागहै ॥ सोइच्छारूपविशेषणकेअभावतैं इच्छाविशिष्टकर्मकाअभावरूप त्यागहै ॥ यहप्रथमत्यागहै ॥ और
फलकीइच्छारूपविशेषणकेविद्यमानहुएभी कर्मरूपविशेष्यकाजोपरित्यागहै ॥ सो कर्मरूपविशेष्यकेअभावतैं इच्छाविशिष्टकर्मकाअभावरूप त्यागहै ॥ यहदूसरा
त्यागहै ॥ और फलकीइच्छारूपविशेषणके तथाकर्मरूपविशेष्यके दोनोंकेपरित्यागतैं जो इच्छाविशिष्टकर्मकापरित्यागहै ॥ सो विशेषण विशेष्य दोनोंकेअभावतैं
इच्छाविशिष्टकर्मकाअभावरूप त्यागहै ॥ यहतीसरात्यागहै ॥ तहां प्रथम कर्मकात्यागतौं सात्त्विकहोणेतैं ग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ और दूसरा त्यागतौं राजस
तामस इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ सोदोनोंप्रकारकाहीं दूसरात्याग परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ तहां दुःखबुद्धिकरिकै कऱ्याहुआ सोकर्मोंकात्याग राजस
कह्याजावैहै ॥ और भ्रांतिरूपविपर्यासकरिकै कऱ्याहुआ सोकर्मोंकात्याग तामस कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारका कर्मकेअधिकारीपुरुषनैं कऱ्या जो कर्मोंकात्यागहै ॥
सोत्यागहीं ईहां अर्जुनकेप्रश्नकाविषयहै ॥ और शुद्धअंतःकरणवालाहोणेतैं कर्मोंकाअनधिकारीजोपुरुषहै ॥ सोकर्मोंकाअनधिकारीपुरुषहैकर्त्ताजिसका ऐसाजो
तीसरा गुणातीतनामा त्यागहै ॥ सोत्याग ईहां अर्जुनकेप्रश्नकाविषयहैनहीं सोगुणातीतनामा कर्मोंकात्यागभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं साधनरूपहोवैहै ॥
और दूसरा फलरूपहोवैहै तहां फलकीइच्छाकेत्यागपूर्वक कर्मोंकाअनुष्ठानरूप जोसात्विकत्यागहै ॥ तिससात्त्विकत्यागकरिकै शुद्धहुआहैअंतःकरणजिसका तथा
उत्पन्नहुईहैआत्मज्ञानकीइच्छारूपाविविदिषाजिसकूं तथाआत्मज्ञानकेसाधनभूत श्रवणमननरूपवेदांतविचारकेवासतै स्वर्गादिकसर्वफलोंकीइच्छातैंरहित ऐसाजो

अधिकारीपुरुषहै ॥ ऐसेअधिकारीपुरुषनैं अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर कऱ्याजो तिनशुद्धिकेसाधनभूतसर्वकर्मोंका परित्यागहै ॥ सोकर्मोंकापरित्यागतौं प्रथम साधनरूपत्याग कह्याजावैहै ॥ इसीसाधनरूपत्यागकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विविदिषासंन्यास कहेहैं ॥ इसीसाधनरूपविविदिषासंन्यासकूं श्रीभगवान् आगे (नैष्कर्म्य सिद्धिंपरमाम्) इसवचनकरिकै कथनकरैंगा ॥ और जन्मांतरोंविषेकऱ्याजो श्रवणादिकसाधनोंकाअभ्यासहै ॥ तिसअभ्यासकेपरिपाकतैं इसजन्मविषे प्रथमहीं उत्पन्नहुआहैआत्मसाक्षात्कारजिसकूं ऐसाजो कृतकृत्य विद्वान् पुरुषहै ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषनैं स्वतःहीं कऱ्याजो फलकीइच्छाका तथाकर्मोंका परित्यागहै ॥ सोकर्मोंकापरित्याग दूसरा फलरूपत्याग कह्याजावैहै ॥ इसीफलरूपत्यागकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विद्वत्संन्यास कहेहैं ॥ सोफलभूतविद्वत्संन्यास श्रीभगवान्नैं (यस्त्वात्मरतिरेवस्यात्) इत्यादिकदोश्लोकोंकरिकै पूर्व व्याख्यानकऱ्या ॥ तथा स्थितप्रज्ञपुरुषकेलक्षणादिकोंकरिकैभी पूर्व बहुताविस्तारतैंकथनकऱ्याहै इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं इसपूर्वउक्तरीतितैं त्यागकास्वरूप अत्यंत दुर्विज्ञेयहै ॥ और तुमनैं (त्यागस्यतत्त्ववेदितुमिच्छामि) इसवचनकरिकै पूर्व त्याग केस्वरूपजानणेकी प्रार्थनाकरीहै ॥ तिसकारणतैं मैंसर्वज्ञपरमेश्वरकेवचनतैंहीं तिसत्यागकेयथार्थस्वरूपकूं तूंअर्जुन निश्चयकर इति ॥ ईहां (हेभरतसत्तम हेपुरुष व्याघ्र) इनदोसंबोधनोंकरिकै श्रीभगवान्नैंअर्जुनविषे यथाक्रमतैं कुलनिमित्तकउत्कर्ष तथास्वपौरुषनिमित्तकउत्कर्ष कथनकऱ्या ताकरिकै तिसअर्जुनविषेतिसत्या गकेस्वरूपनिश्चयकरणेकीयोग्यता सूचनकरी इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (त्याज्यंदोषवदित्येके) इसश्लोकविषेकथनकरीजा वादियोंकीविप्र तिपत्तिहै ॥ तिसविप्रतिपत्तिके कोटिभूतदोनोंपक्षोंविषे कौंनआपकानिश्चयहै ॥ क्याप्रथमपक्ष आपकानिश्चयहै ॥ अथवा द्वितीयपक्ष आपकानिश्चयहै ॥ अथवा इनदोनोंपक्षोंतैंभिन्न कोईतीसराहींपक्ष आपकानिश्चयहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए (यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यमितिचापरे) इसवचनकरिकै कथनकऱ्याजोद्वि तीयपक्षहै ॥ सोद्वितीयपक्षहीं हमारानिश्चयहै ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यंकार्यमेवतत् ॥ यज्ञोदानंतपश्चैवपावनानिमनीषिणाम् ॥ ५ ॥ यज्ञदानतपःकर्म । न । त्याज्यं । कार्यम् । एव । तत् । यज्ञः । दानं । तपः । च । एव । पावनानि । मनीषिणाम् ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यज्ञदानतपरूपकर्म नहीं त्यागकरणेयोग्यहै किंतु सोकर्म करणेयोग्य हींहै जिसकारणतैं यज्ञ दान तप यहतीनों फलकीइच्छातैंर हितपुरुषोंकूं पावनकरणेहारे हीं हैं ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रौतस्मार्त्तरूप जो अग्निहोत्रादिरूपयज्ञहै ॥ तथा उत्तमदेशकालविषे सुपात्रकेतांई शास्त्रकेविधिपरिमाण जो गौसुवर्णअन्नादिकपदार्थोंकादान

है ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिरूपजोतपहै ॥ ईहां यज्ञ दान तप यहतीनोंकर्म ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ इनतीनोंआश्रमोंके शास्त्रविहितसर्वकर्मोंकेउपलक्षणहैं ॥ ऐसे यज्ञदानतपरूपकर्म तिनयज्ञादिककर्मोंकेस्वर्गादिकफलकीइच्छातैंरहितपुरुषोंकूं पावनकरणेहारेहैं ॥ अर्थात् तेयज्ञदानतपरूपकर्म ज्ञानकेप्रतिबंधकपापरूपमलकी निवृत्तिकरिकै तथाज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यतारूप पुण्यगुणकाआधानकरिकैफलकीइच्छातैंरहितपुरुषोंके शोधकहींहोवैहैं ॥ ईहां अंतःकरणरूपउपाधिकीशुद्धिकरिकैहीं तिसअंतःकरणउपहितपुरुषोंकीशुद्धि भगवान्कूं अभिप्रेतहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं तेयज्ञदानतपरूपकर्म फलकीइच्छातैंरहितपुरुषके अंतःकरणकीशुद्धिकरणकेहारेहैं ॥ तिसकारणतैं अंतःकरणकेशुद्धिकीइच्छावान् कर्मकेअधिकारीपुरुषनैं फलकीइच्छातैंरहित यज्ञदानतपरूपकर्म कदाचित्भी परित्याग करणेनहीं ॥ किंतु तेयज्ञदानतपरूपकर्म अवश्यकरिकैकरणे ॥ यद्यपि (नत्याज्यं) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यज्ञदानतपरूपकर्मका अत्यागपणा कथन कऱ्या ॥ ताअत्यागपणेकरिकैहीं अर्थतैं तिनयज्ञदानादिककर्मोंकीकर्त्तव्यता प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं पुनः (कार्यमेवतत्) इसवचनकरिकैतिनयज्ञदानादिककर्मोंकीकर्त्तव्यता कथनकरणी संभवतीनहीं ॥ तथापि तिस यज्ञदानादिरूपकर्मोंकीकर्त्तव्यताके अत्यंतआदरवासतै श्रीभगवान्नैं पुनः (कार्यमेवतत्) यह वचन कथनकऱ्याहै ॥ अथवा ॥ (यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यंकार्यमेवतत्) इसवचनका याप्रकारतैं अर्थकरणा ॥ जिसकारणतैं यज्ञदानतपरूपकर्म कार्यहै ॥ अर्थात् कर्त्तव्यतारूपकरिकै वेदनैंविधानकऱ्याहै ॥ तिसकारणतैं सोयज्ञदानतपरूपकर्म इसअधिकारीपुरुषनैं कदाचित्भी नहींत्यागकरणा इति ॥ ५ ॥ ❀

॥ शंका ॥ हेभगवन् यज्ञदानतपरूपकर्मोंका जोकदाचित् अंतःकरणकीशुद्धिकरणेविषे सामर्थ्यहोवै ॥ तौं स्वर्गादिकफलकीइच्छाकरिकैकऱ्येहुएभी तेयज्ञदानतपरूपकर्म तिसअंतःकरणकेशोधकहोवैंगे ॥ यातैं फलकीइच्छाकापरित्यागकरणा व्यर्थहीहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) एतान्यपितुकर्माणिसंगंत्यक्त्वाफलानिच ॥ कर्तव्यानीतिमेपार्थनिश्चितंमतमुत्तमम् ॥ ६ ॥ [1]एतानि । [2]अपि । [3]तु । [4]कर्माणि । [5]संगं । त्यक्त्वा । [6]फलानि । [7]च । [8]कर्तव्यानि । [9]इति । मे [10] । पार्थ । निश्चितं । मतम् । उत्तमम् ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे पार्थ पुनः यहपूर्वउक्त यज्ञदानादिककर्म भी कर्तृत्वअभिमानकूं तथा स्वर्गादिकफलोंकूं परित्यागकरिकै करणेयोग्यहैं इसप्रकारका मैंपरमेश्वरका निश्चित श्रेष्ठ मतहै ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (एतान्यपितु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्तशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतैहै ॥ हेअर्जुन यद्यपि काम्यकर्मभी आपणे धर्मस्वभावतैं इसपुरुषके अंतःकरणकीशुद्धिकरेहैं ॥ तथापि साकाम्यकर्मजन्यअंतःकरणकीशुद्धि तिनकाम्यकर्मोंकैसुखरूपफलकेभोगमात्रविषेहीं उपयोगीहोवैहै ॥

साअंतःकरणकीशुद्धि आत्मज्ञानविषे किंचित्मात्रभीउपयोगीहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता वार्तिकग्रंथकेकर्त्ता श्रीसुरेश्वराचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (काम्येपिशुद्धिरस्त्येवभोगसिद्ध्यर्थमेवसा ॥ विड्वराहादिदेहेननह्यैंद्रंभुज्यतेफलम्) ॥ अर्थयह ॥ काम्यकर्मौंकेकीयेहुएभी अंतःकरणकीशुद्धितौं होवैहै ॥ परंतु साकाम्यकर्मजन्यअंतःकरणकीशुद्धिकेवल भोगकीसिद्धिवासतैहींहोवैहै ॥ ज्ञानकीउत्पत्तिवासतैहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं इंद्रसंबंधीसुखरूपफल मलिनअंतःकरणवाले विड्वराहादिकदेहकरिकै भोग्याजातानहीं ॥ किंतु शुद्धअंतःकरणवाले देवदेहकरिकैहीं सोफल भोग्याजावैहै इति ॥ और जेयज्ञदानतपादिककर्म ज्ञानविषेउपयोगी अंतःकरणकीशुद्धिकूंकरेहैं ॥ तेयज्ञदानादिककर्म स्वर्गादिकफलकीइच्छापूर्वककऱ्येहुए बंधकेहेतुरूपहुएभी फलकीइच्छातैंविना कऱ्येहुए तेयज्ञदानादिककर्म बंधकेहेतुरूपहोवैंनहीं ॥ यातैं मुमुक्षुजनोंनैं फलकीइच्छापूर्वक तेयज्ञदानादिककर्म करणेनहीं ॥ किंतु मुमुक्षुजनोंनैं संगकूं तथा फलोंकूं परित्यागकरिकैहीं तेकर्म करणेयोग्यहै ॥ तहां यौवनादिकअवस्था तथाब्राह्मणादिकवर्ण तथागृहस्थादिकआश्रम इत्यादिकहैंनिमित्तजिसविषे ऐसाजो मैं इनकर्मौंकाकर्त्ताहूं मैंनैं यहकर्म अवश्यकरणेयोग्यहै याप्रकारका कर्तृत्वअभिमानहै ताकानाम संगहै॥ और कामनाकेविषयभूत जे तिसतिसकर्मकरिकैप्राप्तहोणेहारे स्वर्गादिकपदार्थहैं तिनोंकानामफल है॥ऐसे संगकूं तथाफलोंकूं परित्यागकरिकै इसअधिकारीपुरुषनैं अंतःकरणकीशुद्धिवासतैहीं तेयज्ञदानादिककर्म करणेयोग्यहैं॥इसप्रकारका मैंभगवान्‌कानिश्चिततम है॥इसीकारणतैंहीं हेपार्थ कर्मकेअधिकारीपुरुषोंनैं तेयज्ञदानादिककर्म त्यागकरणेयोग्यहैं अथवा नहींत्यागकरणेयोग्यहैं इनदोनोंमतोंविषे तेकर्म नहींत्यागकरणेयोग्यहैं इसप्रकारका मैंभगवान्‌का मत अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ तहां श्रीभगवान्‌नैं पूर्व (निश्चयंशृणुमेतत्र) इसवचनकरिकै जो आपणानिश्चय कथनकऱ्याथा ॥ सोआपणानिश्चय इसश्लोकविषे उपसंहारकऱ्या इति ॥ ६ ॥ ❁ ॥ तहां (यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यमितिचापरे) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्‌नैं पूर्वकथनकऱ्याजो आपणापक्षथा ॥ सोआपणापक्ष इतनैंपर्यंत स्थापनकऱ्या ॥ अब (त्याज्यंदोषवदित्येकेकर्मप्राहुर्मनीषिणः) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकऱ्याजो परपक्षथा ॥ तिसपरपक्षके पूर्वउक्तत्यागकेत्रिविधपणेकेव्याख्यानकरिकै निषेधकरणेका आरंभकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) नियतस्यतुसंन्यासःकर्मणोनोपपद्यते॥ मोहात्तस्यपरित्यागस्तामसःपरिकीर्त्तितः ॥ ७ ॥ नियतस्य । तु । संन्यासः। कर्मणः । न । उपपद्यते । मोहात् । तस्य । परित्यागः । तामसः । परिकीर्त्तितः ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः कर्मका त्याग नहीं संभवैहै तिसनित्यकर्मका मोहतैं परित्याग तामसत्याग कथनकऱ्याहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन स्वर्गादिकफलकीइच्छापूर्वक कऱ्येजे काम्यकर्महैं ॥ तेकाम्यकर्म अंतःकरणकीशुद्धिकेहेतुहोवैंनहीं ॥ उलटा तेकाम्यकर्म इसपुरुषकेबंध

केहींहेतुहोवैहैं ॥ यातैं तेकाम्यकर्म दोषवालेहींहैं ॥ इसीकारणतैंहीं बंधकीनिवृत्तिकाकारणरूपजोआत्मज्ञानहै तिसआत्मज्ञानकीइच्छावान्पुरुषनैं कऱ्याहुआ जो तिनकाम्यकर्मोंकात्यागहे ॥ सोत्यागतौं शास्त्रकरिकै तथायुक्तिकरिकै संभवताहींहै ॥ परंतु अंतःकरणकीशुद्धिकेहेतुहोणेतैं दोषतैंरहित ऐसेजेश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रविहित अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्महैं ॥ ऐसेनित्यकर्मोंकात्यागकरणा अंतःकरणकेशुद्धिकी इच्छावान्मुमुक्षुजनोंकूं शास्त्रकरिकै तथायुक्तिकरिकै संभवतानहीं ॥ किंतु अंतःकरणकीशुद्धिवासतै मुमुक्षुजनोंनैं तिननित्यकर्मोंका अवश्यकरिकैअनुष्ठानकरणा ॥ यहअर्थ (आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते) इसवचनकरिकै पूर्वभी प्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ हेअर्जुन ऐसे अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारेनित्यकर्मोंका जो मोहकेवशतैंपरित्यागहे ॥ सोपरित्याग तामसत्याग कह्याजावैहै ॥ तहां वेदविहित तिननित्यकर्मविषे जोनिषिद्धपणेकाज्ञानहै ॥ तथा अनर्थकेअहेतुरूप तिनकर्मोंविषे जो अनर्थकेहेतुपणेकाज्ञानहै ॥ तथा धर्मरूपतिनकर्मोंविषे जो अधर्मपणेकाज्ञानहै ॥ तथा अनुष्ठानकरणेयोग्य तिनकर्मोंविषे जोनहींअनुष्ठानपणेकाज्ञानहै ॥ इसप्रकारका भ्रांतिज्ञानरूप जो विपर्यासहै ताकानाम मोहहै ॥ ऐसेमोहकेवशतैं जो तिननित्यकर्मोंकापरित्यागहै ॥ सोपरित्यागहै तामसत्याग कह्याजावैहै इति ॥ सोइसप्रकारका विपर्यासरूप मोह सांख्यशास्त्रवालेपुरुषोंकूंहोवैहै ॥ तहां तिनसांख्यीयोंका यह अभिप्रायहै ॥ जैसे काम्यकर्म दोषवालेहोवैहैं ॥ तैसे अग्निहोत्र दर्शपूर्णमास चातुर्मास्य ज्योतिष्टोम इत्यादिक नित्यकर्मभी दोषवालेहींहोवैहैं ॥ काहेतैं तिननित्यकर्मोंविषेभी व्रीहिआदिकोंकेकूटणेकरिकै तथायज्ञशालाकेमार्जनकरिकैं तथाअग्निविषे होमकरणेकरिकै जीवोंकीहिंसाहोवैहै ॥ तथा पशुवोंकीहिंसाहोवैहै ॥ यातैं तेनित्यकर्मभी हिंसारूपदोषवालेहोणेतैं काम्यकर्मोंकीन्यांई दुष्टहींहै ॥ और (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) इसश्रुतिनैं सर्वभूतोंकेहिंसाका निषेधकऱ्याहै ॥ ॥ यातैं यज्ञविषे जोपशुकीहिंसाहै ॥ साहिंसाभी निषिद्धहींहै ॥ और अंतःकरणकीशुद्धितौं तिनहिंसाप्रधाननित्यकर्मोंतैंविना गायत्रीआदिकमंत्रोंकेजपकरिकैहीं होइसकेहै ॥ यहवार्त्ता महाभारतविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (जपस्तुसर्वधर्मेभ्यःपरमोधर्मउच्यते ॥ अहिंसयाहिभूतानांजपयज्ञःप्रवर्त्तते ॥) अर्थयह ॥ गायत्रीमंत्रादिकोंकाजोजपहै ॥ सोजपतौं सर्वधर्मोंतैंपरमधर्म कह्याजावैहै ॥ काहेतैं जपयज्ञतैंभिन्न जितनैंकी ज्योतिष्टोमादिकयज्ञहैं ॥ तेसर्वयज्ञ भूतोंकीहींसाकरिकैहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और यहजपयज्ञतौं भूतोंकीअहिंसाकरिकैहींप्रवृत्तहोवैहै ॥ इसकारणतैं यहजपयज्ञ सर्वधर्मोंतैंपरमधर्म कह्याजावैहै इति ॥ यहवार्त्ता मनुनैंभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (जाप्येनैवतुसंसिद्धयेद्ब्राह्मणोनात्रसंशयः ॥ कुर्यादन्यन्नवाकुर्यान्मैत्रोब्राह्मणउच्यते ॥) ॥ अर्थयह ॥ गायत्रीमंत्रादिकोंके जपकरिकैंहीं ब्राह्मण अंतःकरणकेशुद्धिकूंप्रातहोवैहै ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै ॥ तिसअंतःकरणशुद्धिवासतै यहअधिकारीपुरुष दूसरेकिसीकर्मकूंकरै अथवा नहींकरे ॥ और अहिंसारूपमैत्रीवालापुरुषहीं ब्राह्मण कह्याजावैहै

इति ॥ इत्यादिकशास्त्रकेवचनोंनैं हिंसादोषवालेनित्यकर्मोंका निषेधकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै गायत्रीमंत्रादिकोंकेजपकाहीं विधानकऱ्याहै ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित कर्मकेअधिकारीपुरुषोंनैंभी तेयज्ञादिकनित्यकर्म परित्यागहींकरणे इति ॥ सोयह सांख्यीयोंकाकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ काहेतैं यज्ञविषे जो पशुआदिकोंकीहिंसाहै ॥ साहिंसा इसपुरुषके अनर्थकाहेतुनहींहै ॥ किंतु यज्ञतैंविना जोपशुआदिकोंकीहिंसाहै ॥ साहिंसाहीं इसपुरुषकेअनर्थकाहेतुहोवैहै ॥ और (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) यहश्रुतिवचन जो भूतोंकीहिंसाकानिषेधकरैहै ॥ सोभीयज्ञयुद्धादिकोंतैंविनाजीवोंकेहिंसाकानिषेधकरैहै ॥ जोकदाचित् (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) यहवचन सर्वहिंसामात्रकानिषेधकरताहोवे ॥ तौं (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) इत्यादिक वेदकेंवचन जे यज्ञविषे पशुहिंसाका विधानकरैहैं ॥ तेसर्ववचन व्यर्थहोवैंगे ॥ सोवेदकेवचनोंकूं व्यर्थकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं तिनदोनोंप्रकारकेवचनका परस्परउत्सर्गअपवादभावमानिकै व्यवस्थाकरणीहीं उचितहै ॥ (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) यहवचनतौं उत्सर्गहै ॥ और (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) यहवचनताउत्सर्गका अपवाद है ॥ ताअपवादस्थलकूंछोडिकैहीं अन्यत्र ताउत्सर्गवचनकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ अर्थात् यज्ञयुद्धादिकोंतैंविना इसपुरुषनैं किसीजीवकीहिंसानहींकरणी इसप्रकारका तिसउत्सर्गवचनकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ यातैं शास्त्रविहित यज्ञसंबंधीहिंसा दोषरूपनहींहै ॥ और पूर्वउक्त महाभारतकावचन तथामनुकावचनतौं केवलजपयज्ञकी स्तुतिपरहै ॥ कोई सोवचन यज्ञसंबंधीहिंसाविषे अधर्मपणेकूंबोधनकरतानहीं ॥ काहेतैं यहयज्ञसंबंधीहिंसा अधर्मरूपहै इसअर्थविषे तिसवचनका तात्पर्यहैनहीं ॥ किंतु केवल जपकीस्तुतिविषेहीं तिसवचनका तात्पर्यहैं ॥ और जिसवचनका जिसअर्थविषे तात्पर्यहोवैहै ॥ तिसवचनका सोईहींअर्थहोवैहै ॥ यातैं सांख्यीयोंकूं वेदविहित अग्निहोत्र दर्शपूर्णमास चातुर्मास्य इत्यादिकनित्यकर्मोंविषे जोनिषिद्धपणेकाज्ञानहै ॥ तथा अनर्थकेअहेतुरूप तिनकर्मोंविषे जो अनर्थकेहेतुपणेकाज्ञानहै ॥ तथा धर्मरूप तिनकर्मोंविषे जोअधर्मपणेकाज्ञानहै ॥ तथा अनुष्ठानकरणेयोग्य तिनकर्मोंविषे जो नहींअनुष्ठानकरणेकाज्ञानहै ॥ सोयह सर्वविपर्यासरूपज्ञानमोहरूपहींहै ॥ ऐसेमोहकेवशतैं जो नित्यकर्मोंकापरित्यागहै ॥ सोपरित्याग तामसत्यागकह्याजावैहै ॥ जिसकारणतैं मोह तमरूपहींहै इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार तामसत्यागकेस्वरूपकूंकथनकरिकै अब श्रीभगवान् राजसत्यागके स्वरूपकूं कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) दुःखमित्येवयत्कर्मकायक्लेशभयात्त्यजेत् ॥ सकृत्वाराजसंत्यागंनैवत्यागफलंलभेत् ॥ ८ ॥ दुःखम् । इति । एव । यत् । कर्म । कायक्लेशभयात् । त्यजेत् । सः । कृत्वा । राजसम् । त्यागम् । न । एव । त्यागफलम् । लभेत् ॥ ८ ॥ (इतिप०) ॥

हेअर्जुन यहकर्म दुःखरूप हींहै इसप्रकारमानिकै शरीरकेक्लेशकेभयतैं नित्यकर्मकूं त्यागकरणा ऐसाजोत्यागहै सोत्याग राजसहै ऐसेराजस त्यागकूं करिकै सोपुरुष त्यागकेफलकूं कदाचितभी नहीं प्राप्तहोता ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तमोहकेअभावहुएभी जिसपुरुषकाअंतःकरण शुद्धनहींहुआ ऐसाजो कर्मोंकाअधिकारी पुरुषहै ॥ सोकर्मोंकाअधिकारीपुरुष यहअग्निहोत्र संध्याउपासनादिकसर्वनित्यकर्म दुःखरूपहींहैं ॥ याप्रकारतैं तिननित्यकर्मोंकूं दुःखरूपमानिकै ॥ तथा तिननित्यकर्मोंकेकरणेकरिकै जोशरीरविषेक्लेशहोवैहै ॥ तिसक्लेशकेभयतैं तिननित्यकर्मोंकाजोपरित्यागकरेहै ॥ सोकर्मोंकात्याग राजसत्याग कह्याजावैहै ॥ जिसकारणतैं सोदुःख रजोगुणरूपहींहोवैहै ॥ इसकारणतैं पूर्वउक्तमोहतैंरहितहुआभी सोराजसपुरुष तिसराजसत्यागकूंकरिकै त्यागकेफलकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ अर्थात् वक्ष्यमाणसात्त्विकत्यागका जोज्ञाननिष्ठारूपफलहै ॥ तिसफलकूं सोराजसत्यागवालापुरुष प्राप्तहोतानहीं इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वदोश्लोकोंकरिकै नित्यकर्मोंका तामसत्याग तथाराजसत्याग परित्याज्यता रूपकरिकैदिखाया ॥ यातैं तिसतामसराजसत्यागकापरित्यागकरिकै इसअधिकारीपुरुषनैं कौनकर्मोंकात्याग अंगीकारकरणेयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए इसअधिकारीपुरुषनैं सात्त्विकत्यागहीं ग्रहणकरणे योग्यहै ॥ इसअर्थकूंकथनकरताहुआ श्रीभगवान् तासात्त्विकत्यागकेस्वरूपकूंकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) कार्यमित्येवयत्कर्मनियतंक्रियतेऽर्जुन ॥ संगंत्यक्त्वाफलंचैवसत्यागःसात्त्विकोमतः ॥ ९ ॥ कार्यम् । इति । एव । यत् । कर्म । नियतम् । क्रियते । अर्जुन । संगम् । त्यक्त्वा । फलम् । च । एव । सः । त्यागः । सात्त्विकः । मतः ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यहकर्म करणेयोग्य हींहै इसप्रकारमानिकै जो नित्य कर्म संगकूं तथा फलकूं त्यागकरिकै हीं करीताहै सो त्याग शिष्टपुरुषोंनैं सात्त्विक मान्याहै ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अग्निहोत्र संध्याउपासना इत्यादिकनित्यकर्मोंका विधानकरणेहारे जे (अग्निहोत्रंजुहोति अहरहःसंध्यामुपासीत) इत्यादिकवचननैं तिनवचनोंविषे यद्यपि तिननित्यकर्मोंकाफल कथनकऱ्यानहीं ॥ तथापि वेदविहितहोणेतैं यहनित्यकर्म हमारेकूं अवश्यकरिकै करणेयोग्यहैं ॥ इसप्रकारका निश्चयकरिकै तिननित्यकर्मोंके कर्तृत्वअभिनिवेशरूपसंगकूं तथास्वर्गादिकफलकूं परित्यागकरिकै इसअधिकारीपुरुषनैं आपणेअंतःकरणकीशुद्धिपर्यंत जो अग्निहोत्रसंध्याउपासनादिकनित्यकर्म करीताहै ॥ सोत्याग शिष्टपुरुषोंनैं सात्विकहीं मान्याहै ॥ अर्थात् फलकीइच्छाकेत्यागपूर्वक तथाकर्तृत्वअभिमानकेत्यागपूर्वक सो नित्यकर्मोंकाअनुष्ठानरूप सात्विकत्याग शिष्टपुरुषोंकूं अंतःकरणकीशुद्धिवासतै ग्राह्यतारूपकरिकैअभिमतहै ॥ पूर्वउक्त राजसतामसत्यागकीन्यांई परित्याज्यतारूपकरिकै

अभिमतनहींहै ॥ शंका ॥ (स्वर्गकामोयजेत पुत्रकामोयजेत पशुकामोयजते) इत्यादिकवचनोंनैं जैसे स्वर्गपुत्रपशुआदिकफलोंकाउद्देशकरिकै काम्यकर्मोंका विधानकऱ्याहै ॥ तैसे नित्यकर्मोंकेविधानकरणेहारेवचनोंनैं स्वर्गादिकफलोंकाउद्देशकरिकै तिननित्यकर्मोंकाविधानकऱ्यानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तिननित्यकर्मोंका कोईफलहींहैंनहीं ॥ यातैं (फलंत्यक्त्वा) याप्रकारकावचन भगवान्‌नैं कैसेकह्याहै ॥ समाधान ॥ यद्यपि नित्यकर्मोंकेविधानकरणेहारेव चनोंनैं स्वर्गादिकफलोंकाउद्देशकरिकै तिननित्यकर्मोंकाविधानकऱ्यानहीं ॥ तथापि तिननित्यकर्मोंकाकोईफल अवश्य अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ जोनित्यक र्मोंकाफल नहींअंगीकारकरिये ॥ तौं (फलंत्यक्त्वा) यहभगवान्‌कावचनहीं असंगतहोवैंगा ॥ काहेतैं प्राप्तवस्तुकाहीं निषेधहोवैहै ॥ अप्राप्तवस्तुका निषेधहो तानहीं ॥ जोकदाचित् नित्यकर्मोंकाकोईफलनहींहोता तौं (फलंत्यक्त्वा) इसवचनकरिकै श्रीभगवान् तिननित्यकर्मोंकेफलका निषेधनहींकरता ॥ यातैं तिन नित्यकर्मोंकाभी कोईफलहै यहअर्थ (फलंत्यक्त्वा) इसभगवान्‌केवचनतैंहींजान्याजावैहै ॥ किंवा शास्त्रकारोंनैं याप्रकारकान्याय कथनकऱ्याहै ॥ (प्रयोज नमनुद्दिश्यमंदोपिनप्रवर्त्तते) ॥ अर्थयह ॥ फलरूपप्रयोजनका नहींउद्देशकरिकै मूढपुरुषभी किसीकार्यविषेप्रवृत्तहोतानहीं तौंबुद्धिमान्‌पुरुष तिसप्रयोजनकेउद्देश तैंविना कार्यविषे कैसेप्रवृत्तहोवैंगा ॥ किंतु नहींप्रवृत्तहोवैंगा इति ॥ यातैं तिननित्यकर्मोंका जोकोईभीफल नहींअंगीकारकरिये ॥ तौं तिननिष्फलनित्यकर्मों विषे कोईभीपुरुष प्रवृत्तहोवैंगानहीं ॥ याकारणतैंभी तिननित्यकर्मोंका कोईफल अंगीकारकऱ्याचहिये ॥ किंवा आपस्तंबऋषिनैंभी तिननित्यकर्मोंकाफल क थनकऱ्याहै ॥ तहांऋषिवचनम् ॥ (तद्यथाम्रेफलार्थंनिर्मितेच्छायागंधइत्यनूत्पद्येते एवंधर्मंचर्यमाणमर्थाअनूत्पद्यंते) ॥ अर्थयह ॥ जैसेजिसपुरुषनैं आम्रफलों कीप्राप्तिवासतै आम्रकावृक्ष लगायाहै ॥ तिसपुरुषकूं तिसआम्रवृक्षके छायासुगंधरूपआनुषंगिकफल अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे जिसपुरुषनैं स्वधर्मजा निकै नित्यकर्मोंकाअनुष्ठानकऱ्याहै ॥ तिसपुरुषकूं तिननित्यकर्मोंकेस्वर्गादिरूपआनुषंगिकफल अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां महान्‌फलकीप्राप्तितैंपूर्व इ च्छातैंविनाहीं जोफल प्राप्तहोवैहै ताकूं आनुषंगिकफलकहेहैं ॥ तहांअंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै जोमोक्षकीप्राप्तिहै ॥ यहहीं तिननित्यक र्मोंका महान्‌फलहै ॥ सोमहान्‌फल जबपर्यंत इसपुरुषकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तबपर्यंत इसपुरुषकूं तिननित्यकर्मोंकेवशतैं स्वर्गादिकआनुषंगिकफल अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैहैं इति ॥ इसआपस्तंबऋषिकेवचनतैंभी तिननित्यकर्मोंकाफलसिद्धहोवैहै ॥ किंवा जिन अग्निहोत्र संध्याउपासनाआदिक नित्यकर्मोंकेनहींकरणेकरिकै जेप्रत्यय उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिननित्यकर्मोंकेकरणेकरिकै तेप्रत्यवाय उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ यातैं प्रत्यवायकीनिवृत्तिभी तिननित्यकर्मोंकाहींफलहै ॥ तहां नित्यकर्मोंकेनहींकरणेकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यवायकीप्राप्ति श्रुतिविषे तथास्मृतिविषे कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अकृत्वावैदिकं नित्यंप्रत्यवायीभवे

न्नरः) ॥ अर्थयह ॥ वेदप्रतिपादितअग्निहोत्र संध्याउपासनाआदिक नित्यकर्मोंकूंनकरिकै यहअधिकारीपुरुष पापरूपप्रत्यवायकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ तहांस्मृतिवच नम्॥ (श्रौतंचापितथास्मार्तंकर्मालंब्यवसेद्द्विजः॥तद्विहीनःपतत्येवह्यालंबरहितांधवत्) ॥ अर्थयह ॥श्रौतनित्यकर्मोंकूं तथास्मार्त्तनित्यकर्मोंकूं आश्रयणकरिकैहीं यहद्विज स्थितहोवै॥तिनश्रौतस्मार्त्तकर्मोंतैंरहितहुआ यहद्विज अवश्यकरिकै अधोपतनहोवै ॥ जैसे यष्टिकादिकआलंबनतैंरहित अंधपुरुष गर्त्तविषे पतन होवैहै इति ॥ अन्यस्मृति (एकाहंजपहीनस्तुसंध्याहीनोदिनत्रयम् ॥ द्वादशाहमनग्निश्चशूद्रएवनसंशयः) ॥ अर्थयह ॥ जोअधिकारीब्राह्मण एकदिनपर्यंत जपतैंरहितहै॥ तथा तीनदिनपर्यंत संध्यातैंरहितहै ॥ तथा द्वादशदिनपर्यंत अग्निहोत्रतैंरहितहै ॥ सोब्राह्मण शूद्रहींजानणा ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै इति ॥ अन्यस्मृति ॥ (त्र्यहंसंध्याविरहितोद्वादशाहंनिरग्निकः ॥ चतुर्वेदधरोविप्रःशूद्रएवनसंशयः) ॥ अर्थयह ॥ जोब्राह्मण तीनदिनपर्यंत संध्योपासनतैंरहितहै ॥ तथा द्वादशदिनपर्यंत अग्निहोत्रतैंरहितहै ॥ सोब्राह्मण च्यारिवेदोंकापाठकहुआभी शूद्रहींजानणा ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै इति ॥अन्यस्मृति॥ (तस्मान्नलंघयेत्संध्यांसायंप्रातःसमाहितः ॥ उल्लंघयतियोमोहात्सयातिनरकंध्रुवम्) ॥ अर्थयह॥ जिसकारणतैं संध्याकेउल्लंघनकरणेतैं इसब्राह्मणविषे शूद्रभावकी प्राप्तिहोवैहै ॥ तिसकारणतैं यहअधिकारीब्राह्मण तिससंध्याकूं कदाचित्भी उल्लंघन नहींकरैं ॥ किंतु सायंकालविषे तथाप्रातःकालविषे यहब्राह्मण सावधानहोइ कै तिनसंध्याकूंकरैं ॥ जोब्राह्मण प्रमादकेवशतैं तिससंध्याकापरित्यागकरैहै ॥ सोब्राह्मण निश्चयकरिकै नरककूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंनैं अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्मोंकेनहींकरणेतैं इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यवायकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और (धर्मेणपापमपनुदतितस्माद्धर्मंपरमंवदंति) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष अग्निहोत्रादिकनित्यधर्मकरिकै प्रतिबंधकपापोंकूंनिवृत्तकरैहै ॥ तिसकारणतैं वेदवेत्तापुरुष इसनित्यधर्मकूं परमधर्म कहेहैं इति ॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंनैं ज्ञानकेप्रतिबंधकपापोंकी निवृत्तिरूप तथाज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यतारूपपुण्यकीउत्पत्तिरूप आत्मसंस्कारहीं तिननित्यकर्मोंकाफल कथनकऱ्याहै ॥ और किसीशास्त्रविषेतौं संध्योपासनरूपनित्यकर्मका ब्रह्मलोककीप्राप्तिरूपफल कथनकऱ्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ (संध्यामुपासतेयेतुसततंसंशितव्रताः ॥ विधूतपापास्तेयांतिब्रह्मलोकमनामयम्)॥ अर्थयह ॥ जेअधिकारीपुरुष दृढव्रतवालेहुए संध्याकूं उपासनाकरैहैं ॥ तेपुरुष सर्वपापोंतैंरहितहोइकै ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ इसप्रकारतैं श्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रोंविषे तिननित्यकर्मोंकाभीफल कथनकऱ्याहै ॥ तिसफलकीइच्छाकापरित्यागकरिकैहीं इसअधिकारीपुरुषनैं तेनित्यकर्मकरणे ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं ईहां (फलंत्यक्त्वा) इसवचनकरिकै तिननित्यकर्मोंकेफलकापरित्याग कथनकऱ्याहै ॥ यातैं श्रीभगवान् केवचनविषे किंचित्मात्रभी विरोधकीशंका संभवतीनहीं इति॥किंवा त्याग संन्यास यहदोनोंशब्द घट पट इनदोनोंशब्दोंकीन्यांई भिन्नभिन्नजातिवालेअर्थकेवाच

कनहींहैं ॥ किंतु फलकीइच्छापूर्वक जेकर्महैं तिनकर्मोंकात्यागहीं तिनदोनोंशब्दोंकाअर्थहै ॥ यहजोअर्थ पूर्वकथनकऱ्याथा ॥ तिसअर्थकाभी ईहां विस्मरण करणानहीं ॥ तहां फलकीइच्छाकेविद्यमानहुएभी पूर्वउक्तमोहकेवशतैं अथवा शरीरकेक्लेशकेभयतैं जो नित्यकर्मोंकापरित्यागहै॥सोत्यागतौं कर्मरूपविशेष्यकेअभाव कृत विशिष्टाभावरूपहै ॥ सो विशेष्याभावप्रयुक्तविशिष्टाभावरूपत्याग तामसपणेकरिकै तथाराजसपणेकरिकै पूर्व निंदनकऱ्याथा ॥और नित्यकर्मोंकेविद्यमानहुएभी तिनकर्मोंकेफलकीइच्छाकाजोपारित्यागहै ॥ सोत्याग फलकीइच्छारूपविशेषणकेअभावकृत विशिष्टाभावरूपहै ॥ सो विशेषणाभावप्रयुक्तविशिष्टाभावरूपत्याग सात्त्विकपणेकरिकै स्तुतिकऱ्याजावैहै ॥ इसप्रकार विशेष्यकेअभावकृतविशिष्टाभावविषे तथाविशेषणकेअभावकृतविशिष्टाभावविषे विशिष्टाभावपणा तुल्यहीहै यातैं श्रीभगवान्‌केपूर्वअपरवचनोंका विरोधहोवैनहीं ॥ और फलकीइच्छारूपविशेषणके तथाकर्मरूपविशेष्यकेदोनोंकेअभावकृत जो विशिष्टाभावरूप कर्मोंकात्या गहै ॥ सोत्यागतौं सत्त्वादिकतीनगुणोंतैंरहितहोणेतैं निर्गुणरूपहींहै ॥ यातैं सोनिर्गुणत्याग सात्त्विक राजस तामस इसतीनप्रकारकेत्यागविषे गण्याजावैनहीं इति ॥ इतनैंकहणेकरिकै इसप्रकारकेदोषकीभी निवृत्तिकरी ॥ सोदोषयहहै ॥ तहां (त्यागोहिपुरुषव्याघ्रत्रिविधःसंप्रकीर्त्तितः) इसवचनकरिकै प्रथम तीनप्रकारकेत्याग कीप्रतिज्ञाकरिकै तिसतैंअनंतर दोप्रकारकेकर्मत्यागकूंकथनकरिकै पश्चात्‌तिसप्रतिज्ञाकेप्रतिकूल कर्मकेअनुष्ठानरूप तीसरेप्रकारकूं श्रीभगवान् कथनकरताभयाहै ॥ यातैं श्रीभगवान्‌कूं प्रगटहीं अकुशलतारूपदोष प्राप्तहोवैहै॥जैसे कोईपुरुष तीनब्राह्मणोंकोभोजनकरावणा ॥ याप्रकारकावचन प्रथमकहै ॥ तिसतैंअनंतर यहवचन कहै ॥ दोतौं कठकौंडिन्यनामाब्राह्मण तीसराक्षत्रिय ॥ इसप्रकारकेवचनकहणेहारेपुरुषकूं प्रगटहीं अकुशलतादोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं प्रथम तीनब्राह्मणोंकेभो जनकरावणेकीप्रतिज्ञाकरिकै पश्चात् दोतौं ब्राह्मणकहणे तीसराक्षत्रियकहणा ॥ यहवार्त्ता पूर्वप्रतिज्ञाकीविस्मृतिरूप अकुशलतादोषतैंहोवैहै ॥ तैसे प्रथम तीनप्रका रकेत्यागकीप्रतिज्ञाकरिकै पश्चात् दोप्रकारकातौं कर्मोंकात्यागकहणा ॥ और तीसरा कर्मोंकाअनुष्ठानकहणा ॥ यहवार्त्ता अकुशलतादोषतैं होवैहै इति ॥ सोयह दोष संभवतानहीं ॥ काहेतैं तिनतीनोंप्रकारोंविषे विशिष्टाभावरूपत्यागसामान्यपणेकरिकै एकजातीयपणा पूर्वविस्तारतैंप्रतिपादनकरिआयेहै ॥ यातैं श्रीभगवान्‌विषे अकुशलताकाकथनकरणा यहहीं तिनपुरुषोंविषे महान्‌अकुशलताहै इति ॥ ९ ॥ ❁ ॥ अब पूर्वउक्त सात्विकत्यागकेग्रहणकरावणेवासतै श्रीभगवान् तिससात्विकत्यागके अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञाननिष्ठारूपफलकूं कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) नद्वेष्ट्यकुशलंकर्मकुशलेनानुषज्जते ॥ त्यागीसत्त्वसमाविष्टोमेधावीछिन्नसंशयः ॥ १० ॥ नं । द्वेष्टिं । अकुशलम्। कर्म । कुंशले । नं । अनुषज्जते । त्यागी । सत्त्वसमाविष्टः । मेधावी । छिन्नसंशयः ॥१०॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोपूर्वउक्त

सात्विकत्यागवालापुरुष जबी सत्त्वकरिकैंव्याप्तहोवैहै तबी तत्त्वज्ञानवालाहोवैहै तथासर्वसंशयोंतैंरहितहोवैहै तबी अशोभन कर्मकूं नहीं प्रतिकूलमानैहै तथा शोभनकर्मविषे नहीं प्रीतिकरैहै ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोत्यागीपुरुष सात्त्विकत्यागकरिकैयुक्तहै ॥ अर्थात् पूर्वश्लोकउक्तप्रकारकरिकै कर्तृत्वअभिनिवेशकूं तथास्वर्गादिकफलकीइच्छाकूं परित्यागकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै वेदविहित नित्यकर्मोंकाअनुष्ठानकरैहै ॥ सोत्यागीपुरुष जिसकालविषे सत्त्वकरिकै सम्यक् आविष्टहोवैहै ॥ तहां आत्म अनात्मविवेकज्ञानकाहेतुभूतजो चित्तविषेस्थित सम्यक्ज्ञानकाप्रतिबंधकरजतमरूपमलकाराहित्यरूप अतिशयताहै ताकानाम सत्त्वहै ॥ तासत्त्वकरिकैसम्यक् व्याप्तहोवैहै ॥ ईहां उक्तसत्त्वकीव्याप्तिविषे जोनियमकरिकै आत्मज्ञानरूपफलकाजनकपणाहै यहहीं सम्यक्पणाहै ॥ अर्थात् भगवत्अर्पितनित्यकर्मोंकेअनुष्ठानतैं पापरूपमलकाअपकर्षरूपसंस्कारकरिकै तथाज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यतारूपपुण्यगुणकाआधानरूपसंस्कारकरिकै संस्कृत जबी अंतःकरणहोवैहैं ॥ तबी सोत्यागी पुरुष मेधावीहोवैहै ॥ तहां विवेक वैराग्य शमदमादिषट्संपत् मुमुक्षुता तथासर्वकर्मोंकाविधिवत्परित्याग तथाब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपगमन इत्यादिकसाधनोंकरिकै तथातिसब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रके श्रवण मनन निदिध्यासन इनतीनसाधनोंकरिकै उत्पन्नहुआ तथातत्त्वमसिआदिकवेदांतमहावाक्यहैकरणजिसका तथा निवृत्तहुईहैसर्वअप्रामाण्यशंकाजिसतैं तथाअखंडअद्वितीयचैतन्यवस्तुकूंनहींविषयकरणेहारा ऐसाजो अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका ब्रह्मात्मऐक्यज्ञानहै ताकानाम मेधाहै ॥ ऐसीमेधाकरिकै जोपुरुष नित्यहींयुक्तहोवै ताकानाम मेधावीहै ॥ ऐसामेधावी सोपुरुष होवैहै ॥ अर्थात् स्थितप्रज्ञहोवैहै ॥ और तिस स्थितप्रज्ञताकाल विषे सोपुरुष छिन्नसंशयहोवैहै ॥ तहां आत्मसाक्षात्कारकरिकै छिन्नहुएहैं क्या निवृत्तहुएहैं सर्वसंशय जिसके ताकानाम छिन्नसंशयहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अहं ब्रह्मास्मि इसप्रकारकीब्रह्मविद्यारूपमेधाकरिकै तिसपुरुषकीअविद्या निवृत्तहोइजावैहै ॥ और साअविद्याहीं सर्वसंशयोंकीउत्पत्तिविषेकारणहै ॥ यातैं ताकारणरूप अविद्याकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर ताअविद्याकेकार्यरूप सर्वसंशयोंतैं तथाविपर्ययोंतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष रहितहोवैहै इति ॥ तहां आत्मसाक्षात्कारकरिकै अविद्याकी निवृत्तिद्वारा जिनसंशयोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तेसंशय यहहैं ॥ संचित आगामि वर्त्तमान इनतीनप्रकारकेकर्मोंकरिकै हमारेकूं कोईलेपहै अथवा नहींहै ॥ और कर्तृत्व भोक्तृत्व आदिकसंसार आत्माकूंहोवैहै अथवा अंतःकरणादिकअनात्माकूंहोवैहै ॥ और मोक्षकाहेतु योगहै अथवा उपासनाहै अथवा कर्महै अथवा आत्मसाक्षात्कारहै ॥ और सालोक्य सामीप्य सायुज्य यहहींमोक्षहै अथवा इसीजन्मविषे ब्रह्मात्मरूपकरिकैस्थिति मोक्षहै इति ॥ इनसर्वसंशयोंविषे अंत्य कीकोटि सिद्धांतरूपजानणी ॥ और आदिकीकोटि पूर्वपक्षरूपजानणी ॥ इत्यादिकसर्वसंशयोंतैं तथादेहादिकोंविषेआत्मत्वबुद्धिरूपसर्वविपर्ययोंतैं सोतत्त्ववे

त्तापुरुष रहितहोवैहै ॥ तिसकालविषे सर्वकर्मोंतैंरहितहोणेतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष अकुशलकर्मोंविषे द्वेषनहींकरेहै ॥ अर्थात् अज्ञानीपुरुषोंकेबंधनकाहेतुहोणेतैं अशोभनरूप जे काम्य कर्महैं अथवा निषिद्ध कर्महैं तिन काम्यकर्मोंकूं सो तत्त्ववेत्ता पुरुष प्रतिकूलतारूपकरिकै मानता नहीं ॥ और अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानकाहेतुहोणेतैं शोभनरूप जे नित्यकर्महैं ॥ तिननित्यकर्मोंविषेभी सोतत्त्ववेत्तापुरुष प्रीतिकरतानहीं ॥ जिसकारणतैं कर्तृत्व भोक्तृत्वअभिमानतैंरहितहोणेतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष कृतकृत्यहीहै ॥ ऐसे कृतकृत्यतत्त्ववेत्तापुरुषका किसीकर्मविषेद्वेष तथाकिसीकर्मविषेप्रीति संभवैनहीं ॥ यह सर्वअर्थ श्रुतिविषेभी कथनकन्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे) ॥ अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं ॥ इसप्रकारके ब्रह्मसाक्षात्कारकेप्राप्तहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषकी चित्जडग्रंथि भेदनहोवैहै ॥ तथा पूर्वउक्तसर्वसंशयभी छेदनहोवैहैं ॥ तथा पुण्यपापसर्वकर्मभी क्षय होवैहैं इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं तिससात्त्विकत्यागका इसप्रकारका महान्फलहै तिसकारणतैं इसअधिकारीपुरुषनैं महान्प्रयत्नकरिकैभी सोसात्त्विक त्यागहीं संपादनकरणा इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ तहां कर्मविषेप्रवृत्तिकाहेतुभूत जेरागद्वेषादिकहैं ॥ तेरागद्वेषादिक ज्ञानवान्पुरुषविषेहैंनहीं ॥ यातैं तिस ज्ञानवान्पुरुषविषेतौं सोसर्वकर्मोंकापरित्याग संभवहोइसकेहै ॥ यहअर्थ पूर्वश्लोकविषे कथनकन्या अब अज्ञानीपुरुषविषे सोसर्वकर्मोंकापरित्याग संभवता नहीं ॥ इसअर्थविषे श्रीभगवान् हेतुकहेहै ॥

(मू० श्लो०) नहिदेहभृताशक्यंत्यक्तुंकर्माण्यशेषतः ॥ यस्तुकर्मफलत्यागीसत्यागीत्यभिधीयते ॥ ११ ॥ न । हि । देहभृता । शक्यम् । त्यक्तुम् । कर्माणि । अशेषतः । यः । तु । कर्मफलत्यागी । सः । त्यागी । इति । अभिधीयते ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं देहाभिमानीपुरुषनैं निःशेषतैं कर्म त्यागणेकूं नहीं शक्यहैं तिसकारणतैं जोअज्ञानीपुरुष कर्मोंकेफलका त्यागीहै सोअज्ञानीपुरुषभी त्यागी ईसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं मैंगृहस्थहूं इसप्रकारके अबाधितअभिमानकरिकै जोपुरुष देहकूंधारणकरेहै अथवा पोषणकरेहै ताकानाम देहभृत्है ॥ अर्थात् कर्मकेअधिकारकाहेतुभूत जे ब्राह्मणादिकवर्णहैं तथागृहस्थादिकआश्रमहैं ॥ तिनवर्णआश्रमोंकाआश्रयरूप तथाकर्तृत्वभोक्तृत्वआदिकोंकाआश्रयरूप ऐसाजो स्थूलसूक्ष्मशरीरइंद्रियादिकोंकासंघातरूपदेहहै ॥ जोदेह अनादिअविद्यावासनावोंकेवशतैं व्यवहारकेयोग्यतारूपकरिकैकल्पितहोणेतैं असत्यहै ॥ ऐसेअसत्यदेहकूं सत्यरूपकरिकैदेखताहुआ तथाआपणेतैंभिन्नभी तिसदेहकूं आपणेतैंअभिन्नकरिकै देखताहुआ जोपुरुष पूर्वउक्तअभिमानकरिकै तिसदेहकूं धारणकरेहै अथवा

पोषणकरेहै ताकानाम देहभृत्है ॥ तात्पर्ययह ॥ नहींनिवृत्तहुआहैकर्मकेअधिकारकाहेतुभूतदेहाभिमान जिसका ताकानाम देहभृत्है ॥ कैसाहैसोदेहभृत्पुरुष ॥ कर्मोंविषेप्रवृत्तिकाहेतुभूत जेरागद्वेषादिकहैं ॥ तिनरागद्वेषादिकोंकीबाहुल्यताकरिकै निरंतर तिनकर्मोंविषेप्रवर्त्तमानहै ॥ ऐसे विवेकज्ञानतैंशून्यदेहाभिमानीपुरुषनैं तत्त्ववेत्तापुरुषकीन्याई तेकर्म निःशेषतैं परित्याग नहींकरिसकीते ॥ काहेतैं जबपर्यंत कारणसामग्री विद्यमानहोवैहै ॥ तबपर्यंत निःशेषतैं कार्यकापरित्याग कऱ्याजातानहीं ॥ सारागद्वेषादिरूपकारणसामग्री तिसअज्ञानीपुरुषविषे विद्यमानहै ॥ यातैं जोअज्ञानीअधिकारी अंतःकरणकीशुद्धिवासतै तिनकर्मोंकूंकरता हुआभी परमेश्वरकीकृपाकेवशतैं तिनकर्मोंकेफलका परित्यागकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुषभी त्यागी इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ अर्थात् सोकर्मकर्त्ताअज्ञानीपुरुष वास्तवतैंअत्यागीहुआभी स्तुतिकेवासतै त्यागशब्दकीगौणीवृत्तिकरिकै त्यागी इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और सो निःशेषतैंसर्वकर्मोंकापरित्यागतौं देहाभिमानतैंरहित परमार्थदर्शीपुरुषनैंहीं करिसकीताहै ॥ यातैं सोपरमार्थदर्शी तत्त्ववेत्तापुरुषहीं त्यागशब्दकीमुख्यवृत्तिकरिकै त्यागी इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ ईहां (यस्तु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द तिसकर्मफलत्यागीपुरुषके दुर्लभताकाबोधनकरणेवासतैहै ॥ अर्थात् फलकीइच्छाकापरित्यागकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै तिननित्यकर्मोंकूंकरणेहारा पुरुषभी दुर्लभहींहै इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् देहाभिमानवाला तथापरमात्मज्ञानतैंरहित ऐसाजोकर्मीपुरुषहै ॥ सोकर्मीपुरुषभी फलकीइच्छाकेपरित्यागमात्रतैं गौणसंन्यासी कह्याजावैहै ॥ और देहाभिमानतैंरहित तथापरमात्मज्ञानवाला ऐसाजो फलसहितसर्वकर्मोंके त्यागवाला सोतत्त्ववेत्तापुरुषहै ॥ सोतत्त्ववेत्तापुरुषतौं मुख्यसंन्यासी कह्याजावैहै ॥ यहअर्थ पूर्वश्लोकविषे आपनैं कथनकऱ्या ॥ तहां गौणसंन्यासीकेफलविषे तथामुख्यसंन्यासीकेफलविषे क्याविशेषहै॥ जिसविशेषकेअलाभकरिकै एकसंन्यासीविषेतौं गौणपणाहोवैहै॥ और जिसविशेषकेलाभकरिकै दूसरेसंन्यासीविषे मुख्यपणाहोवैहै ॥ और कर्मकेफलकात्यागीपणातौं तिनदोनोंविषे तुल्यहींहै ॥ यातैं ताकरिकैभी विशेषतासंभवैनहीं ॥ किंतु इसतैं कोईअन्यहींविशेष कह्याचहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) अनिष्टमिष्टंमिश्रंचत्रिविधंकर्मणःफलम् ॥ भवत्यत्यागिनांप्रेत्यनतुसंन्यासिनांक्वचित् ॥ १२ ॥ अनिष्टम् । इष्टं । मिश्रं । च । त्रिविधं । कर्मणः । फलं । भवति । अत्यागिनां । प्रेत्य । न । तु । संन्यासिनां । क्वचित् ॥ १२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन तिन गौणसंन्यासीयोंकूंतौं मरणतैंअनंतर कर्मोंका अनिष्ट इष्ट तथा मिश्र यहतीनप्रकारका फल प्रांतहोवैहै और मुख्यसंन्यासीयोंकूंतौं कबीभी सोत्रिविधफल नहीं प्राप्तहोवैहै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन कर्मोंकेस्वर्गादिकफलोंकेत्यागवालेहुएभी कर्मोंकाअनुष्ठानकरणेहारे जे आत्मज्ञानकरणेहारे जे आत्मज्ञानतैंरहित गौणसंन्यासीहैं तिनोंकानाम अत्यागीहै ॥ जेअत्यागीपुरुष आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषाकीउत्पत्तिपर्यंत अंतःकरणकीशुद्धिकूंनहींसंपादनकरिकै तिसतैंपूर्वहींमरणकूंप्राप्तहुएहैं ॥ ऐसेअत्यागी पुरुषोंकूं मरणतैंअनंतर पूर्वकऱ्येहुएकर्मोंका शरीरकाग्रहणरूपफल अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ ईहां (कर्मणः) इसपदकरिकै यद्यपि एकहीं कर्म कथनकऱ्याहै ॥ तथापि ॥ एककर्मविषे तीनप्रकारकेफलकीजनकतासंभवतीनहीं ॥ यातैं (कर्मणः) यहपद कर्मत्वजातिविशिष्ट पुण्य पाप मिश्रित इनतीनप्रकारकेहींकर्मोंका वाचकहै ॥ सोशरीरकाग्रहणरूपकर्मकाफल कारणरूपकर्मोंकेत्रिविधपणेकरिकै अनिष्ट इष्ट मिश्र यहतीनप्रकारकाहींहोवैहै ॥ तहां पापकर्मकातौं अनिष्टफलहोवैहै ॥ और पुण्यकर्मका इष्टफलहोवैहै ॥ और पुण्यपापदोनोंकर्मोंका मिश्रफलहोवैहै ॥ तहां यहशरीर हमारेकूं मतप्राप्तहोवैं याप्रकारके प्रतिकूलताज्ञानकेविषय जेनारकीयतिर्यक्शरीरहैं ॥ तिनशरीरोंकीप्राप्ति अनिष्टफल कह्याजावैहै ॥ और यहशरीर हमारेकूं प्राप्तहोवैं याप्रकारके अनुकूलताज्ञानकेविषय जेदेवादिक शरीरहैं ॥ तिनशरीरोंकीप्राप्ति इष्ट फल कह्याजावैहै ॥ और पापकर्मकेफलयुक्त तथापुण्यकर्मकेफलयुक्त जेमनुष्यशरीरहैं ॥ तिनशरीरोंकीप्राप्ति मिश्रफल कह्याजावैहै ॥ यद्यपि (अनिष्टमिष्टंमिश्रंच) इसवचनकरिकैहीं तिसकर्मकेफलविषे त्रिविधपणा सिद्धहोइसकैहै ॥ यातैं पुनः (त्रिविधं) यहवचनकहणा असंगतहै ॥ तथापि (त्रिविधम्) इसवचनकरिकै जो पुनःतिसफलकेत्रिविधपणेकाअनुवादकऱ्याहै ॥ सो तिसत्रिविधफलकेपरित्यागकरावणेवासतै कऱ्याहै ॥ अर्थात् मुमुक्षु जननैं इनतीनोंप्रकारकेफलकापरित्यागकरणा इति ॥ इतनैंकरिकै तिनगौणसंन्यासीयोंकूं मरणतैंअनंतर कर्मकेवशतैं शरीरकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ अब तिनमुख्यसंन्यासीयोंकूंतौं ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअविद्याकेनिवृत्तहुए विदेहकैवल्यरूपमोक्षहीं प्राप्तहोवैहै इसअर्थ श्रीभगवान् कथन करैहै (नतुसंन्यासिनां क्वचित्इति) हेअर्जुन विधिवत् सर्वकर्मोंकापरित्यागकऱ्याहैजिनोंनैं तथामैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारके परमात्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्त ऐसेजे परमहंसपरिव्राजक मुख्यसंन्यासीहैं ॥ तिनमुख्यसंन्यासीयोंकूतौं मरणतैंअनंतर तिनकर्मोंका शरीरकाग्रहणरूप अनिष्टफल अथवा इष्टफल अथवा मिश्रफल किसीभीदेशविषे तथाकिसीभीकालविषे प्राप्तहोतानहीं ॥ काहेतैं तिनब्रह्मवेत्तामुख्यसंन्यासीयोंका आत्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञान निवृत्तहोइगयाहै ॥ ता अज्ञानरूपकारणकेनिवृत्तहुए ताअज्ञानकेकार्यरूपसर्वकर्मभी तिनोंके निवृत्तहोइगयेहैं ॥ और जन्मकाप्राप्तिविषे अज्ञान तथा अज्ञानजन्यकर्महीं कारणहैं ॥ तिनोंकेनिवृत्तहुए तिनतत्त्ववेत्तामुख्यसंन्यासीयोंकूं पुनः जन्मकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥) अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारतैं परमात्मा देवकेसाक्षात्कारहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषकी चित्जडग्रंथि भेदन

होवैहै ॥ तथा सर्वसंशय छेदनहोवैहैं ॥ तथा सर्वकर्म क्षयहोवैहैं इति ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्‌नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (तदधिगम उत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात्) ॥ अर्थयह ॥ प्रत्यक्‌अभिन्नब्रह्मकेसाक्षात्कारहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषके पूर्वलेसंचितकर्मतौं विनाशहोइजावैहैं ॥ और तत्त्वसाक्षात्कारतैं उत्तरकऱ्येहुएकर्मोंका तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं स्पर्शहींनहींहोवैहै ॥ इसप्रकारकाअर्थ श्रुतिस्मृतिविषेकथनकऱ्याहै इति ॥ इत्यादिकश्रुति सूत्रवचन परमात्माकेज्ञानतैंहीं सर्वकर्मोंकेनाशकूं कथनकरेहैं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ पूर्वउक्त गौणसंन्यासीयोंकूंतौं पूर्वलेपुण्यपापकर्मकेवशतैं पुनःशरीर काग्रहणरूपसंसार अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ और तत्त्ववेत्तामुख्यसंन्यासीयोंकूंतौं अविद्याकर्मादिकोंकेअभावतैं पुनः सोसंसार प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु मोक्षहीं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकारका तिनदोनोंकेफलविषे विशेषहैं इति ॥ ईहां केईकवादी इसप्रकार कहेहैं (अनाश्रितःकर्मफलंकार्यंकर्मकरोतियः । ससंन्यासी) इत्यादिकवचनोंविषे कर्मोंकेफलकात्यागकरिकै कर्मोंकूंकरणेहारे कर्मीपुरुषोंविषेभी संन्यासी इसशब्दका प्रयोगकऱ्याहै ॥ यातैं (नतुसंन्यासिनांक्वचित्) इस वचनविषेभी संन्यासीशब्दकरिकै कर्मफलकेत्यागकरणेहारे कर्मीपुरुषहीं ग्रहणकरणे ॥ और (नतुसंन्यासिनांक्वचित्) इसवचनविषे जो पूर्वउक्त अनिष्ट इष्ट मिश्र इसतीनप्रकारकेफलका संन्यासीयोंविषे निषेधकऱ्याहै ॥ सोभी तिनसात्विककर्मीपुरुषोंविषे संभवहोइसकेहै ॥ काहेतैं जिननित्यनैमित्तिककर्मोंके नहींकरणेकरिकै तथानिषिद्धकर्मोंकेकरणेकरिकै इनपुरुषोंविषे जापापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ सापापकीउत्पत्ति तिनसात्त्विककर्मीपुरुषोंविषे तिननित्यनैमित्तिककर्मों केकरणेकरिकै तथानिषिद्धकर्मोंकेपरित्यागकरिकै होवैनहीं ॥ यातै तिनकर्मीपुरुषोंकूं अनिष्टफलकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और तेकर्मीपुरुष काम्यकर्मोंकूंकर तेनहीं ॥ तथा ईश्वरअर्पणबुद्धिकरिकै तिनकर्मीपुरुषोंनैं स्वर्गादिकफलोंका परित्यागकऱ्याहै ॥ यातैं तिनकर्मीपुरुषोंकूं इष्टफलकीप्राप्तिभीहोवैनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तिनकर्मीपुरुषोंकूं मिश्रफलकीप्राप्तिभी होवैनहीं ॥ इसरीतिसैं तिनसात्त्विककर्मीपुरुषोंविषे अनिष्ट इष्ट मिश्र यहतीनप्रकारकाहीफल संभवतानहीं ॥ इसीकारणतैंही शास्त्रविषे यहवचनकह्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ (मोक्षार्थीनप्रवर्त्तेततत्रकाम्यनिषिद्धयोः ॥ नित्यनैमित्तिकेकुर्या त्प्रत्यवायजिहासया) ॥ अर्थयह ॥ मोक्षकी इच्छावान् अधिकारी पुरुष तिन काम्य कर्मोंविषे तथा निषिद्धकर्मोंविषे नहीं प्रवृत्तहोवै ॥ किंतु जिन नित्य नैमित्तिक कर्मोंके नहीं करणेतैं जो प्रत्यवाय प्राप्तहोवैहै ॥ तिसप्रत्यवायकेपरित्यागकी इच्छाकरिकै यह मोक्षार्थी पुरुष तिननित्यनैमित्ति ककर्मोंकूंहीं करै ॥ इतनैंमात्रकरिकैहीं इसअधिकारीपुरुषकूं संसारकाअभावहोवैहै इति ॥ इसप्रकार एकभविकवादकीरीतिसैं भगवान्‌केवचनका व्याख्या नकरणेहारे वादीयोंकेप्रति यहवचन कह्याचाहिये ॥ शब्दकीमर्यादा तथाअर्थकीमर्यादा तुमोंनैं निर्णयकरीनहीं ॥ इसकारणतैंहीं श्रीभगवान्‌केवचनका तुम इस

प्रकारकाव्याख्यानकरतेहो ॥ तहां गौणअर्थ तथामुख्यअर्थ इनदोनोंअर्थोंकेमध्यविषे किसीबाधककेअविद्यमानहुए मुख्यअर्थविषेहीं शब्द बोधकूंउत्पन्नकरे है ॥ यहतौं शब्दकीमर्यादाहै ॥ सोईहांप्रसंगविषे फलसहित सर्वकर्मोंकात्यागीपुरुषतौं तासंन्यासीशब्दका मुख्यअर्थहै ॥ और जैसे मुख्यसंन्यासीविषे कर्मोंके फलकात्यागीपणा रहेहै ॥ तैसे निष्कामकर्मीपुरुषविषेभी सोफलकात्यागीपणा रहैहै ॥ यातैं फलत्यागित्वरूपसमानगुणकूंलेके सोसंन्यासीशब्द तिसकर्मीपुरुष विषेभी प्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं सोकर्मीपुरुष तिससंन्यासीशब्दका गौणअर्थहै ॥ और (नतुसंन्यासिनांक्वचित्) इसवचनविषेस्थित संन्यासी इसशब्दके मुख्य अर्थकेग्रहणकरणेविषे कोईबाधकहैनहीं ॥ यातैं तिसमुख्यअर्थकाहीं ईहां संन्यासीइसशब्दकरिकैग्रहणकरणा उचितहै ॥ यहअर्थ शब्दकीमर्यादातैंसिद्धहोवैहै इति ॥ और कारणसामग्रीकेविद्यमानहुए कार्यकीउत्पत्ति अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यह अर्थमर्यादा कहीजावैहै ॥ तिसअर्थमर्यादाकरिकैभी सोपूर्वउक्तअर्थहीं सिद्धहोवै ॥ सोप्रकार दिखावैहैं ॥ जिसपुरुषनैं ईश्वरअर्पणबुद्धिकरिकै कर्मोंकेफलकापरित्यागकर्‍याहै ॥ तथा जोपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिवासतै नित्यक र्मोंकाअनुष्ठानकरेहै ॥ सोपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञाननिष्ठाकूंनहींप्राप्तहोइकै जबी मध्यविषेहीं मरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंके वशतैं तीनप्रकारकेशरीरकाग्रहणरूपसंसारकीप्राप्ति किसपुरुषनैं निवृत्तकरिसकीतींहै ॥ किंतु कोईभीपुरुष तिसकेनिवृत्तिकरणेविषेसमर्थनहींहै ॥ तिसपुण्यपापरूप कारणकेविद्यमानहुए शरीरकाग्रहणरूपकार्य अवश्यकरिकैउत्पन्नहोवैगा ॥ तहां आत्मज्ञानतैंरहितपुरुष पुण्यपापकर्मकेवशतैं अवश्यकरिकै जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषे कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वास्माल्लोकात्प्रैतिसकृपणः) ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरब्रह्मकूंनजानिकै इसमनुष्यलोकतैं गमनकरेहै ॥ सोपुरुष कृपणहीं जानणा इति ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिकाफलभूत जोआत्मज्ञानहै ॥ ताज्ञानकीउत्पत्तिवासतै तिसनिष्काम कर्मीपुरुषकूं अधिकारीशरीरकीप्राप्ति अवश्यकरिकैअंगीकारकरणीहोवैगी ॥ इसीकारणतैंहीं पूर्व षष्ठेअध्यायविषे (शुचीनांश्रीमतांगेहेयोगभ्रष्टोऽभिजायते) इत्यादिकवचनोंकरिकै यहअर्थ निर्णयकर्‍याथा ॥ अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर शास्त्रकीविधिपूर्वक फलसहितसर्वकर्मोंकापरित्यागकर्‍याहै जिसनैं ॥ तथा ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै तिसब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रके श्रवणादिकोंकूंकरताहुआ जोपुरुष आत्मज्ञानकूंनप्राप्तहोइकै मध्यविषेहीं मरणकूंप्राप्तहुआहै ॥ ऐसा योगभ्रष्ट विविदिषासंन्यासी भोगइच्छाकेविद्यमानहुए तिसमरणतैंअनंतर पवित्रश्रीमान्पुरुषोंकेगृहविषे जाइकै जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और भोगइच्छाकेअवि द्यमानहुए सोयोगभ्रष्टपुरुष ब्रह्मवेत्तायोगीपुरुषोंकेगृहविषे जाइकै जन्मकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ यहसर्वअर्थपूर्वषष्ठेअध्याय विषेकथनकर्‍याथा ॥ इसकहणेकरिकै यह कैमु तिकन्याय सिद्धहोवैहै॥जबी आत्मज्ञानतैंरहित सर्वकर्मोंकेत्यागी विविदिषासंन्यासीकूंभी शरीरकाग्रहण अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ तबी आत्मज्ञानतैंरहितकर्मीपुरुषकूं

सोशरीरकाग्रहण अवश्यकरिकैहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै इति॥ यातैं अज्ञानीपुरुषकूं पूर्वलेकर्मकेवशतैं शरीरकाग्रहण अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यहअर्थ अर्थकीमर्यादाकरिकैसिद्धभया॥ यातैं (नतुसंन्यासिनांक्वचित्) इसवचनविषेस्थित संन्यासीशब्दकरिकै निष्कामकर्मीपुरुषोंकाहींग्रहणकरणा ॥ यहएकभविकवादीयोंकाव्याख्यान अत्यंतअसंगतहै ॥ किंतु पूर्वउक्तभाष्यकारोंकाव्याख्यानहीं समीचीनहै इति ॥ तहां इसश्लोकविषे श्रीभगवान्‌का यहअभिप्रायहै ॥ अकर्त्ता अभोक्ता परमानंद अद्वितीय सत्य स्वप्रकाश ऐसाजोब्रह्महै ॥ सोब्रह्म मैंहूं इसप्रकारकाजोब्रह्मात्मसाक्षात्कारहै ॥ जोसाक्षात्कार निर्विकल्पहै ॥ तथा वेदांतमहावाक्यकरिकैजन्यहै ॥ तथा विचारकरिकैनिश्चितकर्‍याहैप्रामाण्यजिसका ॥ तथा सर्वप्रकारतैं अप्रामाण्यशंकातैंरहितहै ॥ ऐसेब्रह्मात्मसाक्षात्कारकरिकै तिसब्रह्मात्माके अज्ञानकीनिवृत्तिहुएतैं अनंतर तिसअविद्याकेकार्यरूप कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकअभिमानतैंरहित ऐसाजो वास्तवमुख्यसंन्यासीहै ॥ सोमुख्यसंन्यासीतौं अविद्यासहित सर्वकर्मोंकेनाशतैं केवलशुद्धस्वरूपहुआ अविद्याकर्मादिनिमित्तक पुनः शरीरकेग्रहणकूं कदाचित्‌भी अनुभवकरतानहीं ॥ जिसकारणतैं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके सर्वकर्मोंका अविद्यारूपकारणकेनाशकरिकै नाशहोइगयाहै॥ और जोपुरुष अविद्यावालाहै ॥ तथा कर्तृत्वभोक्तृत्वअभिमानवालाहै॥ तथा देहभृत्‌है॥ सोअविद्यावान् देहभृत्‌पुरुषतौं तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां रागद्वेषादिकदोषोंकीप्रबलतातैं आपणीइच्छामात्रतैं काम्यकर्मोंकूं तथानिषिद्धकर्मोंकूं करणेहारा ऐसाजो मोक्षशास्त्रका अनधिकारीपुरुषहै ॥ सोतौं प्रथमहै ॥ और पूर्वकर्‍येहुएपुण्यकर्मकेवशतैं किंचित्‌मात्र नष्टहुएहैंरागादिकदोष जिसके ॥ तथा विधिपूर्वक सर्वकर्मोंकेपरित्याग करणेविषे असमर्थहुआभी जोपुरुष निषिद्धकर्मोंका तथाकाम्यकर्मोंका परित्यागकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै फलकीइच्छाकापरित्यागकरिकै नित्यकर्मोंकूं तथानैमित्तिककर्मोंकूंहीं करेहै ॥ ऐसाजो मोक्षशास्त्रकाअधिकारी गौणसंन्यासीहै ॥ सोगौणसंन्यासी दूसराहै ॥ और नित्यनैमित्तिककर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिहुएतैंअनंतर उत्पन्नहुईहै आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषा जिसकूं तथा श्रवणादिकसाधनोंकरिकै मोक्षकेसाधनरूपआत्मज्ञानकेसंपादनकरणेकी इच्छावान् ॥ तथा शास्त्रकीविधिपूर्वक सर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै वेदांतशास्त्रकेविचारवासतै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेशरणकूंप्राप्तहुआ ॥ ऐसाजो विविदिषासंन्यासीहै ॥ सोविविदिषासंन्यासी तीसराहै ॥ तहां प्रथमपुरुषकूंतौं सोशरीरकाग्रहणरूप संसारीपणा सर्वकूंप्रसिद्धहींहै ॥ और दूसरेपुरुषकूंतौं सोसंसारीपणा (अनिष्टमिष्टंमिश्रंच) इसवचनकरिकै कथनकर्‍याहै ॥ और तीसरेपुरुषकूंतौं सोसंसारीपणा षष्ठेअध्यायविषे (अयतिःश्रद्धयोपेतः) इत्यादिकवचननैं प्रश्नका उत्थापनकरिकै निर्णयकर्‍याहै ॥ यातैं अविद्याकर्मादिककारणसामग्रीकेविद्यमानहुए अज्ञानीपुरुषकूं सोसंसारीपणा अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तहां किसीअज्ञानीपुरुषकूंतौं ज्ञानकेप्रतिकूलशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और किसीअज्ञानीपुरुषकूं ज्ञानकेअनुकूलशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इतनी तिनोंविषेविशेषताहै ॥ और तत्त्ववेत्ता

पुरुषकूंतौ अविद्याकर्मादिकसंसारकेकारणकाअभावहोणेतैं स्वतःहीं कैवल्यमोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं श्रीभगवान्नैं इसश्लोकविषे दोपदार्थ सूचनकऱ्येहैं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां आत्मज्ञानतैंरहित अज्ञानीपुरुषके संसारीपणेविषे कर्मोंकेपरित्यागकाअसंभवरूपहेतु (नहिदेहभृताशक्यंत्यक्तुंकर्माण्यशेषतः) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकऱ्या ॥ तहांतिसअज्ञानीपुरुषकूं कर्मोंकेत्यागकेअसंभवविषे कौनहेतुहै ॥ अर्थात् किसहेतुतैं सोअज्ञानीपुरुष कर्मोंकूंनहींत्यागसकैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ कर्मकेहेतुरूप जेअधिष्ठानादिकपंचहैं ॥ तिनपांचोंविषे जोअज्ञानीपुरुषोंका तादात्म्यअभिमानहै ॥ सोतादात्म्यअभिमान हीं तिसकर्मत्यागकेअसंभवविषेहेतुहै॥इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् च्यारिश्लोकोंकरिकै वर्णन करैहै ॥ तहांतेअधिष्ठानादिकपांचों वेदांतशास्त्ररूपप्रमाणमूलकहैं ॥ ऐसेअधिष्ठानादिकपांचों परित्यागकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैजानणेयोग्यहैं ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् प्रथमश्लोककरिकै कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) पंचेमानिमहाबाहोकारणानिनिबोधमे ॥ सांख्येकृतांतेप्रोक्तानिसिद्धयेसर्वकर्मणाम् ॥ १३ ॥ पंचं । ईमानि । मेहावाहो । कारणानि । निबोध । मे । सांख्ये । कृतांते । प्रोक्तानि । सिद्धये । सर्वकर्मणाम् ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहान्बाहुवालाअर्जुन सर्वकर्मोंकी सिद्धिवासतै ईनवक्ष्यमाण अधिष्ठानादिकपंच कारणोंकूं तूं हमारे वचनतैं निश्चयकर जेपंचकारण सर्वकर्मोंकी समाप्तिवाले वेदांतशास्त्रविषे कथनकऱ्येहैं ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहान्बाहुवालाअर्जुन लौकिक वैदिक जितनैंकीकर्महैं ॥ तिनसर्वकर्मोंकीसिद्धिवासतै इनवक्ष्यमाण अधिष्ठानादिकपंचकारणोंकूं मैंसर्वज्ञ परमआत्म परमेश्वरकेवचनतैं तूं निश्चयकर ॥ अर्थात् तिनअधिष्ठानादिकपांचोंकेस्वरूपजानणेवासतै तूं सावधानहोउ ॥ तहां यहअधिष्ठानादिकपंचकारण कोईअत्यंत दुर्विज्ञेयनहींहैं ॥ किंतुसावधानचित्तवाले पुरुषनैं यहअधिष्ठानादिकपंचकारण जानिसकीतेहैं ॥ इसप्रकार तिनपांचोंकारणोंकेज्ञानवासतैचित्तकेसमाधानकेविधानकरिकै श्रीभगवान् तिनअधिष्ठानादिकपंचकारणोंकी स्तुतिकरताभयाहै ॥ और (हेमहाबाहो) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं तिनपांचकारणोंकीस्तुतिवासतैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ इनअधिष्ठानादिकपांचकारणोंकेजानणेविषे महान्पराक्रमवालेश्रेष्ठपुरुषहीं समर्थहोवैहै ॥ अश्रेष्ठपुरुष समर्थहोवैनहीं ॥ ऐसा महान्पराक्रमवालाश्रेष्ठपुरुष तूं अर्जुनभीहै ॥ तूं अर्जुनभीइनपांचोंकारणोंकेजानणेविषेसमर्थहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् जेअधिष्ठानादिकपंचकारण आपकेवचनतैं जानणेयोग्यहैं ॥ तेअधिष्ठानादिकपंचकारण किसीअन्यप्रमाण करिकैभीसिद्धहैं ॥ अथवा केवल आपकेवचनमात्रतैंहींसिद्धहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ श्रीभगवान् तिसआपणेवचनविषे अर्जुनकेविश्वासकरावणेवासतै तिनपंचकारणोंकीसिद्धिविषे वेदांतशास्त्ररूपप्रमाणकूं कथन करैहै (सांख्येकृतांतेप्रोक्तानिइति)

हेअर्जुन तेअधिष्ठानादिकपंचकारण कृतांतरूपसांख्यशास्त्रविषे कथनकऱ्येहैं ॥ तहां ब्रह्मानंदरूपनिरतिशयपुरुषार्थकीप्राप्तिवासतै तथाजन्ममरणादिकसर्वअनर्थोंकी निवृत्तिवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं जानणेयोग्यजे जीव ब्रह्म तिनदोनोंकीएकता ताएकताबोधकेउपयोगी श्रवणमननादिकसाधन इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तेसर्वपदार्थ प्रतिपादनकरेहैंजिसशास्त्रविषे ताशास्त्रकानाम सांख्यहै ॥ ऐसासांख्यनामवाला उपनिषदरूपवेदांतशास्त्रहैं ॥ ऐसे सांख्यनामावेदांतशास्त्रविषे तेअधिष्ठानादिकपंच कारण प्रतिपादनकऱ्येहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् केवल आत्मवस्तुमात्रकाप्रतिपादक जोवेदांतशास्त्रहै ॥ तिसवेदांतशास्त्रविषे यहलोकप्रसिद्ध अनात्मरूप तथा अवस्तुरूप पंचकर्मकेकारण किसवासतै प्रतिपादनकऱ्येहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसवेदांतशास्त्रकेविशेषणकूंकथनकरेहै ॥ (कृतांतेइति) तहां क्रियतेइतिकृतम् अर्थयह इसपुरुषनैं प्रयत्नकरिकै जो करीताहै ताकानाम कृतहैं ॥ इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै कृत यहशब्द सर्वकर्मोंकावाचकहै ॥ तिनसर्वकर्मोंका अंतहै क्या परिसमाप्तिहैं आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै जिसशास्त्रविषे ताशास्त्रकानाम कृतांतहै ॥ अथवा (निष्कलंनिष्क्रियंशांतम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै कृत कहीये स्पष्टकऱ्याहै अंत क्या आत्मअनात्मदोनोंकातत्त्वनिश्चय जिसशास्त्रविषे ताशास्त्रकानाम कृतांतहै ॥ अथवा वेदप्रतिपादित नित्यनैमित्तिककर्मोंकानाम कृतहै ॥ तिनकर्मोंका अंतहै क्या परित्यागहै जिसशास्त्रकेश्रवणवासतै ताशास्त्रकानाम कृतांतहै ॥ तहां (संन्यस्यश्रवणंकुर्यात्) इसश्रुतिनैं वेदांतशास्त्रकेश्रवणकरणेवासतै सर्वनित्यनैमित्तिककर्मोंकासंन्यास कथनकऱ्याहै ॥ ऐसे कृतांतरूपवेदांतशास्त्रविषे तेअधिष्ठानादिकपंचकारण कथनक ऱ्येहैं ॥ अर्थात् लोकविषेप्रसिद्ध तथाअनात्मरूप ऐसेजे तेअधिष्ठानादिकपंचकारणहैं ॥ तेपांचोंहींकारणमिथ्याज्ञानकृतअध्यारोपकरिकै लोकोंनैं आत्मारूप करिकैग्रहणकऱ्येहैं ॥ ऐसेपंचकारणोंकूं आत्मतत्त्वज्ञानकरिकैबाधकरणेवासतै परित्याज्यरूपकरिकै वेदांतशास्त्रविषे कथनकऱ्याहै ॥ कोई तिनकारणोंकेकथन करणेविषे तिसवेदांतशास्त्रका तात्पर्यहैनहीं ॥ किंतु अद्वितीयआत्माकेप्रतिपादनविषेहीं तावेदांतशास्त्रका तात्पर्यहै ॥ ईहांयहअभिप्रायहै ॥ देहादिकअनात्मपदा र्थोंकाधर्मरूपजोकर्महै ॥ सोकर्महीं असंग आत्माविषे अविद्याकरिकै अध्यारोपितहुआहै ॥ वास्तवतैं आत्माविषे सोकर्म हैनहीं ॥ इसप्रकारतैं जबी वेदांत शास्त्रनैं आत्माकावास्तवस्वरूप प्रतिपादनकरीताहै ॥ तबी शुद्धआत्माकेज्ञानकरिकै तिसअध्यारोपितकर्मकाबाधहोणेतैं तिनसर्वकर्मोंकाअंत कऱ्याजावैहै ॥ तिस अधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैंविना दूसरेकिसीभीउपायकरिकै तिनकर्मोंकाअंत कऱ्याजातानहीं ॥ इसकारणतैं असंगआत्माविषे तिनकर्मोंकेअसंबंधकेप्रतिपादनकरणे वासतै तेमायाकल्पित अनात्मभूत पंचकर्मोंकेकारण वेदांतशास्त्रविषे अनुवादकरयेहैं ॥ कोई तिनपंचकारणोंकेप्रतिपादनकरणेविषे वेदांतशास्त्रका तात्पर्यहैनहीं ॥ यातैं अद्वैतआत्ममात्रविषे जो वेदांतशास्त्रका तात्पर्यहै ॥ तिसतात्पर्यकी ईहां हानिहोवैनहीं इति ॥ यातैं (कृतांते) इसविशेषणकरिकै श्रीभगवान्नैं वेदांतशा

स्त्रविषे जो सर्वकर्मोंकाअंतपणा कथनकऱ्याहै सोयुक्तहै ॥ इसीअर्थकूं श्रीभगवान् (सर्वंकर्माखिलंपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते) इसवचनकरिकैभी कथनकरताभयाहै
इति ॥ ईहां कितनैंकीमूलपुस्तकोंविषे (पंचेमानि) इसप्रकारकापाठहै ॥ और कितनैंकीमूलपुस्तकोंविषे (पंचैतानि) इसप्रकारकापाठहै ॥ परंतु श्रीभाष्यकारोंनैं
तथाश्रीमधुसूदननैं तथानीलकंठपंडितनैं (पंचेमानि) इसप्रकारकापाठअंगीकारकरिकैव्याख्यानकऱ्याहै ॥ यातैं इसपुस्तकविषेभी (पंचेमानि) इसप्रकारकाहीं
पाठरख्याहै ॥ इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ तहां वेदांतशास्त्रहैप्रमाणाजिनोंविषे ऐसेजे कर्मकेपंचकारणहैं ॥ तेपंचकारण आत्माकेअकर्त्तापणेकीसिद्धिवास्तै परित्या
ज्यरूपकरिकै जानणेयोग्यहैं ॥ यहअर्थ पूर्वकथनकऱ्या ॥ तहां तेपंचकारण कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् द्वितीयश्लोककरिकै
तिनपांचोंकेस्वरूपकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अधिष्ठानंतथाकर्त्ताकरणंचपृथग्विधम् ॥ विविधाश्चपृथक्चेष्टादैवंचैवात्रपंचमम् ॥ १४ ॥ अधिष्ठानं । तथा । कर्त्ता ।
करणं । च । पृथग्विधं । विविधाः । च । पृथक् । चेष्टाः । दैवम् । च । एव । अत्र । पंचमम् ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन
अधिष्ठान तथा कर्त्ता तथा नानाप्रकारका करण तथा नानाप्रकारकी भिन्नभिन्न चेष्टा तथा इनकारणोंविषे पंचमा दैव यहपांचो
कर्मकेकारणहैं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इच्छा द्वेष सुख दुःख चेतना इत्यादिकधर्मोंकेअभिव्यक्तिकाआश्रयरूप जोयह पंचीकृतपंचभूतोंकाकार्यरूप स्थूलशरीरहै ॥ ताशरीरकानाम अ
धिष्ठानहै ॥ और मैंकर्त्ताहूं इसप्रकारकेअभिमानवाला तथाज्ञानशक्तिप्रधानअपंचीकृतपंचमहाभूतोंकाकार्यरूप ऐसाजो अहंकारहै ॥ जोअहंकार अंतःकरण
बुद्धि विज्ञान इत्यादिकनामोंकरिकै कथनकऱ्याजावैहै ॥ तथा जोअहंकार आत्माकेसाथि तादात्म्यअध्यासकरिकै स्वनिष्ठकर्तृत्वादिकधर्मोंकूं आत्माविषेआरो
पणकरणेहाराहै ॥ ताअहंकारकानाम कर्त्ताहै ॥ ईहां (तथाकर्त्ता) इसवचनविषेस्थित जो तथा यहशब्दहै ॥ तिसतथाशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसअहं
काररूपकर्त्ताविषे पूर्वउक्तशरीररूपअधिष्ठानकीसदृशता कथनकरीहै ॥ अर्थात् जैसे सोशरीररूपअधिष्ठान अनात्मारूपहै तथाआकाशादिकपंचभूतोंकाकार्य
रूपहै तथास्वप्नकेपदार्थोंकीन्यांई मायाकरिकैकल्पितहै ॥ तैसे यहअहंकाररूपकर्त्ताभी अनात्मारूपहै तथाभूतोंकाकार्यरूपहै तथास्वप्नपदार्थोंकीन्यांई कल्पितहै ॥
ईहांयहतात्पर्यहै ॥ इसस्थूलशरीरकूं यद्यपि लोकायतिकपुरुषोंनैं आत्मारूपकरिकैग्रहणकऱ्याहै ॥ तथापि अन्यशास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं तिसस्थूलशरीरकूं अनात्मारूप
करिकैहीं निश्चयकऱ्याहै ॥ ऐसेस्थूलशरीरकूं जबी कर्त्ताविषे दृष्टांतरूपकरिकैकथनकऱ्या ॥ तबी तार्किकपुरुषोंनैं आत्मारूपकरिकैग्रहणकऱ्या जोकर्त्ताहै ॥

॥३०८॥

तिसकर्त्ताविषे अनात्मरूपताकानिश्चय अत्यंतसुगमहोवैहै इति ॥ और अपंचीकृतपंचमहाभूतोंतैंउत्पन्नहुए तथाशब्दादिकविषयोंकेउपलब्धिकासाधनरूप ऐसेजे श्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिनइंद्रियोंकानाम करणहै ॥ कैसाहैसोकरण पृथग्विधहै ॥ अर्थात् श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावागादिकपंचकर्मइंद्रिय तथा मन बुद्धि इस द्वादशभेदकरिकै नानाप्रकारकाहै ॥ यद्यपि शास्त्रविषे मन बुद्धि चित्त अहंकार यहच्यारोंहीं अंतःकरणकेभेद कथनकरेहैं ॥ तथापि ईहांकरणवर्गविषेस्थित मन बुद्धि यहदोनों तिसअंतःकरणरूपअहंकारके वृत्तिविशेषलैणे ॥ और तिनवृत्तियोंवाला जो अहंकारहै ॥ सोअहंकारतौं केवल कर्त्तारूपहींहै ॥ करणरूप हैनहीं ॥ और चेतनकाआभासतौं सर्वत्रतुल्यहींहै ॥ तहां अंतःकरणरूपअहंकारविषे कर्त्तापणा (विज्ञानंयज्ञंतनुते) इत्यादिकश्रुतियोंविषे प्रसिद्धहींहै ॥ ईहां (करणंच) इसवचनविषेस्थित जोचकारहै ॥ सोचकार पूर्ववचनविषेस्थित तथा इसशब्दकीअनुवृत्तिकरणेवासतैहै ॥ अर्थात् जैसे पूर्वउक्त शरीररूपअधिष्ठान तथाअहंकाररूपअधिष्ठान तथाअहंकाररूपकर्त्ता अनात्मारूपहै तथाभौतिकहै तथाकल्पितहै॥ तैसे यहद्वादशप्रकारका करणभी अनात्मारूपहै तथाभौतिकरूपहै तथा कल्पितहै ॥ इति ॥ और क्रियाशक्तिहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजे अपंचीकृतपंचमहाभूतहै तिनपंचमहाभूतोंकाकार्यरूप तथाक्रियाप्रधानत्वरूपकरिकै तथावायवी यत्वरूपकरिकै कथनकऱ्येहुए ऐसेजे क्रियारूपप्राणादिकहैं ॥ तिनक्रियारूपप्राणादिकोंकानाम चेष्टाहै ॥ कैसीहैचेष्टा विविधाहै ॥ अर्थात् प्राण अपान व्यान उदान समान इसभेदकरिकैतौं पंचप्रकारकीहै॥अथवा नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय इनपांचोंकूंमिलाइकै दशप्रकारकीहैं ॥ तहां यहनागादिकपंच प्राणादिकपां चोकेअंतर्भूतहींहै ॥ यातैं बहुतस्थलोंविषे पंचहींप्राण कथनकऱ्येहैं ॥ पुनःकैसीहैतेप्राणरूपचेष्टा पृथक्है ॥ अर्थात् स्थानकेभेदतैं तथाकार्यकेभेदतैं भिन्नभिन्नहैं ॥ ईहां (विविधाश्च) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै सोचकार पूर्ववचनविषेस्थित तथा इसशब्दकीअनुवृत्तिकरणेवासतैहै ॥ अर्थात् जैसे पूर्वउक्त अधिष्ठान कर्त्ता करण यहतीनों अनात्मारूपहैं तथाभौतिकरूपहैं तथामायाकरिकैकल्पितहैं ॥ तैसे यहप्राणरूपचेष्टाभी अनात्मारूपहैं तथाभौतिकरूपहैं तथामायाकरिकैकल्पितहैं इति ॥ ईहां केईकविद्वान्पुरुषतौं यहकहेहैं ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे कर्त्तारूपअंतःकरणकेलयहुएभी प्राणकाव्यापार देखणेविषेआवैहै ॥ और जहांतहां प्राणकूं अंतःकरणतैंभिन्नकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं सोप्राण अंतःकरणतैं अत्यंतभिन्नकीन्यांईहै इति ॥ और केईकसूक्ष्मदर्शीविद्वान्पुरुषतौं यहकहेहैं ॥ क्रियाश क्तिवाला तथाज्ञानशक्तिवाला एकहीं अपंचीकृतपंचमहाभूतोंकाकार्य चेतनके जीवपणेकाउपाधिहै ॥ सोजीवपणेकाउपाधिरूप एकहींकार्य क्रियाशक्तिकीप्रधानता करिकैतौं प्राण इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और ज्ञानशक्तिकीप्रधानताकरिकै अंतःकरण इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ काहेतैं (सईक्षांचक्रे कस्मिन्वाहमुत्क्रांत उत्क्रांतोभविष्यामि कस्मिन्वाप्रतिष्ठितेप्रतिष्ठांयास्यामीति सप्राणमसृजत) इसश्रुतिविषे उत्क्रांति स्थिति आदिकोंकाउपाधिपणा प्राणविषे कथनकऱ्याहै ॥

और (सधीःस्वप्नोभूत्वेमंलोकमतिक्रामतिमृत्योरूपाणि ध्यायतीवलेलायतीव) इत्यादिक श्रुतियोंविषे तिनउत्क्रांतिआदिकोंकाउपाधिपणा अंतःकरणरूपबुद्धिविषे कथनकऱ्याहै ॥ ईहां जोकदाचित् प्राण अंतःकरण इनदोनोंउपाधियोंका स्वतंत्रहींभेद अंगीकारकरिये ॥ तौं जीवात्माकेभी भेदकीप्राप्तिहोवैगी ॥ सोजीव काभेद सिद्धांतविषे अंगीकृतनहींहै ॥ यातैं अंतःकरणप्राण इनदोनोंकूं एकरूपकरिकैहीं उत्क्रांतिआदिकोंकाउपाधिपणा युक्तहै ॥ और प्राण अंतःकरण इन दोनोंका जोभेद कथनकऱ्याहै ॥ सोभेदतौं तिनोंकेएकभावविषेभी क्रियाशक्ति ज्ञानशक्तियोंकेभेदकरिकै संभवहोइसकेहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे ज्ञान शक्तिभागकेलयहुएभी क्रियाशक्तिभागकाजोदर्शनहै ॥ सोदर्शनतौं प्राणअंतःकरणकेएकभावविषेभी विरुद्धनहींहै ॥ और दृष्टिसृष्टि लयविषे सर्वकेलयहुएभी सो प्राणव्यापारवाला सुषुप्तपुरुषकाशरीर अन्यपुरुषोंनैं यहसोयाहुआहै इसप्रकारतैं कल्पनाकरीताहै॥ यातैं दोनोंप्रकारतैंभी प्राण अंतःकरण इनदोनोंकाभेदकाकथन संभवहोइसकेहै इति ॥ और पूर्व उक्त शरीररूपअधिष्ठान तथाअहंकार रूपकर्त्ता तथाद्वादशप्रकारकाकरण तथाप्राणादिरूपचेष्टा इनसर्वोंकेऊपरि यथाक्रमतैं अनुग्रहकरणेहारे जेदेवताहैं ॥ तिनदेवतावोंकानाम दैवहै ॥ सोदैव ईहां कारणवर्गविषे पंचमहै ॥ अर्थात् पंचत्वसंख्याकेपूर्णकरणेहाराहै ॥ ईहां (दैवंच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार पूर्ववचनविषेस्थित तथा इसशब्दकीअनुवृत्तिकरावणेवासतैहै ॥ अर्थात् पूर्वउक्त अधिष्ठानादिकोंकीन्यांई यहदैवभी अनात्मारूपहै तथा भौतिकहै तथामायाकरिकैकल्पितहै इति ॥ तहां कर्त्ता करण चेष्टा इनतीनोंकाअधिष्ठान जोशरीरहै ॥ तिसशरीररूपअधिष्ठानकातौं पृथिवीदेवताहै ॥ काहेतैं (यत्रास्यपुरुषस्यमृतस्याग्निंवागप्येतिवातंप्राणश्चक्षुरादित्यंमनश्चंद्रंदिशःश्रोत्रंपृथवींशरीरम्) इसश्रुतिविषे वाकादिकोंकेअधिष्ठाताअग्नि आदिकोंकेसाथि शरीरकाअधिष्ठातारूपकरिकै पृथिवीका पठनकऱ्याहै ॥ यातैं इसश्रुतिप्रमाणतैं शरीररूपअधिष्ठानका पृथिवीहीं देवतासिद्धहोवैहै ॥ और कर्त्ता रूपअहंकारका रुद्रदेवताहै ॥ सो पुराणादिकोंविषेप्रसिद्धहै ॥ इसप्रकार श्रोत्रादिककरणोंके अधिष्ठातादेवताभी प्रसिद्धहींहै ॥ तहां श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण इनपंचज्ञानइंद्रियोंके यथाक्रमतैं दिक् वात अर्क प्रचेता आश्विनी यहपंच देवताहैं ॥ और वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ इनपंचकर्मइंद्रियोंके यथाक्रमतैं वन्हि इंद्र उपेंद्र मित्र प्रजापति यहपंच देवताहैं ॥ और मन बुद्धि इनदोनोंके यथाक्रमतैं चंद्र बृहस्पति यहदोनों देवताहैं ॥ और प्राण अपान व्यान उदान समान इनचेष्टा रूपपंचप्राणोंकेतौं यथाक्रमतैं सद्योजात वामदेव अघोर तत्पुरुष ईशान यहपंच देवताहैं ॥ ते पुराणादिकोंविषे प्रसिद्धहींहै ॥ और किसीटीकाविषेतौं दैवशब्द करिकै धर्मअधर्मकाग्रहणकऱ्याहै इति ॥ १४ ॥ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे तिनअधिष्ठानादिकपंचकारणोंका स्वरूपकथनकऱ्या ॥ अब इसतृतीयश्लोककरिकै श्रीभगवान् तिनपांचोंविषे सर्वकर्मोंकेकारणपणेकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्मप्रारभतेनरः ॥ न्याय्यंवाविपरीतंवापंचैतेतस्यहेतवः ॥ १५ ॥ शरीरवाङ्मनोभिः । यत् । कर्म । प्रारभते । नरः । न्याय्यं । वा । विपरीतं । वा । पंच । एते । तस्य । हेतवः ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यह पुरुष शरीरवाक्मनइनतीनोंकरिकै जिस धर्मरूप अथवा अधर्मरूप कर्मकूं प्रारंभकरैहै तिनसर्वकर्मके यह अधिष्ठानादिकपंचहीं कारणरूपहैं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां शारीर वाचिक मानसिक यहविधिनिषेधरूप तीनप्रकारकाहींकर्म धर्मशास्त्रविषेप्रसिद्धहै ॥ तथा (प्रवृत्तिर्वाग्बुद्धिशरीरारंभः) इसवचनकरिकै अक्षपादनैंभी सोतीनप्रकारकाहींकर्म कथनकऱ्याहै ॥ यातैं प्रधानताकेअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् कहेहै ॥ हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष शरीरकरिकै अथवा वाक्करिकै अथवामनकरिकै जिस न्याय्यरूपकर्मकूं अथवा विपरीतरूपकर्मकूं प्रारंभकरैहै ॥तिससर्वहींकर्मके यहपूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपंचहींकारणरूपहैं ॥ तहां श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैविहित जेअग्निहोत्रादिकधर्महैं ताकूं न्याय्यकहेहैं॥ और तिसश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैनिषिद्ध जेहिंसादिकअधर्महैं ताकूं विपरीतकहेहैं ॥ तहां जीवनकेहेतुभूत जे उच्छ्वास निःश्वास निमेष उन्मेष क्षुत जृंभण इत्यादिक स्वाभाविककर्महै ॥ तथा अन्यभीजेकेई विहितप्रतिषिद्धकेसमान कर्महैं ॥ तेसर्वकर्म पूर्वकऱ्येहुएधर्मअधर्मदोनोंकाहीं कार्यरूपहै ॥ यातैं तेसर्वकर्म न्याय्य विपरीत इनदोनोंकर्मोंविषेहीं अंतर्भूतहैं ॥ यातैं श्रीभगवानूकेवचनविषेन्यून तादोषकीप्राप्ति संभवैनहीं ॥ और शास्त्रकातथा शास्त्रउक्तकर्मका मनुष्यहीं अधिकारीहोवैहै ॥ इसअर्थकेबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं मनुष्यकावाचक (नरः) यहशब्द कथनकऱ्याहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ शंका ॥ शरीर वाक् मन इनोंकरिकै जोकर्म प्रारंभ कऱ्याजावैहै इसप्रकारकावचनकरिकै पश्चात् तिससर्वकर्मके अधिष्ठानादिकपंच कारणहैं यहवचनकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ समाधान ॥ ईहां (शरीर) इसपदकरिकै अधिष्ठानका ग्रहणकरणा ॥ और (नरः) इसपदकरिकै कर्त्ताका ग्रहणकरणा ॥ और (वाङ्मनः) इसपदकरिकै करणका ग्रहणकरणा ॥ और (प्रारभते) इस पदकरिकै चेष्टाका ग्रहणकरणा ॥ और (न्याय्यंवाविपरीतंवा) इसवचनकरिकै धर्मअधर्मरूपदैवका ग्रहणकरणा ॥ यद्यपि सर्वकर्मोंविषे अधिष्ठानादिक पांचोंकारणोंकाउपयोग समानहै ॥ तिनपांचोंतैंविना कोईभीकर्म सिद्धहोतानहीं ॥ तथापि श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रविषे विधिप्रतिषेधरूप शारीर वाचिक मानसिक यहतीनप्रकारकाहींकर्म प्रसिद्धहै ॥ यातैं यहकर्म शारीरहै वाचिकहै यहकर्म मानसहै इसप्रकारकाजो कथनहै ॥ सोकथन तिसतिसकर्मविषे तिसतिसशरीरादि कोंकीप्रधानताकीअपेक्षाकरिकैहै ॥ कोईसोकथन तिनशारीरादिककर्मोंविषे अधिष्ठानादिकपांचोंकीहेतुताकूं निवृत्तकरतानहीं यातैं किंचित्मात्रभी ईहांविरोध

होवैनहीं इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ तहां इनपूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपांचोंकूंहीं सर्वकर्मोंकाकर्त्तापणाहोणेतैं असंगआत्माकूं तिनकर्मोंकाकर्त्तापणा हैनहीं ॥ इसप्रकारकाजो आत्माविषे अकर्त्तापणेकाज्ञानहै तथा तिनअधिष्ठानादिकपांचोंविषे कर्त्तापणेकाज्ञानहै ॥ सोज्ञानहीं तिनअधिष्ठानादिकपांचोंकेनिरूपणकाफलहै ॥ ऐसेफलकूं अब श्रीभगवान् आत्माकूंकर्त्तामानणेहारेमूढपुरुषोंकीनिंदापूर्वकइसचतुर्थश्लोककरिकैकथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) तत्रैवंसतिकर्त्तारमात्मानंकेवलंतुयः ॥ पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्नसपश्यतिदुर्मतिः ॥ १६ ॥ तत्र । एवंसति । कर्त्तारम् । आत्मानम् । केवलम् । तु । यः । पश्यति । अकृतबुद्धित्वात् । न । सः । पश्यति । दुर्मतिः ॥१६॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिनसर्वकर्मोंविषे अधिष्ठानादिकपांचोंकरिकैजन्यताकेहुएभी जोमूढपुरुष असंग उदासीनरूपहीं आत्माकूं कर्त्तारूप देखताहै सो दुर्मति पुरुष शास्त्रजन्यविवेकबुद्धितैंरहितहोणेतैं नहीं देखताहै ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकरेयेजे धर्मअधर्मरूप सर्वकर्महैं तिनसर्वकर्मोंविषे पूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपंचकारणोंकरिकै जन्यताकेसिद्धहुएभी ॥ वास्तवतैं असंगउदासीनरूपहींआत्माकूंजोमूढपुरुष कर्त्तारूप देखताहै ॥ अर्थात् जोआत्मादेव सर्वजडप्रपंचकाप्रकाशकहै तथा सत्तास्फूर्त्तिरूपहै ॥ तथा स्वप्रकाशपरमानंदघनहै ॥ तथा बाधतैंरहितहै ॥ तथा असंगउदासीनहै ॥ तथा अकर्त्ताहै ॥ तथा अविक्रियहै ॥ तथा अद्वितीयहै ॥ वास्तवतैं इसप्रकारका असंगउदासीनअकर्त्तारूपहुआभी जोआत्मादेव अविद्याकरिकै पूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपांचोंकारणोंविषे प्रतिबिंबितहोवैहै ॥ जैसे सूर्य जलविषे प्रतिबिंबितहोवैहै ॥ तहां जलादिकोंकूंप्रकाशकरणेहारा सोसूर्य यद्यपि तिनजलादिकोंतैंभिन्नहै ॥ तथापि तिसजलकेसाथि तिससूर्यकातादात्म्यभावकल्पनाकरिकै मूढपुरुष जैसे तिस जलकेचलनकरिकै तिससूर्यकूं चलायमानहुआ मानताहै ॥ तैसे तिनअधिष्ठानादिकोंकूं प्रकाशकरणेहारे असंगअद्वितीय आत्माका तिनअधिष्ठानादिकोंकेसाथि तादात्म्यभावकूंकल्पनाकरिकै तिनअधिष्ठानादिकोंकेकर्मोंका असंगआत्माविषे आरोपणकरिकै जोपुरुष मैंहींकर्मोंकाकर्त्ताहूं इसप्रकारतैं सर्वकेसाक्षीरूपभीआत्माकूं क्रियाकाआश्रयरूप देखताहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुकेवास्तवस्वरूपकूं नहींजानणेहारापुरुष तिसरज्जुकूं भुजंगरूपकरिकैकल्पनाकरैहै ॥ तैसे आत्माके असंगअकर्त्तारूपवास्तवस्वरूपकूं नहींजानताहुआ जोपुरुष अविद्याकरिकै तिसअसंगआत्माकूं तिन देहादिकोंकेकर्मका आश्रयरूपकरिकैमानैहै ॥ सोभ्रांत पुरुष इसप्रकारतैंआत्माकूंदेखताहुआभी नहींदेखताहै॥ जैसे रज्जुकूं सर्परूपकरिकैदेखताहुआभी भ्रांतपुरुष तिसरज्जुकूं नहींदेखैहै तैसे वास्तवतैं असंगउदासीन अकर्त्ता आत्माकूं कर्त्तारूपकरिकैदेखताहुआभी सोभ्रांतपुरुष तिसआत्माकूं नहींदेखैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोमूढपुरुष भ्रांतिकरिकै आत्माकूं विपरीतहींदेखैहै ॥

आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंदेखतानहीं ॥ इसविषे कौंनहेतुहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिसविपरीतदर्शनविषे हेतुकहेहै (अकृतबुद्धित्वात्इति) तहां गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकैनहींउत्पन्नकरीहैविवेकबुद्धि जिसनैं ताकानाम अकृतबुद्धिहै ॥ ऐसाअकृतबुद्धिहोणेतैं सोपुरुष आत्माकूं विपरीतहींदेखेहै ॥ अर्थात् वास्तवतैं असंग उदासीन अकर्त्तारूपभी आत्माकूं सोभ्रांतपुरुष कर्त्तारूपहींदेखेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे इसपुरुषकूं जबपर्यंत रज्जुकेवास्तवस्वरूपकासाक्षात्कार नहींहुआ ॥ तबपर्यंत यहपुरुष सर्पभ्रमकूं किसीभीउपायकरिकै निवृत्तकरिसकतानहीं ॥ तैसे इसपुरुषकूं जबपर्यंत सत्य ज्ञान अनंत अकर्त्ता अभोक्ता परमानंद तीनअवस्थावोंतैंरहित असंग उदासीन ऐसाब्रह्म मैंहूं इसप्रकारका ब्रह्मात्मसाक्षात्कार गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै नहींउत्पन्नहुआहै ॥ तबपर्यंत यहपुरुष तिस कर्तृत्वभ्रमकूं किसीभीउपायकरिकैनिवृत्तकरिसकतानहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकेविचारकरिकै इसप्रकारके ब्रह्मात्मसाक्षात्कारकूं किसवास्तै नहींउत्पन्नकरता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकेविषेहेतुकहेहै (दुर्मतिःइति) तहां विवेककेप्रतिबंधकपापकर्मोंकरिकै मलिनहुईमतिजिसकी ताकानाम दुर्मतिहै ॥ ऐसादुर्मतिहोणेतैंहीं सोभ्रांतपुरुषब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकाविचार करतानहीं ॥ तात्पर्ययह॥ पापकर्मोंकरिकैअशुद्धबुद्धिवालाहोणेतैं नित्यअनित्यवस्तुविवेकादिकोंतैंरहितपणेकरिकै ब्रह्मात्मज्ञानकेअयोग्यहोणेतैं सोभ्रांतपुरुष अविद्याकरिकै अकर्त्तारूप भीआत्माकूं कर्त्तारूपकल्पनाकरताहुआ तथाकेवलरूपभीआत्माकूं अकेवलरूपकल्पनाकरताहुआ तथाकर्मकेकर्त्तारूपअधिष्ठानादिकपांचोंविषे तादात्म्यअभिमानतैं कर्मोंकेत्यागकरणेविषेअसमर्थहुआ इसीकारणतैंहीं संसारी कर्मकाअधिकारी देहभृत् अकृतबुद्धि इत्यादिकसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ सर्वप्रकारतैं जन्ममरणकीप्राप्तिकरिकै अनिष्ट इष्ट मिश्र इसतीनप्रकारके कर्मकेफलकूंहीं अनुभवकरेहै ॥ इतनैंकरिकै जोतार्किक देहादिकोंतैंव्यतिरिक्त आत्माकूंहीं केवल कर्त्तादेखेहै सोतार्किकभी अकृतबुद्धिहींजानणा यहअर्थ बोधनकऱ्या इति ॥ और केईकवादीतौ (तत्रैवंसतिकर्त्तारमात्मानंकेवलंतुयः) इसश्लोकका यहअर्थ करेहैं ॥ आत्मा केवल कर्त्तानहींहै ॥ किंतु पूर्वउक्तअधिष्ठानादिकोंकेसाथि मिल्याहुआ आत्मा कर्त्ताहोवैहै ॥ इसप्रकारवास्तवतैं तिनअधिष्ठानादिकोंकेसाथि मिलिकैकर्त्ता भावकूं प्राप्तहुएआत्माकूं जोपुरुष केवल कर्त्तादेखेहै ॥ अर्थात् तिनअधिष्ठानादिकोंकेसंबंधतैंविना केवल एकआत्माकूंहीं कर्त्तादेखताहै ॥ सोपुरुष दुर्मतिहै ॥ इसप्रकारकाअर्थ (केवलम्) इसशब्दकेप्रयोगतैंसिद्धहोवैहै इति ॥ सोयहवादियोंकाअर्थ समीचीननहीं ॥काहेतैं सर्वक्रियावोंतैंरहित असंगआत्माका तिनअधिष्ठानादिकोंकेसाथि मिलनाहींसंभवतानहीं ॥ और जलसूर्यकीन्यांई तिनअधिष्ठानादिकोंकेसाथि असंगआत्माका जोआविद्यक मिलना अंगीकारकरिये ॥ तौं तिसआविद्यक मिलनैंकरिकै आत्माविषे सोकर्तृत्वभी आविद्यकहींहोवैगा ॥ और तेअधिष्ठानादिकभीसर्व आविद्यकहींहैं ॥ ऐसेकल्पितअधिष्ठानादिकोंकेसाथि आत्माका वास्त

वसंबद्धपणा संभवतानहीं ॥ और (केवलं) यहशब्दतैं स्वभावतैंसिद्धहीं आत्माकेअसंगअद्वितीयरूपकूं अनुवादकरेहै ॥ आत्माकूंकर्त्तामानणेहारेपुरुषोंविषे दुर्मतिपणा बोधनकरणेवासतै ॥ यातैं (केवलम्) इसशब्दतैं सोवादीकाअर्थ सिद्धहोइसकैनहीं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ तहां (पंचेमानिमहाबाहो) इत्यादिक च्यारिश्लोकोंकरिकै (अनिष्टमिष्टंमिश्रंचात्रिविधंकर्मणःफलम् ॥ भवत्यत्यागिनांप्रेत्य) इन पूर्वउक्तश्लोककेतीनचरणोंका व्याख्यानकऱ्या ॥ अब (नतुसंन्यासिनां क्वचित्) इसचतुर्थचरणका श्रीभगवान् एकश्लोककरिकै व्याख्यानकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यस्यनाहंकृतोभावोबुद्धिर्यस्यनलिप्यते ॥ हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते ॥ १७ ॥ यस्य । न । अहंकृतः । भावः । बुद्धिः । यस्य । न । लिप्यते । हत्वा । अपि । सः । इमान् । लोकान् । न । हंति । न । निबध्यते ॥ १७ ॥ (इतिप०) ॥

हेअर्जुन जिसविद्वान्पुरुषकी मैंकर्त्ताहूंइसप्रकारकी वृत्ति नहींहोवैहै तथा जिसविद्वान्पुरुषकी बुद्धि नहीं लिपायमानहोवैहै सोविद्वान्पुरुष इन लोकोंकूं हनन करिकै भी नहीं हननकरेहै तथानहीं बंधायमानहोवैहै ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषे कथनकऱ्याजो दुर्मतिपुरुषहै ॥ तिसदुर्मतिपुरुषतैंअत्यंतविलक्षण जोअधिकारीपुरुषहै ॥ जोअधिकारीपुरुष पूर्वलेपुण्यकर्मोंकरिकै विवेककेविरोधीपापकर्मोंकेक्षयहुए विवेक वैराग्य शमादिषट् संपत् मुमुक्षुता इनच्यारिसाधनोंकूंप्राप्तहुआहै ॥ तथा गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं उत्पन्नहुआहै अकर्त्ता अभोक्ता स्वप्रकाश परमानंद अद्वितीय ब्रह्ममैंहूं याप्रकारका ब्रह्मात्मसाक्षात्कार जिसकूं ॥ ऐसे जिसविद्वान्पुरुषका अहंकृतभाव नष्टहोइगयाहै ॥ अर्थात् तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअज्ञानकेबाधितहुए जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकी मैंकर्ताहूं इसप्रकारकीवृत्ति कदाचित्भीनहींहोवैहै ॥ अथवा (यस्यनाहंकृतोभावः) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ जिसतत्त्ववेत्तापुरुषका भाव कहीये सद्भाव अहंकृतोन कहीये अहंइसप्रकारकेकथनयोग्यनहींहै ॥ काहेतैं तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै अहंकारकेबाधहुए तिसतत्त्ववेत्तापुरुषका शुद्धस्वरूपमात्रहीं परिशेषतैंरहेहै ॥ तिसशुद्धस्वरूपविषे मनवाणीकी विषयताहैनहीं ॥ अथवा (यस्यनाहंकृतोभावः) इसवचनका यहतीसराअर्थ करणा ॥ जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं अहंकृतः कहीये अहंकारका भाव कहीये तादात्म्यअध्यास नहींहै ॥ काहेतैं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषका सोतादात्म्यअध्यास विवेककरिकै निवृत्तहोइगयाहै ॥ यद्यपि व्यवहारकालविषे तिसतत्त्ववेत्तापुरुषविषेभी बाधितानुवृत्तिकरिकै सो कर्त्तापणा प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि सोतत्त्ववेत्तापुरुष इसप्रकारकाविचारकरिकै आपणेआत्माविषे सोकर्त्तापणा मानतानहीं ॥ किंतु पूर्वउक्त अधिष्ठानादिकपांचों विषेहीं सोकर्त्तापणा मानताहै ॥ सोविचार दिखावैहैं ॥ सर्वात्मारूपमेरेविषे मायाकरिकैकल्पित जोपूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपंचहैं ॥ जेअधिष्ठानादिकपंच कल्पित

संबंधकरिकै मैंस्वप्रकाशअसंगचैतन्यनैं प्रकाशकरीतेहैं ॥ तेअधिष्ठानादिकपंचहीं सर्वकर्मोंकेकर्त्ताहैं ॥ मैंअसंगआत्मा कदाचित्भी तिनकर्मोंका कर्त्तानहींहूं ॥ किंतु मैंआत्मादेवतौं तिनअधिष्ठानादिकपंचकर्त्तावोंका तथातिनोंकेव्यापारोंका साक्षीभूतहूं ॥ तथा क्रियाशक्तिवालेप्राणरूपउपाधितैं तथाज्ञानशक्तिवालेअंतःकरण रूपउपाधितैं मैं रहितहूं॥तथा मैं शुद्धहूं ॥ तथासर्वकार्यकारणोंकेसंबंधतैं मैं रहितहूं ॥ तथा मैं कूटस्थनित्यहूं॥तथा मैं सर्वद्वैततैंरहितहूं॥तथा जन्ममरणादिकसर्व विकारोंतैं मैं रहितहूं ॥ इसीप्रकारके हमारेस्वरूपकूं ॥ (असंगोह्ययंपुरुषःसाक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च अप्राणोह्यमनाःशुभ्रोअक्षरात्परतःपरः॥अज आत्मामहान्ध्रुवः सलिलएकोद्रष्टाद्वैतः अजोनित्यःशाश्वतोयंपुराणः निष्कलंनिष्क्रियंशांतंनिरवद्यंनिरंजनम्) ॥ इत्यादिकश्रुतियांभी प्रतिपादनकरेहैं॥तथा इसीप्रकारकेहमारेस्वरूपकूं (अविकार्योयमुच्यते॥ प्रकृतेःक्रियमाणानिगुणैःकर्माणिसर्वशः॥अहंकारविमूढात्माकर्ताहमितिमन्यते॥तत्त्ववित्तुनसज्जते॥शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनालिप्यते॥) इत्यादिकस्मृतियांभीप्रतिपादनकरेहैं ॥ यातैं मैंअसंगआत्मा तिनकर्मोंकाकर्त्तानहींहूं ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै जोतत्ववेत्तापुरुष असंगआत्माकूं कर्त्तामान तानहीं ॥ किंतु पूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपांचोंकूंहीं सर्वकर्मोंकाकर्त्तामानेहै इति ॥ इसीकारणतैंहीं जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकी अंतःकरणरूपबुद्धि नहींलिपायमानहोवै है ॥ अर्थात् जिसतत्ववेत्तापुरुषकीबुद्धि अनुशयवालीहोतीनहीं ॥ तहां इसकर्मकूं मैं करूंगा तथा इसकर्मके फलकूं मैं भोगौंगा इसप्रकारकाजो अनुसंधानहै ॥ जो अनुसंधान कर्त्ताभोक्तापणेकीवासनारूपनिमित्तकरिकैजन्यहै ॥ तिसअनुसंधानरूपलेपकानाम अनुशयहै ॥ सोलेपरूपअनुशय पुण्यकर्मविषेतौं हर्षरूपहोवै है ॥ और पापकर्मविषे पश्चात्तापरूपहोवैहै ॥ इसप्रकारके दोनोंप्रकारकेलेपकरिकै जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकीबुद्धि युक्तनहींहोवैहै ॥ काहेतैं अकर्त्ताअभोक्ताआत्माके साक्षात्कारकरिकै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषका कर्तृत्वभोक्तृत्वअभिमान निवृत्तहोइगयाहै ॥ याकारणतैं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकीबुद्धि तिसअनुशयरूपलेपयुक्तहोतीनहीं ॥ यहवार्त्ताश्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहां श्रुति ॥ (नैनंकृताकृतेतपतः । एषनित्योमहिमाब्राह्मणस्यनवर्द्धतेकर्मणानोकनीयान् । तंविदित्वानलिप्यते कर्मणा पापकेन । यथापुष्करपलाशआपोनश्लिष्यंतएवमेवंविदिपापकर्मनश्लिष्यते) ॥ अर्थयह ॥ जैसे अज्ञानीपुरुषकूं कन्याहुआपापकर्म तथानहींकन्याहुआपुण्यकर्म तपायमानकरेहै ॥ तैसे इसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकूं कन्याहुआपापकर्म तथानहींकन्याहुआपुण्यकर्म तपायमानकरतानहीं ॥ और इसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषका यह महान्प्रभावहै ॥ जो पुण्यकर्मकरिकैतौं हर्षकूंनहींप्राप्तहोता ॥ तथा पापकर्मकरिकै परितापकूंनहींप्राप्तहोता ॥ और मैं ब्रह्मरूपहूं इसप्रकारतैं प्रत्यक्अभिन्न ब्रह्मकूं साक्षात्कारकरिकै यहतत्त्ववेत्तापुरुष पुण्यपापकर्मोंकरिकैलिपायमानहोतानहीं ॥ और जैसे जलविषेस्थितकमलकेपत्रकूं जलस्पर्शकरतेनहीं ॥ तैसे इसत त्ववेत्तापुरुषकूं पुण्यपापकर्म स्पर्शकरतानहीं इति ॥ इतनैंकहणेकरिकै यहअर्थ सिद्धभया ॥ जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं अहंकृतभावनहींहै ॥ तथा जिसतत्त्ववे

त्तापुरुषकीबुद्धि लिपायमाननहींहोवैहै ॥ सो पूर्वउक्तदुर्मतिपुरुषतैंविलक्षण सुमति परमार्थदर्शी तत्त्ववेत्तापुरुष आत्माकूं केवल अकर्त्ताहीदेखैहैं ॥ कदाचित् भी आत्माकूं कर्तामाननतानहीं ॥ ऐसातत्त्ववेत्तापुरुष कर्तृत्वभोक्तृत्वअभिमानकेअभावतैं अनिष्ट इष्ट मिश्र इसतीनप्रकारकेकर्मकेफलकूं कदाचित्भी प्राप्त होतानहीं ॥ इतनाहीं इसगीताशास्त्रकाअर्थहै इति ॥ अब श्रीभगवान् तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकीस्तुतिकरणेवासतै तिसपूर्वउक्त अहंकारकेअभावकूं तथाबुद्धि लेपकेअभावकूं कथनकरैहै (हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते इति) हेअर्जुन ऐसातत्त्ववेत्तापुरुष इनसर्वप्राणीयोंकूं हननकरिकैभी नहींहननकरैहै ॥ अर्थात् मैंअसंग आत्मा सर्वदा अकर्ताहूं इसप्रकारके अकर्तास्वरूपके साक्षात्कारतैं सो तत्त्ववेत्तापुरुष तिसहननरूप क्रियाकाकर्ताहोवैनहीं ॥ इसी कारणतैंहीं सोतत्त्ववेत्तापुरुष बंधायमानभीहोतानहीं ॥ अर्थात् तिसहननरूपक्रियाकेकार्यरूप अधर्मफलकेसाथिभी सोतत्त्ववेत्तापुरुष संबंधकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ ईहां (यस्य नाहंकृतोभावः) इसवचनकेअर्थकातौं (नहंति) इसवचनकाअर्थ फलरूपहै ॥ और (बुद्धिर्यस्यनलिप्यते) इसवचनकेअर्थकातौं (ननिबध्यते) इसवचनकाअर्थ फलरूपहै ॥ ईहां (हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं तत्त्वसाक्षात्कारकामहत्त्व कथनकर्‍याहै ॥ कोई तत्त्ववेत्तापुरुष सर्वप्राणीयोंकाहननकरै इसअर्थविषे भगवान्का तात्पर्यहैनहीं ॥ और सर्वात्मदर्शीतत्त्ववेत्तापुरुषविषे सर्वप्राणीयोंकाहनन नकरणा संभवतानहीं ॥ और (हत्वापिसइमाँल्लोकान्) इसवचनकरिकै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषविषे जो हननक्रियाकाकर्त्तापणा कथनकर्‍याहै॥ सो लौकिकबाधितकर्तृत्वदृष्टिकरिकैकथनकर्‍याहै ॥ और (नहंति) इसवचनकरिकै तिसतत्ववेत्तापुरुषविषे जो कर्तृत्वकानिषेधकर्‍याहै ॥ सोशास्त्रीयपारमार्थिकदृष्टिकरिकै निषेध कर्‍याहै ॥ यातैं (हत्वा नहंति) इनदोनोंवचनोंका परस्परविरोधहोवैनहीं इति ॥ तहां इसगीताशास्त्रकेआदिविषे (नायंहंतिनहन्यते) इसवचनकरिकै आत्माविषे सर्वकर्मोंकाअस्पर्शीपणा प्रतिज्ञाकरिकै (नजायतेम्रियते) इत्यादिकहेतुरूपवचनोंकरिकै तिसप्रतिज्ञातअर्थकीसिद्धिकरिकै (वेदाविनाशिनंनित्यम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै विद्वान्पुरुषकूं सर्वकर्मोंकेअधिकारकीनिवृत्ति संक्षेपकरिकैकथनकरीथी ॥ और साईहीं सर्वकर्मोंकेअधिकारकी निवृत्ति मध्यविषे तिस तिसप्रसंगकरिकै विस्तारतैंप्रतिपादनकरीथी ॥ और ईहां इतनाहीं इसगीताशास्त्रकाअर्थहै इसप्रकारतैं शास्त्रअर्थकेएकतावत्त्वदिखावणेवासतै (नहंतिननिबध्यते) इसवचनकरिकै सासर्वकर्मोंकेअधिकारकीनिवृत्ति उपसंहारकरीहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ अविद्याकरिकैकल्पित तथाअधिष्ठानादिकपंचअनात्मपदार्थोंकरिकैकर्‍येहुए ऐसेजे विहितनिषिद्धकर्महैं ॥ तिनसर्वकर्मोंका अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकीआत्मविद्याकरिकै मूलसहित उच्छेदहोइजावैहै ॥ याकारणतैं परमार्थसंन्यासीपुरुषोंकूं अनिष्ट इष्ट मिश्र यहतीनप्रकारकाकर्मकाफल नहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहजोअर्थ पूर्वकथनकर्‍याथा सोयुक्तहीहै ॥ तहां मैंआत्मा अकर्त्ताहूं

तथाअभोक्ताहूं इसप्रकारकाजो अकर्त्ताआत्माकासाक्षात्कारहै ॥ इसीकानाम परमार्थसंन्यासहै ॥ इसप्रकारका परमार्थसंन्यास जनकअजातशत्रुआदिकतत्त्ववेत्तागृहस्थपुरुषोंविषेभी विद्यमानहै ॥ यातैं तेजनकादिकतत्त्ववेत्तापुरुषभी तिसपरमार्थसंन्यासवालेहींहै ॥ यद्यपिजनकादिकगृहस्थज्ञानीयोंविषे आपणेवर्णआश्रमकेकर्म देखणेविषेआवैहैं ॥ तथापि जैसे तत्त्ववेत्तापरमहंससंन्यासीयोंविषे प्रारब्धकर्मकेवशतैं बाधितानुवृत्तिकरिकै अथवा अन्यपुरुषोंकीकल्पनाकरिकै भिक्षाअटनादिककर्म प्रतीतहोवैहैं ॥ तैसे प्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतैं बाधितानुवृत्तिकरिकै अथवा अन्यपुरुषोंकीकल्पनाकरिकै तिनजनकादिकोंविषे सोकर्मोंकादर्शन विरुद्धनहींहै ॥ इसीकारणतैंहीं आत्मज्ञानकाफलभूत विद्वत्संन्यास कह्याजावैहै ॥ औरसाधनभूतजो विविदिषासंन्यासहै सोविविदिषासंन्यासतौं प्रथम इसप्रकारकानहींहुआभी ज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतर इसीप्रकारकाहींहोवैहै इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व अधिष्ठानादिकपांचोंकूं सर्वकर्मोंकाहेतुरूपकथनकरिकै आत्माकूं तिनसर्वकर्मोंकेस्पर्शतैंरहित कथनकर्‍या ॥ अब तिसपूर्वउक्तअर्थकूंहीं ज्ञानज्ञेयादिकप्रक्रियाकीरचनाकरिकै तथात्रैगुण्यभेदकेव्याख्यानकरिकै पूर्वतैंविलक्षणरीतितैं वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) ज्ञानंज्ञेयंपरिज्ञातात्रिविधाकर्मचोदना ॥ करणंकर्मकर्तेतित्रिविधःकर्मसंग्रहः ॥ १८ ॥ ज्ञानम् । ज्ञेयम् । परिज्ञाता । त्रिविधा । कर्मचोदना । करणम् । कर्म । कर्त्ता । इति । त्रिविधः । कर्मसंग्रहः ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन ज्ञान ज्ञेय परिज्ञाता यहतीनों कर्मकेप्रवर्तकहैं तथा करण कर्म कर्ता यह तीनों कर्मकाआश्रयहैं ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसनैं वस्तुकायथार्थस्वरूप प्रकाशमानकरीताहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ अर्थात् प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै जन्य जो घटादिकविषयोंका प्रकाशरूपक्रियाहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और तिसज्ञानरूपक्रियाकेकर्मभूत जेघटादिकपदार्थहैं तिनोंकानाम ज्ञेयहै ॥ और तिसज्ञानरूपक्रियाकाआश्रयभूत तथाअंतःकरणरूपउपाधिकरिकै परिकल्पित ऐसाजो भोक्ताहै ताकानाम परिज्ञाताहै ॥ यह ज्ञान ज्ञेय परिज्ञाता समुच्चयभावकूंप्राप्तहोइकैहीं इष्ट अनिष्टरूपसर्वकर्मोंकाआरंभकरेहैं ॥ इनतीनोंकेसमुच्चयतैंविना किसीभीकर्मकाआरंभहोवैनहीं ॥ काहेतैं ज्ञेयके तथा ज्ञाताके विद्यमानहुएभी ज्ञानकेअभावहुए इसपुरुषकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं प्रवृत्तिविषे तिसज्ञानकूं अवश्यहेतु मान्याचाहिये ॥ और ज्ञानके तथाज्ञाताके विद्यमानहुएभी देशकालकरिकैज्ञेयके व्यवहितहुए इसपुरुषकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तिसप्रवृत्तिविषे ज्ञेयकूंभी अवश्यहेतुमान्याचाहिये ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे संस्काररूप ज्ञानज्ञेयकेविद्यमानहुएभी ज्ञाताकेअभावतैं इसपुरुषकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तिसप्रवृत्तिविषे परिज्ञाताकूंभी अवश्यहेतुमान्याचाहिये ॥ यातैं ज्ञान ज्ञेय परिज्ञाता

यहतीनों परस्पर समुच्चयभावकूंप्राप्तहोइकैहीं सर्वकर्मोंकेआरंभकहोवैहैं ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहेहै (त्रिविधाकर्मचोदनाइति) ईहां चोदनानाम प्रवर्त्तककाहै ॥ अर्थात् ज्ञान ज्ञेय परिज्ञाता यहसमुच्चितहुएतीनोंहीं कर्मकेप्रवर्त्तकहैं ॥ यद्यपि पूर्वमीमांसाविषे क्रियाविषेप्रवर्त्तकवचनकूंहीं चोदनाकह्याहै ॥ तथापि ईहां ज्ञानादिकोंविषे वचनरूपतासंभवतीनहीं ॥ यातैं वचनपणेकापरित्यागकरिकै क्रियाकेप्रवर्तकमात्रविषे ईहां चोदनाशब्दकीलक्षणाकरणी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ अनात्मपदार्थोंविषेहीं प्रेरणीयत्वहै तथा प्रेरकत्वहै ॥ असंगआत्माविषे सोप्रेरणीयत्व तथाप्रेरकत्व हैनहीं इति ॥ इतनैंकरिकै (ज्ञानंज्ञेयंपरिज्ञातात्रिविधाकर्मचोदना) इसपूर्वार्द्धकाअर्थ कथनकऱ्या ॥ अब (करणंकर्मकर्त्तेतित्रिविधःकर्मसंग्रहः) इसउत्तरार्द्धकाअर्थ वर्णनकरेहैं ॥ तहां जिसकेव्यापारतैंअनंतर क्रियाकीसिद्धिहोवैहै ताकानाम करणहै ॥ सोकरण बाह्य अंतर भेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां श्रोत्रादिकइंद्रियतौं बाह्यकरणहै ॥ और मनबुद्धिआदिक अंतरकरणहै ॥ और कर्त्तापुरुषकूं क्रियाकरिकै प्राप्तहोणेकूंइष्टजोकारकहै ताकानाम कर्महै ॥ सोकर्म उत्पाद्य आप्य संस्कार्य विकार्य्य इसभेदकरिकै च्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां जोवस्तु उत्पत्तिकेयोग्यहोवैहै ताकूं उत्पाद्यकहेहैं ॥ अथवा जोवस्तु पूर्वनहोइकै पश्चात् उत्पन्नहोवै ताकूं उत्पाद्यकहेहैं ॥ और जोवस्तु पूर्वसिद्धहुआहीं प्राप्तहोवैहै ताकूं आप्यकहेहैं ॥ और गुणाधानमलापकर्षरूप संस्कारकेयोग्यजो वस्तुहै ताकूं संस्कार्यकहेहैं ॥ और पूर्वअवस्थाकापरित्यागकरिकै अवस्थांतरकीजाप्राप्तिहै ताकानाम विकारहै ॥ ताविकारकूं जोवस्तुप्राप्तहोवै ताकूं विकार्य कहेहैं इति ॥ और जो इतरकारकोंकरिकैअप्रयोज्यहोवै तथासकलकारकोंकाप्रयोजकहोवै ताकानाम कर्त्ताहै ॥ सोकर्त्ता ईहां चित्अचित्कीग्रंथिरूपलेणा ॥ यह करण कर्म कर्त्ता तीनोंहीं परस्परसमुच्चयभावकूंप्राप्तहोइकै कर्मसंग्रहहैं ॥ अर्थात् कर्मोंकाआश्रयरूपहैं ॥ तहां (करणंकर्मकर्त्तेति) इसवचनकेअंतविषे स्थितजो इति यहशब्दहै ॥ तिसइतिशब्दतैं संप्रदान अपादान अधिकरण इनतीनकारकोंकाभी करणादिकतीनकारकोंविषेहींअंतरभाव ग्रहणकरणा ॥ तहां सम्यक्श्रेयबुद्धिकरिकैजिसकेताई वस्तु दईजावैहै ताकूं संप्रदानकहेहैं ॥ जैसे वेदवेत्ताब्राह्मणकेताई गौकूं देताहै ॥ ईहां वेदवेत्ताब्राह्मण संप्रदानकारकहै ॥ और संयोगपूर्वकविभागविषेजोअवधिहै ताकूं अपादानकहेहैं ॥ जैसे पर्वततैंश्रीगंगाजी उतरतीहै ॥ ईहां पर्वत अपादानकारकहै ॥ आधारकानाम अधिकरणहै इति ॥ इसप्रकारके कर्त्ता कर्म करण संप्रदान अपादान अधिकरण यहषट्कारक व्याकरणविषेप्रसिद्धहैं ॥ तहां संप्रदान अपादान अधिकरण इनतीन कारकोंका कर्त्तादिकोविषेअंतर्भावकरिकै श्रीभगवान्नैं ईहां कर्त्ता कर्म करण यहतीनप्रकारकेकारक कथनकरेहैं ॥ इसप्रकार त्रिविधभावकूंप्राप्तहुआ सो कारकषट्कहीं सर्वक्रियाका आश्रयहै ॥ कूटस्थआत्मा किसीभीक्रियाकाआश्रय नहींहैं इति ॥ यातैं इसश्लोककरिकै यहभावार्थसिद्धभया ॥ जेजे कर्मकेप्रेरक

होवैहैं तथाजेजे कर्मकेआश्रयहोवैहैं ॥ तेसर्व कारकरूपहींहोवैहैं तथात्रिगुणात्मकहींहोवैहैं ॥ और यहआत्मादेवतौं कारकभावतैंरहितहैं तथातीनगुणोंतैं भी रहितहै ॥ यातैंयहआत्मादेव सर्वकर्मोंकेस्पर्शतैंरहितहै इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे ज्ञानज्ञेय परिज्ञाता तथा करणकर्म कर्त्तायहदोत्रिक कथनकऱ्ये ॥ अबतीनदोनोंत्रिकोंविषे त्रिगुणरूपता अवश्यकरिकैकहणे योग्यहैं ॥ यातैं श्रीभगवान् तिनदोनोंत्रिकोंकूं संक्षेपतैंकथनकरिकै तिनदोनोंत्रिकोंविषे त्रिगुणरूपताकीप्रतिज्ञाकरेहै ॥

(मू० श्लो०) ज्ञानंकर्मचकर्त्ताचत्रिधैवगुणभेदतः ॥ प्रोच्यतेगुणसंख्यानेयथावच्छृणुतान्यपि ॥ १९ ॥ ज्ञानं । कर्म । च । कर्त्ता । च । त्रिधा । एव । गुणभेदतः । प्रोच्यते । गुणसंख्याने । यथावत् । शृणु । तानि । अपि ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सांख्यशास्त्रविषे ज्ञान तथा कर्म तथा कर्त्ता सत्त्वादिकतीनगुणोंकेभेदतैं तीनप्रकारका हीं कथनकऱ्याहै तिनज्ञानादिकोंकूं तथातिनोंकेभेदोंकूं तूं यथावत् श्रवणकर ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां (ज्ञानंज्ञेयंपरिज्ञाता) इसपूर्वउक्तवचनविषे कथनकऱ्याजो प्रत्यक्षादिकप्रमाणजन्य वस्तुकाप्रकाशरूपअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानहै ॥ सोज्ञानहीं ईहां ज्ञानशब्दकरिकैग्रहणकरणा ॥ और वस्तुविषे जोज्ञेयपणाहोवैहै ॥ सो ज्ञानरूपउपाधिकृतहोवैहै ॥ ज्ञानतैंविना ज्ञेयपणाहोवैनहीं ॥ यातैंपूर्वउक्त ज्ञेयका इसज्ञानविषेहीं अंतर्भावजानणा ॥ और ईहां कर्मशब्दकरिकै यज्ञादिरूपक्रियाकाग्रहणकरणा ॥ जायज्ञादिरूपक्रिया (त्रिविधःकर्मसंग्रहः) इसवचनविषे पूर्वकर्मशब्दकरिकैकथनकरीहै ॥ और (ज्ञानंकर्मच) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ तिस चकारतैं पूर्वउक्त कर्म करण इनदोनौंकारकोंकाभी इसक्रियाविषे हींअंतर्भाव जानणा ॥ काहेतैं वस्तुविषेजोकारकपणाहोवैहै ॥ सोक्रियारूपउपाधिकृतहोवैहै ॥ क्रियातैंविना कारकपणाहोवैनहीं ॥ यातैं कर्म करण इनदोनोंकारकोंका तिसक्रियाविषेअंतर्भाव युक्तहींहै ॥ और पूर्वश्लोकविषे (करणंकर्मकर्त्तेति) इसवचनविषे कथनकऱ्याजो क्रियाकाउत्पादक कर्त्ताहै ॥ तिसीहींकर्त्ताका ईहां कर्त्ताशब्दकरिकैग्रहणकरणा ॥ और (कर्त्ताच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ तिसचकारतैं पूर्वकथनकऱ्येहुए परिज्ञाताका इसकर्त्ताविषेहींअंतर्भाव जानणा ॥ यद्यपि करण कर्म इनदोनोंकारकोंकीन्यांई कर्त्ताविषेभी सोक्रियाउपाधिकपणा तुल्यहींहै ॥ यातैं करण कर्म इनदोनौंकारकोंकीन्यांई कर्त्ताकाभीईहां पृथक्कथन नहींकऱ्याचाहिये ॥ तथापि कर्त्ताविषे जोपृथक् त्रिगुणतारूपकाकथनहै ॥ सो कुतार्किकपुरुषोंकेभ्रमकरिकैकल्पितआत्मपणेकेनिवृत्तकरणेवास्तेंहै ॥ जिस कारणतैं तेकुतार्किकपुरुष कर्त्ताकूंहींआत्मामानेहैं ॥ ऐसा ज्ञान तथाकर्म तथाकर्त्ता गुणसंख्यानविषे सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकेभेदतैं सात्त्विक राजस तामस

यहतीनप्रकारका कथनकऱ्याहै ॥ तहां सत्त्व रज तम यहतीनोंगुण कार्यकेभेदकरिकै प्रतिपादनकरीयें जिसशास्त्रविषे ताशास्त्रकानाम गुणसंख्यानहै ॥ ऐसा कपिलमुनिकृतसांख्यशास्त्रहै ॥ ऐसेसांख्यशास्त्रविषे तेज्ञानकर्मकर्त्तातीनों सत्त्वादिकगुणोंकेभेदकरिकै सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकेहीं कथनकरेहैं ॥ ईहां (त्रिधैव) इसवचनविषेस्थितजो एव यहशब्दहै ॥ सोएवशब्द सात्त्विक राजस तामस इनतीनप्रकारोंतैंभिन्न चतुर्थप्रकारकेनिवृत्तकरणेवासतैहै ॥ यद्यपि कपिलमुनिरचितसांख्यशास्त्र परमार्थब्रह्मकीएकताविषे प्रमाणभूतनहींहै ॥ जिसकारणतैं सांख्यशास्त्रविषे नानाआत्माहींअंगीकारकऱ्येहैं ॥ तथापि सोसांख्यशास्त्र अपरमार्थरूपसत्त्वादिकगुणोंके गौणभेदकेनिरूपणविषे व्यावहारिकप्रमाणभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसकारणतैं वक्ष्यमाणअर्थकीस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (गुणसंख्यानेप्रोच्यते) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ अर्थात् यहज्ञानादिकोंकात्रिविधपणा केवल इसगीताशास्त्रविषेहीं प्रसिद्धनहींहै ॥ किंतु कपिलमुनिरचित सांख्यशास्त्र विषेभी प्रसिद्धहै ॥ इसप्रकारतैं वक्ष्यमाणअर्थकीस्तुतिकरणेवासतैं श्रीभगवान्नैं सोवचन कथनकऱ्याहै इति ॥ हेअर्जुन तिनज्ञानादिकतीनोंकूं तथासत्त्वादिकगुणकृत तिनज्ञानादिकोंकेभेदकूं तूं यथावत् श्रवणकर ॥ अर्थात् शास्त्रविषे जिसप्रकारका तिनोंकास्वरूप कथनकऱ्याहै ॥ तिसीप्रकारके तिनोंकेस्वरूपकूं श्रवणकरणेवासतै तूं सावधानहोउ इति ॥ यद्यपि पूर्व चतुर्दशेअध्यायविषे तथासप्तदशेअध्यायविषेभी श्रीभगवान् सत्वादिकगुणोंकूं तथातिनगुणोंकृत सात्विकादिकभेदकूं कथनकरिआयाहै ॥ यातैं पुनःईहां तिनगुणोंके तथातिनगुणोंकृतभेदके कथनकरणेतैं पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथापि तिनवचनोंकी इसप्रकारतैंव्यवस्थाकरणेकरिकै पुनरुक्तिदोषकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तहां पूर्वचतुर्दशेअध्यायविषेतौं (तत्रसत्वंनिर्मलत्वात्) इत्यादिकवचनोंकरिकै सत्वादिकगुणोंविषे बंधकेहेतुपणेकाप्रकार निरूपणकऱ्याथा ॥ गुणातीतपुरुषके जीवन्मुक्तपणेकेनिरूपणकरणेवासतै ॥ और सप्तदशेअध्यायविषेतौं (यजंतेसात्विकादेवान्) इत्यादिकवचनोंकरिकै सत्वादिकगुणकृत त्रिविधस्वभावकेनिरूपणकरिकै यहअर्थ सिद्धकऱ्याथा ॥ इसअधिकारीपुरुषनैं असुररूपराजसतामसस्वभावकापरित्यागकरिकै सात्विकआहारादिकोंकेसेवनकरिकै देवरूपसात्विकस्वभावहीं संपादनकरणा इति ॥ और इसअष्टादशेअध्यायविषेतौं स्वभावतैं गुणातीतअसंगआत्माका क्रिया कारक फल इनतीनोंकेसाथि किंचित्मात्रभीसंबंधनहींहै इसअर्थकेबोधनकरणेवासतैं तिनक्रियाकारकादिकसर्वोंकूं त्रिगुणरूपताहींहै इसतैंभिन्नदूसराकोईस्वरूप तिनक्रियाकारकादिकोंकाहैनहीं जिसकरिकै इनक्रियाकारकादिकोंकूं आत्माकासंबंधीपणाहोवै इसअर्थकूंकथनकऱ्याहै ॥ इतनी तीनोंअध्यायोंकेवचनोंविषेविशेषताहै ॥ यातैं ईहांपुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे ज्ञान कर्म कर्त्ता इनती

नोंका सात्विक राजस तामस यहत्रिविधपणा ज्ञातव्यरूपकरिकै प्रतिज्ञाकऱ्या ॥ अब प्रथम ज्ञानकेत्रिविधपणेकूं तीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् निरूपण करेहै ॥ ताकेविषेभी प्रथम अद्वैतआत्मवादीयोंके सात्विकज्ञानकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वभूतेषुयेनैकंभावमव्ययमीक्षते ॥ अविभक्तंविभक्तेषुतज्ज्ञानंविद्धिसात्त्विकम् ॥ २० ॥ सर्वभूतेषु । येन । एकं । भावम् । अव्ययम् । ईक्षते । अविभक्तं । विभक्तेषु । तत् । ज्ञानं । विद्धि । सात्त्विकम् ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन परस्परभेदवाले सर्वभूतोंविषे सर्वत्रव्यापक एक अव्यय सत्तारूपभावकूं जिसज्ञानकरिकै यहपुरुष साक्षात्कारकरेहै तिस ज्ञानकूं तूं सात्त्विक जान ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अव्याकृत हिरण्यगर्भ विराट् यहहैंनामजिनोंके ऐसेजे बीज सूक्ष्म स्थूल रूप समष्टिव्यष्टिरूप सर्वभूतहैं ॥ जेसर्वभूत विभक्तहैं ॥ अर्थात् भिन्नभिन्ननामरूपकरिकै परस्पर व्यावर्त्यहैं ॥ तथा नानारसहैं ॥ ऐसेउत्पत्तिनाशवान् दृश्यवर्गरूप सर्वभूतोंविषे सत्तारूपभावकूं जिसवेदांतवाक्योंकेविचारजन्य अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानकरिकै यहअधिकारीपुरुष साक्षात्कारकरेहै ॥ अर्थात् तिनसर्वभूतोंविषे परमार्थसत्तारूप स्वप्रकाशआनंदआत्माकूं जिसज्ञानकरिकै यहअधिकारीपुरुष साक्षात्कारकरेहै ॥ कैसाहै सोसत्तारूपभाव एकहै ॥ अर्थात् सजातीयभेदविजातीयभेद इनतीनभेदोंतैंरहितहोणेतैं अद्वितीयरूपहै ॥ पुनःकैसाहैसो सत्तारूपभाव अव्ययहै ॥ अर्थात् उत्पत्तिविनाशादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै तथाअदृश्यहै ॥ पुनःकैसाहैसोसत्तारूपभाव अविभक्तहै ॥ अर्थात् सर्व जडपदार्थोंकाअधिष्ठानरूपकरिकै तथासर्वकल्पितपदार्थोंकेबाधकाअवधिरूपकरिकै सर्वत्र व्यापकहै ॥ ऐसे सर्वत्रव्यापकअद्वितीयआत्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष जिसवेदांतवाक्यजन्यज्ञानकरिकै साक्षात्कारकरेहै ॥ तिस मिथ्याप्रपंचकेबाधक आत्मज्ञानकूं तूं सात्विकज्ञान जान ॥ और इसअद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारतैं भिन्न जितनाकीद्वैतदर्शनहै ॥ सोसर्वहीं द्वैतदर्शन राजसहोणेतैं तथातामसहोणेतैं संसारकाहींकारणहै ॥ यातैं तिसद्वैतदर्शनविषे कदाचित्भी सात्विकपणा होवैनहीं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ अब राजसज्ञानकास्वरूप वर्णनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) पृथक्त्वेनतुयज्ज्ञानंनानाभावान्पृथग्विधान् ॥ वेत्तिसर्वेषुभूतेषुतज्ज्ञानंविद्धिराजसम् ॥ २१ ॥ पृथक्त्वेन । तु । यत् । ज्ञानम् । नानाभावान् । पृथग्विधान् । वेत्ति । सर्वेषु । भूतेषु । तत् । ज्ञानम् । विद्धि । राजसम् ॥ २१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन पुनः परस्परभेदकरिकैस्थितहुए देहादिकसर्व भूतोंविषे परस्परविलक्षण नानाआत्मावोंकूं जो ज्ञान जानेहै तिस ज्ञानकूं तूं राजस जान ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (पृथक्त्वेनतु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सो तुशब्द पूर्वश्लोकउक्तसात्विकज्ञानतैं इसराजसज्ञानविषे विलक्षणताकेबोधनकरणे वासतेहै ॥ साविलक्षणता कहेहै ॥ हेअर्जुन परस्परभेदकरिकैस्थितहुए जेदेहादिकसर्वभूतहैं ॥ तिनसर्वभूतोंविषे जोज्ञान पृथक्विधनानाभावोंकूंदेखेहै ॥ अर्थात् देहदेहविषे सुखित्वदुःखित्वादिरूपकरिकै परस्परविलक्षण भिन्नभिन्नआत्मावोंकूं जोज्ञान देखेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे कोईप्राणी सुखीहै कोईप्राणी दुःखीहै कोईप्राणी पंडितहै कोईप्राणी मूर्खहै इत्यादिक अनेकप्रकारकीविलक्षणता देखणेविषे आवैहै ॥ जोकदाचित् सर्वदेहोंविषे एकहींआत्माहोवै ॥ तौं एकप्राणीकेसुखीहुए सर्वहींप्राणी सुखीहुए चाहियें ॥ तथा एकप्राणीकेदुःखीहुए सर्वहींप्राणी दुःखीहुएचाहियें ॥ सोऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं सर्व देहोंविषे एकआत्मानहींहै ॥ किंतु देहदेहविषेभिन्नभिन्नआत्माहै ॥ इसप्रकारकीकुतर्कोंकरिकैउत्पन्नहुआ जोज्ञान देहदेहविषे भिन्नभिन्नआत्माकूंदेखेहै ॥ तिसज्ञानकूं तूं राजसज्ञान जान ॥ ईहां यद्यपि (यज्ज्ञानंवेत्ति) इसवचनकेस्थानविषे (येनज्ञानेनवेत्ति) इसप्रकारकाहींवचन कहणायोग्यथा ॥ तथापि (यज्ज्ञानंवेत्ति) यहजोवचन श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ सो तिसज्ञानरूपकरणविषे कर्तृत्वकेउपचारतैं कथनकऱ्याहै ॥ जैसे (एधांसिपचंति) यहवचन पाकके करणरूप काष्ठोंविषे कर्तृत्वके उपचारतैं कह्याजावैहै ॥ अथवा सोज्ञान कर्त्तारूपअहंकारका वृत्तिरूपहै ॥ यातैं कर्त्तारूपअहंकारका तिसवृत्तिरूपज्ञानकेसाथिअभेद मानिकै श्रीभगवान्नैं (यज्ज्ञानंवेत्ति) यहवचनकऱ्याहै इति ॥ और (यज्ज्ञानंवेत्ति) इसवचनविषे पूर्व ज्ञानपदकथनकरिकै (तज्ज्ञानं) इसवचनविषे जोपुनः ज्ञानपद कथनकऱ्याहै ॥ सोज्ञानपद आत्माकेभेदज्ञानकूं तथा तिनअनात्माकेभेदज्ञानकूं जनावैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ देहदेहविषे आत्मावोंका परस्परभेद ॥ १ ॥ तथा तिनआत्मावोंका ईश्वरतैंभेद ॥ २ ॥ तथा तिनआत्मावोंतैं अचेतनवर्गकाभेद ॥ ३ ॥ तथा ईश्वरतैं अचेतनवर्गकाभेद ॥ ४ ॥ तथा तिस अचेतन वर्गका परस्परभेद ॥ ५ ॥ इसप्रकारके अनौपाधिकपंचभेदोंकूं विषयकरणेहारा जोकुतार्किकपुरुषोंकाज्ञानहै ॥ सोभेदज्ञान राजसहींजानणा इति ॥ २१ ॥

॥ ❀ ॥ अब तामसज्ञानकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यत्तुकृत्स्नवदेकस्मिन्कार्येसक्तमहैतुकम् ॥ अतत्त्वार्थवदल्पंचतत्तामसमुदाहृतम् ॥२२॥ यत् । तु । कृत्स्नवत् । एकस्मिन् । कार्ये । सक्तम् । अहैतुकम् । अतत्त्वार्थवत् । अल्पम् । च । तत् । तामसम् । उदाहृतम् ॥ २२ ॥ (इतिपद०) ॥

हेअर्जुन पुनः जोज्ञान किसीएक कार्यविषे परिपूर्णअर्थकीन्यांई अभिनिवेशवालाहै तथायुक्तितैंरहितहै तथापरमार्थआलंबनतैंर हितहै तथा अल्पहै सोज्ञान शिष्टपुरुषोंनैं तामस कह्याहै ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (यत्तु) इसवचनविषेस्थितजो तु इहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वश्लोकउक्तराजसज्ञानतैं इसतामसज्ञानविषे विलक्षणताकेबोधनकरणेवासतैहै ॥ साविलक्षणता दिखावैंहैं ॥ आकाशादिकपंचभूतोंके बहुतकार्योंकेविद्यमानहुएभी ॥ तिनसर्वकार्योंकेमध्यविषे किसीएक देहरूपकार्यविषे अथवा प्रतिमादिरूप कार्यविषे जोज्ञान परिपूर्णअर्थकीन्यांई सक्तहै ॥ अर्थात् इतनामात्रहीं आत्माहै तथाइतनामात्रहीं ईश्वरहै इसतैंपरे कोईआत्मानहींहै तथाइसतैंपरे कोईईश्वर नहींहै इसप्रकारकेअभिनिवेशकरिकै जोज्ञान किसीदेहरूपएककार्यविषे अथवा किसीप्रतिमादिरूपएककार्यविषेहीं संलग्नहुआहै ॥ जैसे आत्मा सावयवहै तथादेह परिमाणहै याप्रकारका दिगंबरोंकाज्ञानहै ॥ तथा जैसे यहस्थूलदेहहीं आत्माहै इसप्रकारका चार्वाकोंकाज्ञानहै ॥ तथा जैसें पाषाणकाष्ठादिरूप यहप्रतिमामात्रहीं ईश्वरहै इसतैंपरे दूसराकोईईश्वरहैनहीं इसप्रकारका शास्त्रसंस्कारोंतैंरहितमूढपुरुषोंकाज्ञानहै ॥ तथा जोज्ञान अहैतुकहै ॥ क्या उपपत्तिरूपहेतुतैंरहितहै ॥ अर्थात् देहप्रतिमातैंभिन्न दूसरे जितनैंकीभूतोंकेकार्यहैं॥ तिनसर्वकार्योंविषे आत्मपणेकेअभावहुए तथाईश्वरपणेकेअभावहुए इसभूतोंकेकार्यरूपदेहविषे सोआत्मपणा कैसेसंभवैंगा तथाइसभूतोंकेकार्यरूपप्रतिमाविषे सोईश्वरपणा कैसेसंभवैंगा किंतुनहींसंभवैंगा ॥ इसप्रकारकेविचारतैं जोज्ञान रहितहै ॥ इसीकारणतैंहीं जोज्ञान अतत्त्वार्थवत्‌है ॥ तहां जोअर्थ प्रमाणांतरकरिकैबाधितनहींहोवैहै ताअर्थकानाम तत्त्वार्थहै ॥ सोतत्त्वार्थ जिसज्ञानका विषयनहींहोवै ताज्ञानकानाम अतत्त्वार्थवत्‌है ॥ अर्थात् जोज्ञान अयथार्थअर्थविषयकहै ॥ तथा जोज्ञान अल्पहै ॥ अर्थात् आत्माकेनित्यत्वविभुत्वकूं नहींविषयकरणेतैं जोज्ञान अत्यंत अल्पहै ॥ इसप्रकारकाजो अनित्यपरिच्छिन्नदेहादिकोंविषेआत्मत्वअभिमानरूप चार्वाकादिकोंकाज्ञानहै ॥ जोज्ञान आत्मा तथाईश्वर दोनों नित्यहैं तथाविभुहैं तथादेहादिकसंघाततैंभिन्नहैं इसप्रकारके तार्किकपुरुषोंकेज्ञानतैंभी अत्यंतविलक्षणहै ॥ सोज्ञान बुद्धिमान्‌पुरुषोंनैं तामसज्ञान कह्याहै इति ॥ २२ ॥ ❁ ॥ तहां एकअद्वितीयआत्माकूंविषयकरणेहारा जो औपनिषदपुरुषोंका सात्त्विकज्ञानहै ॥ सोअद्वितीयआत्मविषयक सात्त्विकज्ञानतौ मुमुक्षुजनोंनैं ग्रहणकरणे योग्यहै ॥ और नित्य तथाविभु तथापरस्परभिन्न ऐसे अनेकआत्मावोंकूं विषयकरणेहारा जो द्वैतदर्शीतार्किकपुरुषोंका राजसज्ञानहै ॥ तथा अनित्य परिच्छिन्न देहादिरूपआत्माकूं विषयकरणेहारा जोचार्वाकादिकोंका तामसज्ञानहै ॥ तेराजसतामसदोनोंज्ञान मुमुक्षुजनोंनैं परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ यहअर्थ (सर्वभूतेषुयेनैकं) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै पूर्व कथनकऱ्या ॥ अब (नियतंसंगरहितम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिकै कर्मकेत्रिविधपणेकूं कथनकरेहैं ॥ तहां प्रथम सात्त्विककर्मकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) नियतंसंगरहितमरागद्वेषतःकृतम् ॥ अफलप्रेप्सुनाकर्मयत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥ २३ ॥ नियतम् । संगरहितम् । अराग
द्वेषतः कृतम् । अफलप्रेप्सुना । कर्म । यत् । तत् । सात्त्विकम् । उच्यते ॥ २३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन फलकीइच्छातैंरहित
पुरुषनैं संगतैं रहित तथाराग द्वेषतैं रहित जो नित्य कर्म करीताहै सोकर्म सात्विक कह्याजावैहै ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोकर्म नियतहै ॥ अर्थात् तिसकर्मके जितनैंकी द्रव्य देवता मंत्र आदिकअंगहैं ॥ तिनसर्वअंगोंकीपरिपूर्णताकरणेविषेअसमर्थपुरुषों कूंभी जोकर्म आपणेफलकीप्राप्ति अवश्यकरिकैकरेहै ॥ ऐसा अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्महै ॥ तथा जोकर्म संगरहितहै ॥ तहां मैंहीं महान्याज्ञिकहूं हमारेसमानदूसराकोईहैनहीं इत्यादिकअभिमानरूप तथाअहंकाररहैनामजिसका ऐसाजो राजसगर्वविशेषहै ताकानाम संगहै ॥ तिससंगतैं जोकर्म रहितहै ॥ अर्थात् जोकर्म इसप्रकारकेअभिमानपूर्वक नहींकऱ्याजावैहै ॥ तहां जितनैंकालपर्यंत अज्ञानहै ॥ तितनैं कालपर्यंत कर्तृत्वभोक्तृत्वकाप्रवर्त्तक अहंकार सात्विकपुरुषविषेभीरहेहै ॥ और तिसअज्ञानतैं तथा अहंकारतैं रहित जोतत्त्ववेत्तापुरुषहै ॥ तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूंतौं कर्मोंकाअधिकारहींनहींहै ॥ यहवार्त्ता पूर्व अनेकवार कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं सात्विकपुरुषविषे कर्तृत्वभोक्तृत्वकेप्रवर्त्तक सामान्यअहंकारकेविद्यमानहुएभी सोराजसगर्वरूपविशेष अहंकार रहतानहीं इति ॥ तथा जोकर्म अरागद्वेषतैंकऱ्याजावैहै ॥ तहां इसकर्मकरिकै मैं राजसन्मान आदिकोंकूंप्राप्त होवौंगा इसप्रकारकेअभिप्रायकानाम रागहै ॥ और इसकर्मकरिकै मैं शत्रुकूंपराजयकरूंगा इसप्रकारकेअभिप्रायकानाम द्वेषहै ॥ तिसरागद्वेषदोनोंकरिकै जोकर्म नहींकऱ्याहुआहै ॥ इसप्रकारका जो यज्ञदानहोमादिरूपनित्यकर्म फलकीइच्छातैंरहितनिष्कामपुरुषनैं स्वधर्मजानिकै करीताहै ॥ सो यज्ञदानहोमादिरूपनित्यकर्म सात्त्विककर्म कह्याजावैहै इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ अब राजसकर्मकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यत्तुकामेप्सुनाकर्मसाहंकारेणवापुनः ॥ क्रियतेबहुलायासंतद्राजसमुदाहृतम् ॥ २४ ॥ यत् । तु । कामेप्सुना ।
कर्म । साहंकारेण । वा । पुनः । क्रियते । बहुलायासम् । तत् । राजसम् । उदाहृतम् ॥ २४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन
पुनः सकामपुरुषनैं तथा अहंकारयुक्तपुरुषनैं अनियत तथाबहुतक्लेशकीप्राप्तिकरणेहारा जो काम्यकर्म करीताहै सोकाम्यकर्म
शिष्टपुरुषोंनैं राजसकर्म कह्याहै ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां (यत्तु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्तसात्त्विककर्मतैं इसराजसकर्मविषे विलक्षणताकेबोधनकरणेवासतैहै ॥ सावि

लक्षणता दिखावैहै ॥ हेअर्जुन स्वर्गादिकफलोंकीइच्छावान् सकामपुरुषनैं तथापूर्वउक्त संगरूपगर्वयुक्तपुरुषनैं जोकाम्यकर्म करीताहै ॥ जोकर्म बहुलायासहै ॥ अर्थात् सर्वअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वककन्याहुआहीं काम्यकर्म फलकीप्राप्तिकरेहै ॥ किंचित्मात्रअंगकीविगुणताकेहुए काम्यकर्म फलकाहेतुहोवैनहीं ॥ यातैं सर्वअंगोंकीपरिपूर्णताकरणेकरिकै जोकाम्यकर्म कर्त्तापुरुषकूं बहुतक्लेशकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ ईहां (वापुनः) इसवचनविषेस्थितजो पुनः यहशब्दहै ॥ सोपुनःशब्द इसराजसकर्मविषे अनियतपणेकूंबोधनकरेहै ॥ काहेतैं जैसे नित्यकर्मविषे सर्वदा कर्त्तव्यताहोवैहै ॥ तैसे इसकाम्यकर्मविषे सर्वदा कर्त्तव्यता होवैनहीं ॥ किंतु जब पर्यंत इसपुरुषविषे फलकीकामनारहेहै ॥ तबपर्यंतहीं तिसकाम्यकर्मकीकर्त्तव्यतारहेहै ॥ कामनाकेनिवृत्तहुएतैं अनंतर तिसकाम्यकर्मकीकर्त्तव्यतारहैनहीं ॥ यातैं तिसकाम्यकर्मविषे सोअनियतपणा युक्तहींहै ॥ इसप्रकारका काम्यकर्म शिष्टपुरुषोंनैं राजसकर्म कह्याहै ॥ ईहां सर्वविशेषणोंकरिकै इसराजसकर्मविषे पूर्वश्लोकउक्तसात्त्विककर्मके सर्वविशेषणोंतैं विपरीतपणा कथनकन्याहै इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ अब तामसकर्मकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) अनुबंधंक्षयंहिंसामनपेक्ष्यचपौरुषम् ॥ मोहादारभ्यतेकर्मयत्तत्तामसमुच्यते ॥ २५ ॥ अनुबंधम् । क्षयम् । हिंसाम् । अनपेक्ष्य । च । पौरुषम् । मोहात् । आरभ्यते । कर्म । यत् । तत् । तामसम् । उच्यते ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः अनुबंधकूं तथाक्षयकूं तथाहिंसाकूं तथापौरुषकूं नविचारिकैकेवल अविवेकतैं जो कर्म आरंभकरीताहै सोकर्म तामसकर्म कह्याजावैहै ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन आगेहोणेहाराजो अशुभफलहै ताकानाम अनुबंधहै ॥ और शरीरकेसामर्थ्यका तथाधनका तथासेनाका जो विनाशहै ताकानाम क्षयहै ॥ और प्राणीयोंकी जापीडाहै ताकानाम हिंसाहै ॥ और आपणाजोसामर्थ्यहै ताकानाम पौरुषहै ॥ ऐसे अनुबंधकूं तथाक्षयकूं तथाहिंसाकूं तथापौरुषकूं कर्मके प्रारंभतैंपूर्व नविचारिकै केवल अविवेकरूपमोहकेवशतैं जोकर्म आरंभकरीताहै ॥ सोकर्म तामसकर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे इसदुर्योधननैं तिनअनुबंधादिकन्या रोंकानहींविचारकरिकै केवल अविवेकरूपमोहतैं इसयुद्धरूपकर्मकाआरंभकन्याहै इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ तहां (नियतंसंगरहितम्) इत्यादिकतीनश्लोकों करिकै पूर्व सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाकर्म निरूपणकन्या ॥ अब (मुक्तसंगः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिकै तीनप्रकारकेकर्त्ताका कथनकरेहै ॥ तहां प्रथम सात्त्विककर्त्ताकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) मुक्तसंगोऽनहंवादीधृत्युत्साहसमन्वितः ॥ सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारःकर्त्तासात्त्विकउच्यते ॥ २६ ॥ मुक्तसंगः ।

अनहंवादी । धृत्युत्साहसमन्वितः । सिद्ध्यसिद्ध्योः । निर्विकारः । कर्त्ता । सात्त्विकः । उच्यते ॥ २६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन फलकीइच्छातैंरहित तथाअहंवादी तथाधृतिउत्साहदोनोंकरिकैयुक्त तथासिद्धिअसिद्धिदोनोंविषे निर्विकार ऐसाकर्त्ता
सात्त्विककर्त्ता कह्याजावैहै ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष मुक्तसंगहै ॥ अर्थात् त्यागकरीहैकर्मफलकीइच्छाजिसनैं ॥ तथा जोपुरुष अनहंवादीहै ॥ अर्थात् मैंकर्मकाकर्त्ताहूं इसप्रकारके अभिमानपूर्वकवचनकूं जो नहींउच्चारणकरेहै ॥ अथवा जोपुरुष आपणेगुणोंकीशलाघातैंरहितहै ताकानाम अनहंवादीहै ॥ तथा जोपुरुष धृति उत्साह इनदोनों करिकैयुक्तहै ॥ तहां विघ्नआदिकोंकेप्राप्तहुएभी प्रारंभकऱ्येहुएकर्मकेनहींपरित्यागकाहेतुरूप जाअंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै जाकूं धैर्यकहेहै ताकानाम धृतिहै ॥ और इसकर्मकूं मैं अवश्यकरिकैसिद्धकरूंगा याप्रकारकी जा निश्चयात्मकबुद्धिहै जाबुद्धि उक्तधृतिकाकारणरूपहै ताकानाम उत्साहहै ॥ ऐसे धृति उत्साह दोनोंकरिकै जोपुरुष युक्तहै ॥ तथा जोपुरुष कऱ्येहुएकर्मके फलकीप्राप्तिविषे तथाअप्राप्तिविषे निर्विकारहै ॥ तहां कऱ्येहुएकर्मकेफलकीप्राप्तिहुए जो हर्षहोवैहै ॥ तथा तिसफलकीअप्राप्तिहुए जो शोकहोवैहै ॥ सोहर्षहैकारणजिसका ऐसाजो मुखका विकासपणाहै ॥ तथा सोशोकहैकारणजिसका ऐसाजो मुखकामलिनपणाहै ॥ तिनदोनोंकानाम विकारहै ॥ ताविकारतैं जोपुरुष रहितहै ॥ तथा जोपुरुष केवलशास्त्रप्रमाणकरिकैहीं तिसकर्मविषेप्रवृत्तहुआहै ॥ फलकरिकै अथवा रागकरिकै जोपुरुष तिसकर्मविषे प्रवृत्तहुआनहीं ॥ इसप्रकारका कर्त्तापुरुष सात्त्विककर्त्ता कह्याजावैहै इति ॥ २६ ॥ ❋ ॥ अब राजसकर्त्ताकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) रागीकर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धोहिंसात्मकोऽशुचिः ॥ हर्षशोकान्वितःकर्त्ताराजसःपरिकीर्तितः ॥ २७ ॥ रागी । कर्मफलप्रेप्सुः । लुब्धः । हिंसात्मकः । अशुचिः । हर्षशोकान्वितः । कर्त्ता । राजसः । परिकीर्त्तितः ॥ २७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन जोपुरुष रागवालाहै तथाकर्मकेफलकीइच्छावान्है तथालुब्धहै तथाहिंसास्वभाववालाहै तथा अशुचिहै तथाहर्षशोककरिकैयुक्तहै ऐसाकर्त्ता शिष्टपुरुषोंनैं राजसकर्त्ता कथनकऱ्याहै ॥ २७ ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष रागीहै ॥ अर्थात् कामादिकोंकरिकैयुक्तहैचित्तजिसका ॥ इसीकारणतैंहीं जोपुरुष तिसतिसकर्मकेस्वर्गादिकफलोंकीइच्छावाला है ॥ तथा जोपुरुष लुब्धहै ॥ अर्थात् परायेधनादिकपदार्थोंकीअभिलाषाकरणेहाराहै ॥ अथवा धनवान्हुआभी जोपुरुष धर्मकेवासतै धनकेखरचकरणेमै

असमर्थहै ताकानाम लुब्धहै ॥ तथा जोपुरुष हिंसात्मकहै ॥ तहां आपणेअभिप्रायकूंप्रगटकरिकै जो दूसरेकेजीविकारूपवृत्तिकाछेदनकरणाहै ताकानाम हिंसाहै॥ साहिंसाहैस्वभावजिसका ताकानाम हिंसात्मकहै ॥ और आपणेअभिप्रायकूं नहींप्रगटकरिकै दूसरेकेवृत्तिकाछेदनकरणेहारा पुरुष नैष्कृतिक कह्याजावैहै ॥ इतना हिंसात्मक नैष्कृतिक दोनोंविषे भेदहै ॥ सोनैष्कृतिककर्त्ता अगलेश्लोकविषेकथनकरणाहै इति ॥ तथा जोपुरुष अशुचिहै ॥ अर्थात् शास्त्रउक्त बाह्य अंतर दोप्रकारकेशौचतैंरहितहैं ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिकैशरीरकीशुद्धिकूं बाह्यशौचकहेहैं ॥ और मैत्रीकरुणादिकशुभवासनावोंकरिकै चित्तकूं कामक्रोधादिकोंतैं रहितकरणा याकानाम अंतरशौचहै ॥ तथा जोपुरुष कर्मकेफलकी सिद्धिविषे तथाअसिद्धिविषे हर्षशोककरिकैयुक्तहै ॥ इसप्रकारकाकर्त्ता शिष्टपुरुषोंनैं राजसकर्त्ता कह्याहै इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ अबतामसकर्त्ताकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) अयुक्तःप्राकृतःस्तब्धःशठोनैष्कृतिकोऽलसः ॥ विषादीदीर्घसूत्रीचकर्त्तातामसउच्यते ॥२८॥ अयुक्तः। प्राकृतः। स्तब्धः। शठः। नैष्कृतिकः। अलसः। विषादी। दीर्घसूत्री। च। कर्त्ता। तामसः। उच्यते ॥ २८ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन पुनः जोपुरुष अयुक्तहै तथाप्राकृतहै तथास्तब्धहै तथाशठहै तथानैष्कृतिकहै तथाअलसहै तथाविषादीहै तथा दीर्घसूत्रीहै ऐसाकर्त्ता तामसकर्त्ता कह्याजावैहै ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष अयुक्तहै ॥ अर्थात् सर्वकालविषे विषयोंविषेचित्तकीसंलग्नताकरिकै जोपुरुष करणेयोग्यकर्मविषे चित्तकीसावधानतातैंरहित है ॥ तथा जोपुरुष प्राकृतहै ॥ अर्थात् मूढबालकीन्यांई जोपुरुष शास्त्रसंस्कारतैंरहितबुद्धिवालाहै ॥ तथा जोपुरुष स्तब्धहै ॥ अर्थात् गुरु देवता आदिकोंके आगेभी जोपुरुष नम्रभावतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष शठहै ॥ अर्थात् अन्यपुरुषोंकीवंचनाकरणेवासतैं जोपुरुष अन्यप्रकारतैं अर्थकूं जानताहुआभी अन्यप्रकारतैंहीं ताअर्थका कथनकरेहै ॥ तथा जोपुरुष नैष्कृतिकहै ॥ अर्थात् यहहमारा बहुतउपकारीहै याप्रकारका उपकारित्वभ्रम आपणेविषे दूसरेपुरुषका उत्पन्नकरिकै तिसपुरुषकी जीविकारूपवृत्तिकाछेदनकरिकै जोपुरुष आपणेस्वार्थकीसिद्धिकरणेहाराहै ॥ तथा जोपुरुष अलसहै ॥ अर्थात् अवश्यकरणेयोग्यकर्मविषेभी जोपुरुष नहीं प्रवृत्तहोणेहाराहै ॥ तथा जोपुरुष विषादीहै ॥ अर्थात् असंतुष्टस्वभाववाला होणेतैं जोपुरुष निरंतर अनुशोचनस्वभाववालाहै ॥ तथा जोपुरुष दीर्घसूत्रीहै ॥ अर्थात् निरंतर सहस्रशंकावोंकरिकैयुक्तअंतःकरणवालाहोणेतैं जोपुरुष अत्यंतशिथिलप्रवृत्तिवालाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोकार्य एकदिनविषे करणेयोग्यहै ॥ तिसकार्यकूं एकमासकरिकैभीकारिसकेहैं अथवा नहींभीकारिसकेहैं ॥ इसप्रकारका कर्त्तापुरुष तामसकर्त्ता कह्याजावैहै इति ॥ २८ ॥ ❀

॥ तहांपूर्व ओगनीसवेश्लोकविषे (ज्ञानंकर्म) इत्यादिकवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं ज्ञानकर्म कर्त्ता इनतीनोंके सत्त्वादिकगुणोंकेभेदकरिकै त्रिविधपणेके व्याख्यानकरणेकीप्रतिज्ञाकरीथी ॥ सोतिनज्ञानादिकोंकात्रिविधपणा (सर्वभूतेषुयेनैकं) इत्यादिकनवश्लोकोंकरिकै प्रतिपादनकऱ्या ॥ अब (मुक्तसंगोनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः) इसपूर्व उक्तवचनविषे सूचनकरी जाबुद्धि धृतिहै ॥ तिस बुद्धिधृतिदोनोंके त्रिविधपणेके कथनकी प्रतिज्ञाकूं श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) बुद्धेर्भेदंधृतेश्चैवगुणतस्त्रिविधंशृणु ॥ प्रोच्यमानमशेषेणपृथक्त्वेनधनंजय ॥ २९ ॥ बुद्धेः । भेदं । धृतेः । च । एव । गुणतः । त्रिविधं । शृणु । प्रोच्यमानम् । अशेषेण । पृथक्त्वेन । धनंजय ॥ २९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधनंजय बुद्धिका तथा धृतिका सत्वादिकगुणकरिकै त्रिविध हीं भेद मैंपरमेश्वरनैं तुमारे प्रतिसमग्र भिन्नभिन्नकरिकै कथनकरीताहै तिसकूं तूं श्रवण कर ॥ २९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥हे अर्जुन निश्चयादिरूपवृत्तियोंवालीजाबुद्धिहै।।तथा तिसबुद्धिकीवृत्तिविशेषरूपजाधृतिहै।।तिसबुद्धिकातथातिसधृतिका सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकेभेद करिकैसात्त्विक राजसतामस यहतीनप्रकारकाहींभेदहोवैहै॥सोतीनप्रकारकाभेद आलस्यादिकदोषतैंरहित तथापरमआप्तरूप मैंपरमेश्वरनैं तैंअर्जुनकेप्रति अशेषकरिकै तथा पृथक्पणेकरिकै कथनकरीताहै ॥ अर्थात् समग्ररूपकरिकै तथा यहग्रहणकरणेयोग्यहै यहनहींग्रहणकरणेयोग्यहै याप्रकारकेविवेककरिकै कथनकरीताहै ॥ ऐसे बुद्धिकेतीनप्रकारकेभेदकूं तथाधृतिकेतीनप्रकारकेभेदकूं तूं श्रवणकर ॥ अर्थात् तिसत्रिविधभेदकेश्रवणकरणेकूं तूं सावधानहोउ ॥ तहां (हेधनंजय) इससंबोधनकरिकै दिग्विजयविषे अर्जुनकेप्रसिद्धमहिमाकूंसूचनकरताहूआ श्रीभगवान् तिसअर्जुनकूं तिसत्रिविधभेदकेश्रवणकरणेविषे उत्साहकरावताभया इति ॥ ईहां यहसंदेह प्राप्तहोवैहै ॥ (बुद्धेर्भेदम्) इसवचनविषे श्रीभगवान्नैं जो बुद्धि यहशब्दकथनकऱ्याहै॥तिसबुद्धिशब्दकरिकै श्रीभगवान्कूं केवल वृत्तिमात्र अभिप्रेतहै ॥ अथवा ताबुद्धिशब्दकरिकै वृत्तिवालाअंतःकरण अभिप्रेतहै॥तहां बुद्धिशब्दकरिकै केवलवृत्तिमात्र अभिप्रेतहै॥इसप्रथमपक्षविषे तिसवृत्तिरूपबुद्धितैं ज्ञानकास्वरूप पृथक्कह्याचाहिये ॥और बुद्धिशब्दकरिकै वृत्तिवालाअंतःकरण अभिप्रेतहै इसद्वितीयपक्षविषेतिसवृत्तिवालेअंतःकरणकूंहीं कर्त्ताकास्वरूप पृथक्कह्याचाहिये ॥ नहींतौं पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा वृत्तियोंवालेअंतःकरणकूंहीं कर्त्तापणाहोणेतैं ज्ञान धृति इनदोनोंकापृथक्कथनकरणा व्यर्थहींहै ॥ जोकोई यहकहै ॥ इच्छादिकवृत्तियोंकेपरिसंख्यावासतै तिसज्ञानधृतिदोनोंका पृथक्कथनहै ॥ सोयहकहणाभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं वृत्तियोंवालेअंतःकरणकेत्रिविधपणे

केकथनकरिकैहीं तिसअंतःकरणके इच्छादिकसर्ववृत्तियोंकात्रिविधपणा ईहांविवक्षितहै ॥ यातैं इच्छादिकवृत्तियोंकेपरिसंख्यावासतैंभी तिसज्ञानधृतिदोनोंकापृथ क्ककथन संभवतानहीं इतिइसप्रकारकेसंदेहकेप्राप्तहूए ॥ ईहां याप्रकारकानिर्णयकरणा ॥ पूर्वजो कर्ताका कथनकऱ्याथा ॥ सो अंतःकरणउपहितचिदाभासका नाम कर्त्ता है ॥ और ईहांतौं तिसउपहितचिदाभासतः पृथक्‌करीहूई उपाधिमात्रहीं कारणरूपकारकैंविवक्षितहै ॥ सर्वत्र करणउपहितकूंहीं कर्त्तापणाहोवैहै ॥ यद्यपि (कामःसंकल्पोविचित्साश्रद्धाऽश्रद्धाधृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वंमनएव) इसश्रुतिविषेकथनकरीहुईकामादिकसर्ववृत्तियोंका त्रिविधपणाहींविवक्षितहै ॥ तथापि ईहां बुद्धि धृति इनदोनोंका जोपृथक्‌पणा कथनकऱ्याहै ॥ सो ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति इनदोनोंकेउपलक्षणवासतैं कथनकऱ्याहै ॥ कोई इच्छादिकवृत्तियोंके परिसंख्यावासतैं कथनकऱ्यानहीं यातैं ईहां किंचिन्मात्रभीपुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति॥ २९ ॥ ❋ ॥ तहां प्रथम (प्रवृत्तिंच) इत्यादिकतीनश्लोकों करिकैबुद्धिकात्रिविधपणा कथनकरेहैं ॥ ताकेविषेभी प्रथम सात्त्विकबुद्धिकास्वरूप कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) प्रवृत्तिंचनिवृत्तिंचकार्याकार्येभयाभये ॥ बंधंमोक्षंचयावेत्तिबुद्धिःसापार्थसात्त्विकी ॥ ३० ॥ प्रवृत्तिम् । च । निवृत्तिम् । च । कार्याकार्ये । भयाभये । बंधम् । मोक्षम् । च । या । वेत्ति । बुद्धिः । सा । पार्थ । सात्त्विकी ॥ ३० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपार्थ जो बुद्धि प्रवृत्तिकूं तथा निवृत्तिकूं तथा कार्यअकार्यकूं तथाभयअभयकूं तथा बंधकूं तथामोक्षकूं जानेहै सोबुद्धि सात्त्विकी कहीजावैहै ॥ ३० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ इहां कर्ममार्गकानाम प्रवृत्तिहै ॥ और संन्यासमार्गकानाम निवृत्तिहै ॥ और तिसप्रवृत्तिमार्गविषेस्थितहोइकै जोकर्मोंकाकरणाहै ताकानाम कार्यहै ॥ और तिसनिवृत्तिमार्गविषेस्थितहोइकै जोकर्मोंकानहींकरणाहै ताकानाम अकार्यहै ॥ और तिसप्रवृत्तिमार्गविषे जोगर्भवासादिकदुःखहै ताकानाम भयहै ॥ और तिसनिवृत्तिमार्गविषे जो तिनगर्भवासादिकदुःखोंकाअभावहै ताकानाम अभयहै ॥ और तिसप्रवृत्तिमार्गविषे मिथ्याज्ञानकृत जो कर्तृत्वादिकअभिमानहै ताकानाम बंधहै॥ और तिसनिवृत्तिमार्गविषे जो तत्त्वज्ञानकृत अज्ञानका तथाताकेकार्यका अभावहै ताकानाम मोक्षहै ॥ ऐसे प्रवृत्तिकूं तथानिवृत्तिकूं तथाकार्यकूं तथाअकार्यकूं तथाभयकूं तथाअभयकूं तथाबंधकूं तथामोक्षकूं जाबुद्धि जानेहै ॥ साप्रमाणजन्यनिश्चयवालीबुद्धि सात्त्विकीबुद्धि कहीजावैहै ॥ यद्यपितिनप्रवृत्तिनिवृत्तिआदिकोंकेज्ञानविषे बुद्धिकूं करणरूपताहींहै कर्त्तारूपताहैनहीं ॥ किंतु तिसबुद्धिवालेपुरुषकूंहींकर्त्तारूपताहै ॥ यातैं (ययाबुद्ध्यापुरुषःवेत्ति) इसप्रकार काहींकहणा उचितथा ॥ तथापि तिसकरणरूपबुद्धिविषेकर्तृत्वकेउपचारतैं श्रीभगवाननैं (याबुद्धिःवेत्ति) इसप्रकारकावचन कथनकऱ्याहै ॥ इसप्रकारकीरीति

आगेभीजानिलेणी इति ॥ और इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं बंध मोक्ष इनदोनोंका प्रवृत्तिआदिकोंकेअंतविषेकथनकऱ्याहे ॥ यातैं ईहां तिसबंधमोक्षविषयकहीं तिनप्रवृत्तिआदिकोंकाव्याख्यानकऱ्याहै इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ अबराजसीबुद्धिकास्वरूपवर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) ययाधर्ममधर्मंचकार्यंचाकार्यमेवच ॥ अयथावत्प्रजानातिबुद्धिःसापार्थराजसी ॥ ३१ ॥ यया । धर्मम् । अधर्मम् । च । कार्यम् । च । अकार्यम् । एव । च । अयथावत् । प्रजानाति । बुद्धिः । सा । पार्थ । राजसी ॥ ३१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेपार्थ यहपुरुष जिसबुद्धिकरिकै धर्मकूं तथा अधर्मकूं तथा कार्यकूं तथा अकार्यकूं अयथावत् हीं जानताहै सो बुद्धि राजसी कहीजावैहै ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैविहित जेअग्निहोत्रादिककर्महैं ताकानाम धर्महै ॥ और तिसश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै निषिद्ध जेहिंसादिककर्महैं ताकानाम अधर्महै ॥ यहधर्मअधर्मदोनों अदृष्टअर्थकीहींप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ ऐसे अदृष्टअर्थकीप्राप्तिकरणेहारे धर्मअधर्मदोनोंकूं तथादृष्टअर्थकीप्राप्तिकरणेहारे कार्य अकार्य इनदोनोंकूं यहपुरुष जिसबुद्धिकरिकै अयथावतहीं जानताहै ॥ अर्थात् यहक्याहै इसप्रकारकेअनिश्चयकूं अथवा यहवस्तु इसप्रकारकाहै वाअन्यप्रकार काहै इसप्रकारके संशयकूं यहपुरुष जिसबुद्धिकरिकै प्राप्तहोवैहै॥साबुद्धि राजसीबुद्धि कहीजावैहै इति ॥३१॥ ❀ ॥ अब तामसीबुद्धिकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) अधर्मंधर्ममितियामन्यतेतमसावृता ॥ सर्वार्थान्विपरीतांश्चबुद्धिःसापार्थतामसी ॥ ३२ ॥ अधर्मम् । धर्मम् । इति । या । मन्यते । तमसा । आवृता । सर्वार्थान् । विपरीतान् । च । बुद्धिः । सा । पार्थ । तामसी ॥ ३२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेपार्थ तमकरिकै आवृत्तहूई जो बुद्धि अधर्मकूं धर्म इसप्रकार मानेहै तथा दूसरेभीसर्वअर्थोंकूं विपरीतहीं मानेहै साबुद्धि तामसी कहीजावैहै ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन विशेषदर्शनकाविरोधी जोतमरूपदोषहै ॥ तिसतमरूपदोषकरिकै आवृत्तहुई जाबुद्धि अधर्मकूं धर्मरूपकरिकैमानेहै ॥ अर्थात् अदृष्टअर्थकीप्राप्तिकरणेहारे सर्वकर्मोंविषे जाबुद्धि विपर्ययकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा दृष्टहैप्रयोजनजिनोंका ऐसेजे सर्वज्ञेयपदार्थहै तिनसर्वज्ञेयपदार्थोंकूंभी जाबुद्धि विपरीतहीं मानेहै ॥ अर्थात् सुखादिकोंकेहेतुभूतपदार्थोंकूंभी जाबुद्धि दुःखादिकोंकाहेतुभूतहीं मानेहै ॥ ऐसीविपर्ययवालीबुद्धि तामसीबुद्धि कहीजावैहै इति ॥ ३२ ॥

॥ ❀ ॥ तहां (प्रवृत्तिंचनिवृत्तिंच) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै बुद्धिका त्रिविधपणा कथनकऱ्या ॥ अब (धृत्याययया) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै धृतिके त्रिविधपणेकूंकथनकरेहैं ॥ तहांप्रथम सात्त्विकधृतिकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) धृत्याययाधारयतेमनःप्राणेंद्रियक्रियाः ॥ योगेनाव्यभिचारिण्याधृतिःसापार्थसात्त्विकी ॥ ३३ ॥ धृत्या । यया । धारयते । मनःप्राणेंद्रियक्रियाः । योगेन । अव्यभिचारिण्या । धृतिः । सा । पार्थ । सात्त्विकी ॥ ३३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेपार्थ योगेकरिकै अव्यात जिस धृतिकरिकै यहपुरुष मनप्राणइंद्रियोंके क्रियावोंकूं निरुद्धकरेहै सा धृति सात्त्विकी कही जावैहै ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन समाधिरूपयोगहै तिसयोगकरिकैअव्यात्तजाधृतिहै ॥ ऐसीजिसधृतिकरिकै यहअधिकारीपुरुष मनकीचेष्टारूपक्रियावोंकूं तथाप्राणोंकीचेष्टारूपक्रियावोंकूं तथाइंद्रियोंकीचेष्टारूपक्रियावोंकूं धारणकरेहै ॥ अर्थात् जिसधृतिकरिकै यहअधिकारीपुरुष तिनमनप्राणइंद्रियोंकेचेष्टारूपक्रियावोंकूं शास्त्रनिषिद्धमार्गतैंनिरुद्धकरेहै ॥ तथा जिसधृतिकेविद्यमानहुए इसअधिकारीपुरुषकूं अवश्यकरिकैसमाधिहोवैहै ॥ तथा जिसधृतिकरिकै धारणकरीहुई मनप्राणइंद्रियादिकोंकीक्रिया शास्त्रविधिकाउल्लंघनकरिकै शास्त्रप्रतिपादितअर्थतैंअन्यअर्थकूं विषयकरतीनहीं ॥ इसप्रकारकी साधृति सात्त्विकाधृति कहीजावैहै इति ॥ ३३॥
॥ अब राजसीधृतिकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) ययातुधर्मकामार्थान्धृत्याधारयतेऽर्जुन ॥ प्रसंगेनफलाकांक्षीधृतिःसापार्थराजसी ॥ ३४ ॥ यया । तु । धर्मकामार्थान् । धृत्या । धारयते । अर्जुन । प्रसंगेन । फलाकांक्षी । धृतिः । सा । पार्थ । राजसी ॥ ३४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन पुनः कर्तृत्वादिकअभिनिवेशकरिकै फलकीइच्छावानहुआ यहपुरुष जिस धृतिकरिकै धर्म कामअर्थइनतीनोंकूंहीं धारणकरेहै हेपार्थ सा धृति राजसीकहीजावैहै ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (ययातु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्तसात्त्विकधृतितैं इसराजसधृतिविषे भिन्नपणेकूंकथनकरेहै ॥ हेअर्जुन कर्तृत्वआदिकअभिनिवेशकरिकै स्वर्गादिकफलकीइच्छाकरताहुआ यहपुरुष जिसधृतिकरिकै धर्मकूं तथाकामकूं तथाअर्थकूं धारणकरेहै ॥ अर्थात् धर्म काम अर्थ यहतीनोंहीं हमारेकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणेयोग्यहैं ॥ इसप्रकारतैं तिसधर्मकामअर्थकूंहीं नित्यकर्त्तव्यतारूपकरिकै निश्चयकरेहै ॥ कदाचित्भीमोक्षके

संपादन करणेका निश्चयकरतानहीं ॥ हेपार्थ इसप्रकारकी साधृति राजसीधृति कहीजावैहै ॥ ईहां यज्ञादिककर्मौंजन्यपुण्यरूपअपूर्वकानाम धर्महै ॥ और विषयजन्य सुखका नाम कामहै ॥ और धनादिकपदार्थोंकानाम अर्थहै इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ अब तामसधृतिकास्वरूपवर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) ययास्वप्नंभयंशोकंविषादंमदमेवच ॥ नविमुंचतिदुर्मेधाधृतिःसापार्थतामसी ॥ ३५ ॥ यया । स्वप्नं । भयं । शोकं । विषादं । मदम् । एवं । च । न । विमुंचति । दुर्मेधाः । धृतिः । सा । पार्थ । तामसी ॥३५॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेपार्थ दुर्बुद्धिपुरुष जिसधृतिकरिकै स्वप्नकूं तथाभयकूं तथाशोककूं तथाविषादकूं तथा मदकूं कदाचित्भी नहीं परित्यागकरेहै सो धृति तामसी कहीजावैहै ॥ ३५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां निद्राकानाम स्वप्नहै ॥ और प्रतिकूलवस्तुकेदर्शनजन्यत्रासकानाम भयहै ॥ और इष्टवस्तुकेवियोगजन्य जोसंतापहै ताकानाम शोकहै ॥ और इंद्रियोंकीजाड्याकुलताहै ताकानाम विषादहै ॥ और शास्त्रनिषिद्धविषयोंकेसेवनकरणेकीजाअभिमुखताहै ताकाकाम मदहै ॥ ऐसेस्वप्नकूं तथाभयकूं तथाशोककूं तथाविषादकूं तथामदकूं यहदुष्टबुद्धिवाला अविवेकीपुरुष जिसधृतिकरिकै कदाचित्भी नहींपरित्यागकरेहै ॥ किंतु जिसधृतिकरिकै यहदुर्बुद्धिपुरुष तिनस्वप्नभयादिकोंकूंहीं कर्त्तव्यतारूपकरिकै निश्चयकरेहै ॥ साधृति शिष्टपुरुषोंनैं तामसीधृति कहीहैइति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व क्रियावोंका तथाकर्त्तादिककारकोंका सत्त्वादिकतीनगुणोंकेभेदकरिकै सात्विक राजस तामस यहत्रिविधपणा कथनकऱ्या ॥ अब तिनक्रियाकोंकरिकैजन्यसुखरूप फलके त्रिविधपणेकूं श्रीभगवान् च्यारिश्लोकोंकरिकैकथनकरेहै ॥ तहांप्रथम अर्द्धश्लोककरिकै तिससुखरूपफलके त्रिविधपणेकीप्रतिज्ञाकरिकै सार्द्धश्लोककरिकै सात्विक सुखकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) सुखंत्विदानींत्रिविधंशृणुमेभरतर्षभ ॥ अभ्यासाद्रमतेयत्रदुःखांतंचनिगच्छति ॥ ३६॥ सुखं । तु । इदानीं । त्रिविधं । शृणु । मे । भरतर्षभ । अभ्यासात् । रमते । यत्र । दुःखांतं । च । निगच्छति ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभरतवंशविषेश्रेष्ठअर्जुन पुनः अबी हमारेवचननतैं त्रिविधं सुखकूं तूंश्रवणकर हेअर्जुन जिससमाधिसुखविषे यहपुरुष अभ्यासतैं रमणकरेहै तथा दुःखकेअंतकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ३६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभरतवंशविषेश्रेष्ठअर्जुन अबीतूं मैंपरमेश्वरकेवचननतैं सात्विक राजस तामस इसभेदकरिकै सुखकेत्रिविधपणेकूं श्रवणकर ॥ अर्थात् यहसुख परित्या

गकरणेयोग्यहै यहसुख ग्रहणकरणेयोग्यहै इसप्रकारकेविवेकवासतै तूं अन्यसंकल्पोंकापरित्यागकरिकै ताकेश्रवणविषे आपणेमनकूंस्थिरकर ॥ ईहां (हेभरतर्षभ) इससंबोधनकारिकै श्रीभगवानूनैं तिसअर्जुनविषे मनकेस्थिरताकरणेकीयोग्यता सूचनकरी इति ॥ इसप्रकार अर्द्धश्लोककरिकै तिससुखकेत्रिविधपणेकेकथनकी प्रतिज्ञाकरी ॥ अब (अभ्यासाद्रमतेयत्र) इत्यादिक सार्द्धश्लोककरिकै श्रीभगवान् प्रथम सात्विकसुखकास्वरूप वर्णन करेहै ॥ हेअर्जुन यह यमनियमादिक साधनसंपन्न अधिकारीपुरुष जिससमाधिसुखविषे अभ्यासतै रमणकरेहै ॥ अर्थात् अत्यंतपरिचयतैं परितृप्तहोवैहै ॥ जैसे विषयजन्यसुखविषे यहपुरुष शीघ्रहीं तृप्तहोवैहै ॥ तैसे जिससमाधिसुखविषे यहअधिकारीपुरुष शीघ्रही परितृप्तहोतानहीं ॥ किंतु निरंतर दीर्घकाल सत्कारपूर्वकसेवनकन्येहूए अत्यंतदृढपरिचयरूप अभ्यासतैंहीं परितृप्तहोवैहै ॥ तथा जिससमाधिसुखविषे रमणकरताहूआ यहअधिकारीपुरुष सर्वदुःखोंकेअवसानरूपअंतकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् जैसे विषयजन्यसुखकेअंतविषे यहपुरुष महानूदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे जिससुखकेअंतविषे दुःखकीप्राप्तिहोती नहीं ॥ किंतु सर्वदुःखोंकापरिअवसानरूपअंतही होवैहै इति ॥ ३६ ❀ ॥ अब (दुःखांतंचनिगच्छति) इसवचनकेअर्थकूंस्पष्टकरिकैवर्णनकरे है ॥

(मू० श्लो०) यत्तदग्रेविषमिवपरिणामेऽमृतोपमम् ॥ तत्सुखंसात्त्विकंप्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥ ३७ ॥ यत् । तत् । अग्रे । विषम् । इव । परिणामे । अमृतोपमम् । तत् । सुखम् । सात्त्विकम् । प्रोक्तम् । आत्मबुद्धिप्रसादजम् ॥ ३७ ॥ (इतिप०) ॥

हेअर्जुन जो सुख प्रथमप्रारंभविषे विषकी न्यांई होवैहै तथा परिणामविषे अमृतकेतुल्यहोवैहै तथा आत्मविषयकबुद्धिके प्रसादतैंजन्यहोवैहै सो सुख योगीपुरुषोंनैं सात्त्विक कह्याहै ॥ ३७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोसमाधिसुख अग्रेविषकीन्यांईहोवैहै ॥ अर्थात् ज्ञानवैराग्यकरिकै ध्यानसमाधिकेआरंभकालविषे अत्यंतआयासकरिकैसाध्यहोणेतैं प्रसिद्ध विषकीन्यांई जोसुख द्वेषविशेषकीप्रातिकरणेहाराहै ॥ तथा जोसुख परिणामविषे अमृतकेतुल्यहै ॥ अर्थात् तिसज्ञानवैराग्यकेपरिपाकविषे जोसुख अमृतकी न्यांई अत्यंतप्रीतिकाविषयहोवैहै ॥ तथा जोसुख आत्मबुद्धिप्रसादजन्यहै ॥ तहां आत्माकूंविषयकरणेहारीजाबुद्धिहै ॥ ताकानाम आत्मबुद्धिहै ॥ ताआत्मबुद्धिकाजो प्रसादहै ॥ अर्थात् निद्राआलस्यादिकदोषोंतैंरहितहोइकै जो स्वस्थतारूपकरिकैस्थितिहै ताकानाम आत्मबुद्धिप्रसादहै ॥ ऐसेआत्मविषयकबुद्धिके प्रसादतैं जोसुख उत्पन्नहोवैहै ॥ राजससुखकीन्यांई जोसुख विषयइंद्रियकेसंयोगतैंजन्यहैनहीं ॥ तथा तामससुखकीन्यांई जोसुख निद्राआलस्यादिकोंकरिकैभी जन्यहैनहीं ॥ इसप्रकारका अनात्मबुद्धिकीनिवृत्तिकरिकै आत्मविषयकबुद्धिकेप्रसादतैंजन्य जोसमाधिकासुखहै ॥ सोसुख योगीपुरुषोंनैं सात्त्विकसुख कह्याहै

इति ॥ ईहां केईक विद्वान्पुरुष (सुखांतंविदानाम्) इसश्लोकका यहअर्थकरेहैं ॥ यहपुरुष पुनःपुनःसेवनरूपअभ्यासतैं जिस सात्त्विकसुखविषे वाराजससुखविषे वातामससुखविषे रतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जिसरतिकरिकै यहपुरुष पुत्रशोकादिरूपदुःखकेभी अवसानरूपअंतकूंप्राप्तहोवैहै ताकानाम सुखहै ॥ सोसुख सत्त्वादिक गुणोंकेभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तिसत्रिविधसुखकूं तूं अबी श्रवणकर ॥ इसप्रकार तत् इसपदकाअध्याहारकरिकै संपूर्णश्लोककाअन्वयकऱ्याहै॥ तहां इसश्लोककेउत्तरार्द्धकरिकैतौं सामान्यतैंसुखमात्रकालक्षणकथनकऱ्याहै ॥ और इसश्लोककेपूर्वार्द्धकरिकै तिससुखकेत्रिविधपणेकेकथनकरणेकीप्रतिज्ञाकरीहै ॥ और (यत्तदग्रेविषमिव) इसश्लोककरिकै सात्त्विकसुखकालक्षण कथनकऱ्याहै ॥ श्रीभाष्यकारोंकाभी इसीप्रकारकाअभिप्रायहै इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ अब राजससुखकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) विषयेंद्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ॥ परिणामेविषमिवतत्सुखंराजसंस्मृतम् ॥ ३८ ॥ विषयेंद्रियसंयोगात् । यत् । तत् । अग्रे । अमृतोपमम् । परिणामे । विषम् । इव । तत् । सुखम् । राजसम् । स्मृतम् ॥ ३८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जो सुख विषयइंद्रियकेसंयोगतैंजन्यहै तथाप्रथमआरंभविषे अमृतकेसमानहै तथापरिणामविषे विषके तुल्यहै सो सुख राजस कह्याहै ॥ ३८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोसुख शब्दादिकविषयोंके तथाश्रोत्रादिकइंद्रियोंके संबंधतैंहींजन्यहै ॥ पूर्वउक्त आत्मविषयक बुद्धिकेप्रसादतैं जोसुख जन्यहैनहीं ॥ तथा जोसुख प्रथमआरंभविषे मनइंद्रियोंकेसंयमादिरूपक्लेशकेअभावतैं भोक्तापुरुषकूं अमृतकेसमानहोवैहै ॥ तथा जोसुख परिणामकालविषे तिसभोक्तापुरुषकूं इसलोककेदुःखोंका तथापरलोककेदुःखोंका प्रापकहोणेतैं विषकेसमानहै ॥ अर्थात् जैसे मरणकासाधनरूपविष लोकोंकूं प्रतिकूलहोवैहै ॥ तैसे जोविषयसुखपरिणामकालविषे तिसभोक्तापुरुषकूं अत्यंतप्रतिकूलहोवैहै ॥ ऐसाअत्यंतप्रसिद्ध जोस्रक्चंदनवनितासंगादिजन्य विषयसुखहै ॥ सोविषयजन्यसुख शिष्टपुरुषोंनैं राजस सुख कह्याहै इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ अब तामस सुखकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यदग्रेचानुबंधेचसुखंमोहनमात्मनः ॥ निद्रालस्यप्रमादोत्थंतत्तामसमुदाहृतम् ॥ ३९ ॥ यत् । अग्रे । च । अनुबंधे । च । सुखं । मोहनम् । आत्मनः । निद्रालस्यप्रमादोत्थं । तत् । तामसम् । उदाहृतम् ॥ ३९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन जो

सुखं प्रथमआरंभविषे तथा परिणामविषे बुद्धिकूं मोहकरणेहाराहै तथा निद्राआलस्यप्रमाददतैंउत्पन्नहूआहै सोसुखं तामस कह्याहै ॥ ३९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन जोसुख प्रथमआरंभविषे तथापरिणामविषे बुद्धिकूं मोहकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा जोसुख निद्रा आलस्य प्रमाद इनतीनोंतैंहीं उत्पन्नहूआहै ॥ तहां निद्रा आलस्य यहदोनोंतौं प्रसिद्धहींहै ॥ और कर्त्तव्यअर्थकेनिश्चयतैंविना जोकेवल मनोराज्यमात्रहै ताकानाम प्रमादहै ॥ ऐसे निद्राआलस्यप्रमादतैं जो सुख उत्पन्नहूआहै ॥ जोसुख सात्त्विकसुखकीन्यांई आत्मविषयकबुद्धिकेप्रसादतैंभी जन्यनहींहै ॥ तथा राजससुखकीन्यांई जोसुखविषयइंद्रियकेसंयोगतैंभी जन्यनहींहै ॥ ऐसानिद्राआलस्यप्रमादजन्यसुख शिष्टपुरुषोंनैं तामससुख कथनकऱ्याहै इति ॥ ३९ ॥ ॥ अब पूर्व सात्त्विक राजस तामस इसत्रिविधपणे करिकैनहींकथनकऱ्येहुएभीपदार्थोंका संग्रहकरावताहुआ श्रीभगवान् इसपूर्वउक्तप्रकारकेअर्थकूं उपसंहारकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नतदस्तिपृथिव्यांवादिविदेवेषुवापुनः ॥ सत्त्वंप्रकृतिजैर्मुक्तंयदेभिःस्यात्रिभिर्गुणैः ॥ ४० ॥ न । तत् । अस्ति । पृथिव्याम् । वा । दिवि । देवेषु । वा । पुनः । सत्त्वम् । प्रकृतिजैः । मुक्तम् । यत् । एभिः । स्यात् । त्रिभिः । गुणैः ॥ ४० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जो पदार्थ प्रकृतिजन्य इनपूर्वउक्त तीन गुणोंकरिकै रहित होवै सोपदार्थ इसपृथिवीविषे अथवा स्वर्गविषे देवतावोंविषे नहीं विद्यमानहै ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकीसाम्यअवस्थारूप जाप्रकृतिहै ॥ तिसप्रकृतितैं जन्य जेसत्त्वादिकतीनगुणहैं ॥ अर्थात् तिसप्रकृतितैं वैषम्यअवस्थाकूंप्राप्तहुए जेसत्त्वादिकतीनगुणहैं ॥ तहां सत्त्व रज तम यहतीनगुणरूपहीं प्रकृतिहोवैहै ॥ यातैं तिनगुणोंविषे साक्षात्प्रकृतिजन्यत्व संभवतानहीं ॥ किंतु तिसगुणोंकीसाम्यअवस्थारूपप्रकृतितैं जोतिनसत्त्वादिकगुणोंकीवैषम्यअवस्थाहै ॥ सावैषम्यअवस्थाहीं तिनगुणोंकीउत्पत्तिहै ॥ अथवा ईहां प्रकृतिशब्द करिकै अनिर्वचनीयमायाकाग्रहणकरणा ॥ तिसमायारूपप्रकृतिकरिकै जन्य कहीये कल्पित जेसत्त्वादिकतीनगुणहैं ॥ अथवा प्रकृतिशब्दकरिकै जन्मांतरके धर्मअधर्मकेसंस्कारोंकाग्रहणकरणा ॥ तिससंस्काररूपप्रकृतितैंजन्य जेसत्त्वादिकतीनगुणहैं ॥ ऐसेप्रकृतिजन्य तथाबंधकेहेतुरूप सत्त्वादिकतीनगुणोंकरिकै रहित जोप्राणीरूप वाअप्राणीरूप सत्त्वकहिये पदार्थ होवै ॥ सोप्राणीरूप वाअप्राणीरूप पदार्थ इसपृथिवीविषेस्थित मनुष्यादिकोंविषे तथास्वर्गविषेस्थित देवतावों विषे हैनहीं ॥ अर्थात् किसीभीलोकविषे सत्त्वादिकतीनगुणोंतैंरहित कोईभीअनात्मवस्तु हैनहीं ॥ सर्वहींअनात्मवस्तु तीनगुणोंकरिकैयुक्तहैं इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥

तहां सत्त्व रज तम यहतीनगुणात्मक क्रियाकारकफलस्वरूप सर्वहींसंसार मिथ्याज्ञानकरिकैकल्पित अनर्थरूपहींहै ॥ यह अर्थ पूर्वचतुर्दशेअध्याय विषे कथनकऱ्याथा ॥ सोपूर्वउक्तअर्थ ईहांश्रीभगवान्नैं उपसंहारकऱ्या ॥ और पूर्वपंचदशेअध्यायविषेतौं वृक्षरूपकल्पनाकरिकै तिसिअनर्थरूप संसारकूं कथनकरिकै (अश्वत्थमेनंसुविरूढमूलमसंगशस्त्रेणदृढेनछित्त्वा ॥ ततःपदं तत्परिमार्गितव्यंयस्मिन्गताननिवर्त्तंतिभूयः) इसश्लोककरिकै विषयोंविषे वैराग्यरूप असंग शस्त्रकरिकै तिससंसारवृक्षका छेदनकरिकै इस अधिकारीपुरुषनैं परमात्मारूपपद अन्वेषणकरणेंयोग्यहै ॥ यहअर्थ कथनकऱ्याथा ॥ तहां सर्वसंसारकूं त्रिगुणात्मकहोणेतैं तिसत्रिगुणात्मकसंसारवृक्षका कैसेछेदनहोवैंगा ॥ और जिसअसंगशस्त्रकरिकै इससंसार वृक्षका छेदनहोवैहै ॥ तिसअसंगशस्त्र कीप्राप्तिहीं महादुर्घटहै ॥ इसप्रकारकीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ आपणेआपणे अधिकारके अनुसार वेदभगवान्नैं विधानकऱ्येजे वर्णआश्रमके धर्महैं ॥ तिनधर्मोंकरि कैप्रसन्नहुएपरमेश्वरतैं इसअधिकारीपुरुषकूं तिस असंगशास्त्रकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसअर्थकेकहणेवासतैं ॥ तथा इतनाहीं सर्ववेदोंकाअर्थहै सोअर्थ परमपुरुषार्थकी इच्छावान् अधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैअनुष्ठानकरणेयोग्यहै इसप्रकारतैं इसगीताशास्त्रविषे सर्ववेदोंकेअर्थका उपसंहार करणेयोग्यहैं ॥ इसअर्थकेकहणेवासतैं इसतैंउत्तरप्रकरणकाआरंभकरेहै ॥ तहांप्रथम सूत्ररूपश्लोक कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) ब्राह्मणक्षत्रियविशांशूद्राणांचपरंतप ॥ कर्माणिप्रविभक्तानिस्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥ ४१ ॥ ब्राह्मणक्षत्रियविशां । शूद्राणां । च । परंतप । कर्माणि । प्रविभक्तानि । स्वभावप्रभवैः । गुणैः ॥ ४१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपरं तप ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंके तथा शूद्रोंके कर्म स्वभावजन्य गुणोंकरिकै पृथक् पृथक् व्यवस्थितहैं तिनोंकूं तूं श्रवणकर ॥ ४१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेपरंतप अर्थात् हेअंतरबाह्यशत्रुवोंकूं संतापकीप्राप्तिकरणेहारा अर्जुन ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनोंके तथाशूद्रोंके कर्म परस्पर भिन्नभिन्नहुए स्थितहैं ॥ ईहां (ब्राह्मणक्षत्रियविशाम्) इनतीनोंपदोंका जोसमासकऱ्याहै ॥ सो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनोंवर्णोंविषे द्विजपणेकरिकै वेदोंकाअध्ययन अग्निहो त्र इत्यादिक तुल्यधर्मोंकेकथन करणेवासतैं ॥ और (शूद्राणाम्) इसवचनकरिकै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंतैं शूद्रोंकाजो पृथक्कथनकऱ्याहै ॥ सो तिन शूद्रोंविषे एकजातिपणेकरिकै वेदकेअनधिकारीपणेकेजनावणेवासतैंहै इति ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठमुनिनैंभी कथनकरीहै ॥ तहां वसिष्ठवचनं ॥ (चत्वारोवर्णाब्राह्मण क्षत्रियवैश्यशूद्रास्तेषांत्रयोवर्णाद्विजातयोब्राह्मणक्षत्रियवैश्यास्तेषांमातुरग्रेद्विजननं द्वितीयंमौंजिबंधने अत्रास्यमातासावित्री पितात्वाचार्यउच्यतेइति) ॥ अर्थयह ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहच्यारिवर्ण कहेजावैहैं ॥ तिनच्यारिवर्णोंविषे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहतीनवर्णतौं द्विजाति कह्येजावैहैं ॥ तहां दोमातापितातैं जिस काजन्महोवै ताकूं द्विजाति कहेहैं तथाद्विजकहेहैं ॥ तहां इनब्राह्मणादिकतीनवर्णोंका प्रथमजन्मतौं लोकप्रसिद्धपितामातातैंहोवैहै ॥ और दूसराजन्मतौं मौंजिबं धनकर्मविषेहोवैहै ॥ तहांतिसद्वितियजन्मविषे इनब्राह्मणादिकतीनवर्णोंकी सावित्री माताहोवैहै ॥ और उपदेशकर्त्ताआचार्य पिताहोवैहै इति ॥ इसप्रकार उत्प त्तिकेस्थानविशेषतैंभी तिनच्यारिवर्णोंका विभागहीं सिद्धहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतः ॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्यांशूद्रोअजा यतइति) ॥ अर्थयह ॥ इसपरमेश्वरकेमुखस्थानतैं ब्राह्मण उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ और बाहुस्थानतैं क्षत्रिय उत्पन्नहोतेभयेहैं और ऊरुस्थानतैं वैश्य उत्पन्नहोते भयेहैं और दोनोंपादोंतैं शूद्र उत्पन्नहोतेभयेहैं इति ॥ इसप्रकारका वर्णोंकाविभाग अन्यश्रुतिविषेभीकथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (गायत्र्याब्राह्मणमसृजत त्रिष्टु भाराजन्यं जगत्यावैश्यं नकेनचिच्छंदसाशूद्रमिति ॥) अर्थयह ॥ परमेश्वर गायत्रीनामाछंदकरिकै ब्राह्मणकूं उत्पन्नकरताभया ॥ और त्रिष्टुभ्नामाछंदकरिकै क्षत्रियकूं उत्पन्नकरताभया ॥ और जगतीनामाछंदकरिकै वैश्यकूं उत्पन्नकरताभया ॥ और शूद्रकूं किसीभीछंदकरिकै नहींउत्पन्नकरताभया इति ॥ और (शूद्रश्चतुर्थोवर्णएकजातिः ॥) अर्थयह ॥ ब्राह्मणादिकतीनवर्णोंकीअपेक्षाकरिकै शूद्र चतुर्थवर्णकह्याजावैहै ॥ सोशूद्रएकहींजन्मवालाहोवैहै ॥ द्वितीयजन्मवा लाहोवैनहीं इति ॥ इसप्रकारतै गौतमऋषिभी तिनच्यारि वर्णोंकेविभागकूं कथनकरताभयाहै इति ॥ हेअर्जुन इसप्रकारके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारि वर्णोंके कर्म परस्पर भिन्नभिन्नहूएस्थितहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनच्यारिवर्णोंकेकर्म किनोंकरिकै भिन्नभिन्नहूएस्थितहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तिनकर्मोंकेभिन्नभिन्नपणेविषे निमित्तकूं कथनकरेहै (स्वभावप्रभवैर्गुणैःइति) हेअर्जुनब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वादिकरूपस्वभावोंका प्रभव कहिये हेतुभूत जेसत्वादिकगुणहैं ॥ तिनसत्वादिकगुणोंकरिकैहीं तेच्यारिवर्णोंकेकर्म भिन्नभिन्नहूएस्थितहैं ॥ सोप्रकार दिखावैहैं ॥ तहां ब्राह्मणस्वभावकातौं प्रशांतरूपहोणेतैं सत्वगुणहीं हेतुभूतहैं ॥ और क्षत्रियस्वभावकातौं ईश्वरस्वभाववालाहोणेतैं सत्वउपसर्जनरजोगुणहीं हेतुरूपहै ॥ और वैश्यस्वभावकातौं इच्छास्वभाववालाहो णेतैं तमउपसर्जनरजोगुणहीं हेतुरूपहै ॥ और शूद्रस्वभावकातौं मूढस्वभाववालाहोणेतैं रजउपसर्जनतमोगुणहीं हेतुरूपहै ॥ ईहां उपसर्जननाम गौणकाहै इति ॥ अथवा मायानामप्रकृतिकानाम स्वभावहै ॥ तिसमायारूपउपादानकारणतैं प्रभव कहिये उत्पत्तिहै जिनगुणोंकी ॥ तिनसत्वादिकगुणोंकानाम स्वभावप्रभवगुण है ॥ ऐसेस्वभावप्रभवगुणोंकरिकै तेच्यारिवर्णोंकेकर्म भिन्नभिन्नहूएस्थितहैं ॥ अथवा जोपूर्वजन्मकासंस्कार इसवर्त्तमानजन्मविषे आपणेफलदेणेकीअभिमुखताक रिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहूआहै तासंस्कारकानाम स्वभावहै ॥ सोसंस्काररूपस्वभाव निमित्तरूपकरिकैहैकारण जिनगुणोंका तिनोंकानाम स्वभावप्रभवगुणहै ॥

ऐसेस्वभावप्रभवगुणोंकरिकै तेच्यारिवर्णोंकेकर्म भिन्नभिन्नहुएस्थितहैं ॥ तहां धर्मोंकाप्रतिपादक जोशास्त्रहै ॥ सोशास्त्रभी इसपुरुषकेस्वभावकीअपेक्षा अवश्य करेहै ॥ यातैं तेच्यारिवर्णोंकेकर्म शास्त्रकरिकै भिन्नभिन्नकऱ्येहुएभी तिनस्वभावप्रभवगुणोंकरिकै भिन्नभिन्नकऱ्येहुएहैं इसप्रकारतैंकह्येजावैहैं ॥ जिसकारणतैं शास्त्र पुरुषकेसंस्काररूपस्वभावकीअपेक्षा अवश्यकरेहै ॥ इसकारणतैंहीं शास्त्रकारोंनैं यहन्याय्य कथनकऱ्याहै॥यज्ञादिककर्मोंकेविधानकरणेहारेजे विधिवचनहैं तिनवचनोंकी अधिकारीपुरुषकीशक्ति सहकारीहोवैहै इति ॥ इसप्रकार स्वभावप्रभवगुणोंकरिकै ब्राह्मणादिकच्यारिवर्णोंकेकर्म भिन्नभिन्नहुएस्थितहैं ॥ यहवार्त्ता गौतमऋषिनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांगौतमवचनम् ॥ (द्विजातीनामध्ययनमिज्यादानम् ब्राह्मणस्याधिकाःप्रवचनयाजनप्रतिग्रहाः पूर्वेषुनियमस्तुराज्ञोऽधिकंरक्षणं सर्वभूतानांन्याय्यदंडत्वम् वैश्यस्याधिकंकृषिवणिक्पशुपाल्यंकुसीदंच शूद्रश्चतुर्थोवर्णएकजातिस्तस्यापिसत्यमक्रोधः शौचमाचमनार्थेपाणिपादप्रक्षालनमेवैकश्राद्ध कर्मभृत्यभरणंस्वदारवृत्तिःपरिचर्योत्तरेषामिति) ॥ अर्थयह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंकानाम द्विजातिहै ॥ तिनद्विजातिपुरुषोंकातौं वेदोंकाअध्ययन अग्निहोत्रादिककर्म दान यहतीनों साधारणधर्महैं ॥ और वेदोंकाअध्ययनकरावणा तथायज्ञकरावणा तथाप्रतिग्रहलेणा यहतीनोंधर्म ब्राह्मणकेअधिकहैं ॥ क्षत्रिय वैश्यके यहतीनोंधर्म हैंनहीं ॥ और पूर्वकथनकऱ्येजे अध्ययन इज्या दान यहतीनधर्महैं ॥ तिनतीनोंधर्मोंकीअवश्यकर्त्तव्यता तथासर्वभूतोंकारक्षण तथादुष्टप्रा णीयोंकूं नीतिपूर्वकदंडकरणा यहधर्म क्षत्रियके अधिकहैं और कृषि वाणिज्य गौआदिकपशुवोंकापालन तथावृद्धिकेवासतैं धनकाप्रयोगरूपकुसीद यहधर्म वैश्यके अधिकहैं ॥ और एकजन्मवालाजो शूद्रहै ॥ तिसशूद्रकेतौं सत्य अक्रोध शौच आचमनकेवासतैपाणिपादोंकाप्रक्षालन एकश्राद्धकर्म भृत्योंकाभरण स्वदारवृत्ति तीनवर्णोंकीसेवा इत्यादिकधर्महैं इति ॥ इसगौतमऋषिकेवचनविषे ब्राह्मणादिकवर्णोंके साधारणधर्म तथाअसाधारणधर्म कथनकरेहैं ॥ इसीप्रकारके च्यारिवर्णों केधर्म वसिष्ठमुनिनैंभी कथनकरेहैं ॥ तहांवसिष्ठवचनम् ॥ (षट्कर्माणिब्राह्मणस्याध्ययनमध्यापनंयज्ञोयाजनंदानंप्रतिग्रहश्चेति त्रीणिराजन्यस्याध्ययनंयज्ञोदानंच शस्त्रेणचप्रजापालनंस्वधर्मस्तेनजीवेत् एतान्येवत्रीणिवैश्यस्यकृषिवणिक्पशुपाल्यंकुसीदंच तेषांपरिचर्याशूद्रस्यइति) ॥ अर्थयह ॥ आप वेदोंकाअध्ययनकरणा ॥ १ ॥ तथा दूसरेपुत्रशिष्यादिकोंकेप्रति वेदोंकाअध्ययनकरावणा ॥ २ ॥ तथा आप यज्ञकरणा ॥ ३ ॥ तथा दूसरेयजमानकेप्रति ऋत्विक्होइकै यज्ञकरा वणा ॥ ४ ॥ तथा आप दानदेणा ॥ ५ ॥ दूसरेतैं दानलेणा ॥ ६ ॥ यहषट्कर्म ब्राह्मणकेहींहोवैहैं ॥ और वेदोंकाअध्ययनकरणा तथायज्ञकरणा तथादानदेणा यहतीनकर्म क्षत्रियकेहोवैहैं ॥ यहतीनोंकर्म ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनोंके साधारणहै ॥ और शस्त्रकरिकैप्रजाकापालनकरणा यह क्षत्रियका असाधारण स्वधर्महै ॥ इसअसाधारणधर्मकरिकै सोक्षत्रिय आपणाजीवनकरे ॥ और वेदोंकाअध्ययनकरणा तथायज्ञकरणा तथादानकरणा यहपूर्वउक्ततीनोंकर्म वैश्यकेभीहैं ॥ परंतु

यहतीनोंधर्म ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनोंके साधारणधर्महैं ॥ और कृषि वाणिज्य पशुवोंकापालन तथावृद्धिकेवासतैं धनकाप्रयोगरूपकुसीद यहकर्म वैश्यकेअसाधारणहैं ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंकीसेवाकरणी यहशूद्रकाकर्महै इति ॥ इसप्रकारके च्यारिवर्णोंकेभिन्नभिन्नधर्म आपस्तंबऋषिनैंभी कथनकरेहैं ॥ तहांआपस्तंबवचनम् ॥ (चत्वारोवर्णाब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रास्तेषांपूवपूर्वोजन्मतःश्रेयान् स्वकर्मब्राह्मणस्याध्ययनमध्यापनंयज्ञोयाजनंदानंप्रतिग्रहणम् ॥ एतान्येवक्षत्रियस्याध्यापनयाजनप्रतिग्रहणानीति परिहार्य्य युद्धदंडाधिकानि क्षत्रियवद्वैश्यस्यदंडयुद्धवर्जंकृषिगोरक्षवाणिज्याधिकम् परिचर्याशूद्रस्येतरेषांवर्णानांइति ॥) अर्थ यह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहच्यारिवर्ण कहेजावैहैं ॥ तिनच्यारिवर्णोंकेमध्यविषे उत्तरउत्तरवर्णकीअपेक्षाकरिकै पूर्वपूर्ववर्ण जन्मतैंश्रेष्ठहोवैहै ॥ जैसे क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनतीनोंकीअपेक्षाकरिकै ब्राह्मणश्रेष्ठहै ॥ और वैश्य शूद्र इनदोनोंकी अपेक्षाकरिकै क्षत्रिय श्रेष्ठहै ॥ और शूद्रकीअपेक्षाकरिकै वैश्य श्रेष्ठहै ॥ तहां अध्ययन अध्यापन यज्ञ याजन दान प्रतिग्रह यहषट्कर्म ब्राह्मणकेहोवैहैं ॥ और इनषट्कर्मोंविषे अध्यापन याजन प्रतिग्रह इनतीनोंकूंछोडिकै अध्ययन यज्ञ दान यहतीनोंकर्म क्षत्रियकेहोवैहैं ॥ और युद्ध तथादुष्टपुरुषोंकूंदंड यहदोनोंकर्म क्षत्रियके ब्राह्मणतैं अधिकहोवैहैं ॥ और क्षत्रियकीन्यांई वैश्यकेभी युद्धदंडकूंछोडिकै अध्ययन यज्ञ दान यहतीनकर्म साधारणहोवैहैं ॥ और कृषि गौआदिकपशुवोंकापालन वाणिज्य यहकर्म वैश्यके क्षत्रियतैंअधिकहोवैहैं ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंकीसेवाकरणी यह शूद्रकाकर्महै इति ॥ इसीप्रकारके च्यारिवर्णोंकेभिन्नभिन्नधर्म मनुभगवान्‌नैंभी कथनकरेहैं॥ तहांश्लोक ॥ (अध्यापनमध्ययनंयजनंयाजनंतथा ॥ दानंप्रतिग्रहंचैवब्राह्मणानामकल्पयत् ॥ १ ॥ प्रजानांरक्षणंदानमिज्याध्ययनमेवच ॥ विषयेष्वप्रसक्तिंचक्षत्रियस्यसमादिशत् ॥ २ ॥ पशूनांरक्षणंदानमिज्याध्ययनमेवच ॥ वणिक्पथंकुसीदंचवैश्यस्यकृषिमेवच ॥ ३ ॥ एकमेवतुशूद्रस्यप्रभुःकर्मसमादिशत् ॥ एतेषामेववर्णानांशुश्रूषामनसूयया ॥ ४ ॥) ॥ अर्थयह ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे सर्वज्ञपरमेश्वर ब्राह्मणोंके अध्ययन अध्यापन यजन याजन दान प्रतिग्रह यहषट्कर्म कथनकरताभयाहै ॥ और प्रजाकारक्षण दान यज्ञ अध्ययन विषयोंविषेनहींआसक्ति इत्यादिकधर्म क्षत्रियके कहताभयाहै ॥ और पशुवोंकारक्षण दान यज्ञ वेदोंकाअध्ययन वाणिज्य वृद्धिवासतैधनका प्रयोगरूपकुसीद कृषि इत्यादिकधर्म वैश्यकेकहताभयाहै ॥ और असूयातैंरहितहोइकै ब्राह्मणादिकतीन वर्णोंकीशुश्रूषाकरणी यहएककर्म शूद्रका कहताभयाहै इति ॥ इसप्रकारतैं ब्राह्मणादिकच्यारिवर्णोंकेकर्म सत्त्वादिकगुणोंकेभेदकरिकै भिन्नभिन्नहुएस्थितहैं इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ तहां प्रथम ब्राह्मणके स्वाभाविकगुणकृतकर्मोंकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) शमोदमस्तपःशौचंक्षांतिराजवमेवच ॥ ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यंब्रह्मकर्मस्वभावजम् ॥ ४२ ॥ शमः । दमः । तपः ।

शौचम् । क्षांतिः । आर्जवम् । एव । चँ । ज्ञानम् । विज्ञानम् । आस्तिक्यम् । ब्रह्मकर्म । स्वभावजम् ॥४२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन शम दम तप शौच क्षांति आर्जव तथा ज्ञान विज्ञान आस्तिक्य यहनव स्वभावजन्य ब्राह्मणकेकर्महैं ॥ ४२ ॥
(इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां अंतःकरणकाजोनिग्रहहै ताकानाम शमहै ॥ और श्रोत्रादिकबाह्यकरणोंकाजोनिग्रहहै ॥ ताकानाम दमहै ॥ और पूर्वसप्तदशेअध्यायविषे कथनकऱ्या जो शारीर वाचिक मानस यहतीनप्रकारकातपहै ॥ सोतपहीं इहां तपशब्दकरिकैग्रहणकरणा ॥ और शौच बाह्यअंतरभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां मृत्तिकाजलकरिकै जो शरीरकीशुद्धिहै ताकूं बाह्यशौचककहेहैं ॥ और अंतःकरणकेशुद्धिकूं अंतरशौच कहेहैं ॥ सोदोनोंप्रकारकाहींशौच ईहां शौचशब्दकरिकै ग्रहणकरणा ॥ और कठोरवचनोंकरिकैनिरादरकऱ्येहुएभी तथादंडादिकोंकरिकैताडनकऱ्येहुएभी इसपुरुषकेमनविषे जोक्रोधादिकविकारोंतैंराहित्यपणाहै ताकानाम क्षमाहै ॥ ताक्षमाकाहीं ईहां क्षांतिशब्दकरिकैग्रहणकरणा ॥ और कुटिलतातैंरहितपणेकानाम आर्जवहै ॥ और षट्अंगोंसहितवेदकूं तथा तावेदकेअर्थकूं विषयकरणेहारी जोअंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और कर्मकांडविषे यज्ञादिककर्मोंकाजोकौशलहै तथाज्ञानकांडविषे ब्रह्मआत्माकेएकताकाजो अनुभवहै ताकानाम विज्ञानहै ॥ और पूर्वकथनकरीजासात्त्विकीश्रद्धाहै ताकानाम आस्तिक्यहै ॥ इसप्रकारके शम दम तप शौच क्षांति आर्जव ज्ञान विज्ञान आस्तिक्य यह सत्त्वगुणके स्वभावकृत नवधर्म ब्रह्मकर्म कह्येजावैहैं ॥ अर्थात् ब्राह्मणजातिकेकर्म कह्येजावैहैं ॥ यद्यपि सात्त्विकअवस्थाविषे ब्राह्मणादिकच्यारोंहींवर्णके यहशमदमादिकनवधर्म संभवहोइसकेहैं ॥ तथापि यहशमदमादिकनवधर्म बाहुल्यताकरिकै ब्राह्मणविषेहींहोवैहैं ॥ जिसकारणतैं सोब्राह्मण सत्त्वस्वभाववालाहींहै ॥ और अन्यक्षत्रियादिकोंविषेतौं तिससत्वगुणकीवृद्धिकेवशतैं तेशमदमादिकधर्म कदाचित्हीं उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसीकारणतैंहीं अन्यशास्त्रविषे यहशमदमादिकधर्म ब्राह्मणादिकच्यारिवर्णोंकेसाधारणधर्मरूपकरिकै कथनकऱ्येहैं ॥ तहां शमदमादिकधर्म च्यारिवर्णोंके साधारणधर्महैं इसवार्त्ताकूं विष्णुभगवान्भी कहताभयाहै ॥ तहांश्लोक ॥ (क्षमासत्यंदमःशौचंदानमिंद्रियसंयमः ॥ अहिंसागुरुशुश्रूषातीर्थानुसरणंदया ॥ १ ॥ आर्जवंलोभशून्यत्वंदेवब्राह्मणपूजनम् ॥ अनभ्यसूयाचतथाधर्मःसामान्यउच्यते ॥ २ ॥) ॥ अर्थयह ॥ क्षमा सत्य दम शौच दान इंद्रियोंकासंयम अहिंसा गुरुकीशुश्रूषा तीर्थोंकासेवन दया आर्जव लोभतैंरहितपणा देवताब्राह्मणोंकापूजन असूयादोषतैंरहितपणा यहसर्वधर्म सामान्यधर्म कह्येजावैहैं ॥ अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारिवर्णोंके तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास इनच्यारिआश्रमोंके साधारणधर्म कह्येजावैहैं इति ॥ इसप्रकारकेसाधारणधर्मोंकूं बृहस्पतिभी कथनकरताभयाहै

॥ तहांश्लोक ॥ (दयाक्षमानसूयाचशौचानायासमंगलम् ॥ अकार्पण्यमस्पृहत्वंसर्वसाधारणानिच ॥ १ ॥ परेवाबंधुवर्गेवामित्रेद्वेष्टरिवासदा ॥ आपन्नेरक्षितव्यंतु दयैषापरिकीर्त्तिता ॥ २ ॥ बाह्येवाध्यात्मिकेचैवदुःखेचोत्पादितेक्वचित् ॥ नकुप्यतिनवाहंतिसाक्षमापरिकीर्त्तिता ॥ ३ ॥ नगुणान्गुणिनोहंतिस्तौतिमंदगुणानपि ॥ नान्यदोषेषुरमतेसानसूयाप्रकीर्तिता ॥ ४ ॥ अभक्ष्यपरिहारश्चसंसर्गश्चाप्यनिर्गुणैः ॥ स्वधर्मेचव्यवस्थानंशौचमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ ५ ॥ शरीरंपीड्यतेयेनसुशुभेनापि कर्मणा ॥ अत्यंतंतन्नकर्त्तव्यमनायासःसउच्यते ॥ ६ ॥ प्रशस्ताचरणंनित्यमप्रशस्तविसर्जनम् ॥ एतद्धिमंगलंप्रोक्तंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ ७ ॥ स्तोकादपिप्रदात व्यमदीनेनांतरात्मना ॥ अहन्यहनियत्किंचिदकार्पण्यंहितत्स्मृतम् ॥ ८ ॥ यथोत्पन्नेनसंतोषःकर्त्तव्योह्यर्थवस्तुना ॥ परस्याचिंतयित्वार्थंसाऽस्पृहापरिकीर्त्तिता ॥ ॥९॥) अब यथाक्रमतैं इननवश्लोकोंकेअर्थकूं कथनकरेहैं॥दया १ क्षमा २ अनसूया ३ शौच ४ अनायास ५ मंगल ६ अकार्पण्य ७ अस्पृहा ८ यहअष्टधर्म च्यारिवर्णोंके तथाच्यारिआश्रमोंके साधारणधर्महैं इति ॥ १ ॥ अब द्वितीयश्लोककरिकै दयाकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ आपत्तिकूंप्राप्तहुआ जोकोई अन्यप्राणीहै अथवा आपणाबंधुवर्गहै अथवा आपणामित्रहै अथवा आपणाद्वेषकर्त्ताशत्रुहै ॥ तिनसर्वोंका तिसआपत्तितैं जोरक्षणकरणाहै ताकानाम दयाहै ॥ २ ॥ अब तृतीयश्लोक करिकै क्षमाकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ आपणेप्रारब्धकर्मकेवशतैं बाह्यआधिभौतिकदुःखकेप्राप्तहूए तथा आध्यात्मिकदुःखकेप्राप्तहूए तथातिनदुःखोंकेउत्पादकशत्रुआदिकोंकेप्राप्तहूए यहपुरुष जिसकरिकै क्रोधकूंनहींकरेहै तथातिनोंकूंहनन नहींकरेहै ॥ सा क्षमाकहीजावैहै ॥ ३ ॥ अब चतुर्थश्लोककरिकै अनसूयाकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ यहपुरुष जिसकरिकै गुणीपुरुषोंकेगुणोंकूं नहींहननकरेहैं ॥ तथा अन्यपुरुषकेअल्पगुणोंकीभी स्तुतिकरेहै ॥ तथा अन्यपुरुषोंकेदोषों केकथनविषे प्रीतिमाननहींहोवैहै ॥ सा अनसूया कहीजावैहै ॥ ४ ॥ अब पंचमश्लोककरिकै शौचकास्वरूप कथनकरेहै मांसमदिरादिकअभक्ष्यवस्तुवोंका जोपरित्यागहै ॥ तथा विद्यादिकगुणवालेपुरुषोंका जोसमागमहै ॥ तथा आपणेधर्मविषे जोस्थितहै ॥ इसकूं शौचकहेहैं ॥ ५ ॥ अब षष्ठेश्लोककरिकै अनायासका स्वरूप कथनकरेहैं ॥ जिसशुभकर्मकरिकैभी शरीर अत्यंतपीडाकूंप्राप्तहोवै ॥ ऐसाशुभकर्मभी इसपुरुषनैं करणानहीं सो अनायास कह्याजावैहै ॥ ६ ॥ अब सप्तमश्लोककरिकै मंगलकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ शास्त्रविहित श्रेष्ठआचरणका जोसर्वदाकरणाहै तथा शास्त्रनिषिद्धअश्रेष्ठआचरणका जोसर्वदा परित्यागहै इसीकूंही तत्त्ववेत्तामुनिजनोंनैं मंगल कह्याहै ॥ ७ ॥ अब अष्टमश्लोककरिकै अकार्पण्यकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ आपणेगृहविषे जेअन्नधनादिकपदार्थ अल्पभीहैं ॥ तिस अल्पपदार्थतैंभी दीनतातैंरहितमनकरिकै दिनादिनविषे अतिथिब्राह्मणोंकेतांई यत्किंचित्अन्नादिकपदार्थदेणे ॥ इसकूं अकार्पण्य कहेहैं ॥ ८ ॥ अब नवमश्लोककरिकै अस्पृहाकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ परकेअर्थकूं नचिंतनकरिकै इसपुरुषनैं प्रारब्धवशतैंप्राप्तहूएधनादिकपदार्थोंकरिकै जोसंतोषकरीताहै ॥ सा

अस्पृहाकहीजावैहै इति ॥ ९ ॥ यह दयातैंआदिलैकेअस्पृहापर्यंत अष्टगुणहीं गौतमऋषिनैं आत्माकेगुणरूपकरिकैकथनकरेहै ॥ तहांगौतमवचनं ॥ (अथा ष्टावात्मगुणाः दयासर्वभूतेषुक्षांतिरनसूयाशौचमनायासोमंगलमकार्पण्यमस्पृहा इति ॥) अर्थयह ॥ सर्वभूतोंविषेदया क्षांति अनसूया शौच अनायास मंगल अका र्पण्य अस्पृहा यहअष्टआत्माकेगुणहैं इति ॥ इसीप्रकारकेसाधारणधर्म महाभारतविषेभीकथनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (सत्यंदमस्तपःशौचंसंतोषोह्रीःक्षमार्जवम् ॥ ज्ञानंशमोदयाध्यानमेषधर्मःसनातनः ॥ १ ॥ सत्यंभूतहितंप्रोक्तंमनसोदमनंदमः ॥ तपःस्वधर्मवर्तित्वं शौचंसंकरवर्जनम् ॥ २ ॥ संतोषोविषयत्यागोह्रीरकार्यनि वर्त्तनम् ॥ क्षमाद्वंद्वसहिष्णुत्वमार्जवंसमचित्तता ॥ ३ ॥ ज्ञानंतत्त्वार्थसंबोधःशमश्चित्तप्रशांतता ॥ दयाभूतहितैषित्वंध्यानंनिर्विषयंमनः इति ॥ ४ ॥) अर्थयह ॥ सत्य दम तप शौच संतोष ह्री क्षमा आर्जव ज्ञान शम दया ध्यान यहसर्व ब्राह्मणादिकच्यारिवर्णोंके साधारण सनातनधर्महैं ॥ १ ॥ अब तीनश्लोकोंकरिकैं यथाक्र मतैं तिनसत्यादिकोंकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ सर्वभूतोंकाजोहितकरणाहै ताकानाम सत्यहै ॥ और मनकाजोनिग्रहहै ताकानाम दमहै ॥ और आपणेधर्मविषेजो वर्त्तणाहै ताकानाम तपहै ॥ और वर्णसंकरकाजोपरित्यागहै ताकानाम शौचहै ॥ और विषयोंका जोपरित्यागहै ताकानाम संतोषहै ॥ और शास्त्रनिषिद्धकर्म तैंजानिवृत्तिहै ताकानाम ह्रीहै ॥ और शीतउष्णादिकद्वंद्वधर्मोंकेसहनकरणेकाजोस्वभावहै ताकानाम क्षमाहै ॥ और समचित्तपणेकानाम आर्जवहै ॥ और तत्त्व अर्थकाजोसम्यक्बोधहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ औरचित्तकीजाप्रशांतताहै ताकानामशमहै ॥ और सर्वभूतोंकेहितकीजाइच्छाहै ताकानाम दयाहै ॥ और विषयों कीवासनातैं रहितजोमनहै ताकानाम ध्यानहै इति ॥ ४ ॥ इसप्रकारकेसाधारणधर्म देवलऋषिनैंभी कथनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (शौचंदानंतपःश्रद्धागुरुसे वाक्षमादया ॥ विज्ञानंविनयःसत्यमितिधर्मसमुच्चयः ॥ १ ॥ व्रतोपवासनियमैःशरीरोत्तापनंतपः । प्रत्ययोधर्मकार्येषुतथाश्रद्धेत्युदाहृता ॥ २ ॥ नास्तिह्यश्रद्दधान स्यकर्मकृत्यंप्रयोजनम् ॥ यत्पुनर्वैदिकीनांचलौकिकीनांचसर्वशः ॥ ३ ॥ धारणंसर्वविद्यानांविज्ञानमितिकीर्त्यते ॥ विनयंद्विविधंप्राहुः शश्वद्दमशमाविति ॥ ४ ॥) अर्थ यह ॥ शौच दान तप श्रद्धा गुरुसेवा क्षमा दया विज्ञान विनय सत्य यहसाधारणधर्मोंकासमुच्चयहै इति ॥ तहां व्रतउपवासनियमोंकरिकै जोशरीरकाशोषणहै ताका नाम तपहै और धर्मकार्योंविषे जोचित्तकीसावधानताहै ताकानाम श्रद्धाहै ॥ जिसकारणतैं श्रद्धातैंरहितपुरुषकूं किसीभीकर्मकाफल प्राप्तहोतानहीं ॥ इसकारणतैं इसपुरुषनैं जोजोकार्य करणा सोश्रद्धापूर्वकहींकरणा ॥ और लौकिकसर्वविद्यावोंका तथावैदिकसर्वविद्यावोंका जोधारणहै ताकानाम विज्ञानहै ॥ और शम दम यहदोप्रकारका विनय कह्याहै इति ॥ दूसरेसर्वधर्म पूर्व व्याख्यानकरिआयेहैं ॥ यातैं तिनधर्मोंकेप्रतिपादकवचन इहांलिख्येनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ यहशमदमादिकधर्म जिसपुरुष विषेपायेजावैहैं ॥ सोपुरुष जातिकरिकैशूद्रहुआभी इनशमदमादिकलक्षणोंकरिकै ब्राह्मणरूपहीं जानणेयोग्यहै ॥ और यहशमद

मादिकधर्म जिसपुरुषविषे नहींपायेजावैहैं ॥ सोपुरुष जातिकरिकै ब्राह्मणहुआभी इनशमदमादिक धर्मोंकेअभावकरिकै शूद्ररूपहीं जानणेंयोग्यहै ॥ इसीकारण तैंहीं महाभारतके आरण्यकपर्वविषे सर्पभावकूंप्राप्तहुए नहुषराजाकेप्रति युधिष्ठिरराजानैं यहवचन कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (सत्यंदानंक्षमाशीलमानृशंस्यंतपोघृणा ॥ दृश्यंतेयत्रनागेंद्रसब्राह्मणइतिस्मृतः ॥ यत्रैतल्लक्ष्यतेसर्पवृत्तंसब्राह्मणः स्मृतः ॥ यत्रैतन्नभवेत्सर्पतंशूद्रमितिनिर्दिशेत्) ॥ अर्थयह ॥ हेनागेंद्र सत्य दान क्षमा शील क्रूरभावतैंरहितपणा तप दया यहसर्वधर्म जिसपुरुषविषे देखेजावैहैं ॥ सोपुरुष ब्राह्मणहींजानणा ॥ हेसर्प यहसत्यादिकधर्म जिसपुरुषविषे नहींविद्यमानहैं ॥ तिसपुरुषकूं शूद्रहींजानणा इति ॥ यातैंयहसिद्धभया ॥ इसश्लोकविषेजेशमदमादिकधर्म कथनकरेहैं ॥ तेसर्वधर्म दैवीसंपत्‌रूपहैं ॥ सादैवीसंपत् पूर्वषोडशेअध्यायविषे विस्तारतैंवर्णन करिआयेहैं ॥ साशमदमादिरूपदैवीसंपत ब्राह्मणकूंतौं स्वभावसिद्धहै ॥ और क्षत्रियवैश्यादिकोंकूं नैमित्तिकहै ॥ याहैं ईहांकिंचित्‌मात्रभी विरोधहोवैनहीं ॥ और ब्राह्मणके याजन अध्यापन प्रतिग्रह इत्यादिकअसाधारणधर्मतौ स्मृतियोंविषेप्रसिद्धहींहै इति ॥ ४२ ॥ ❀ ॥

अबक्षत्रियके गुणस्वभावकृतकर्मोंकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) शौर्यंतेजोधृतिर्दाक्ष्यंयुद्धेचाप्यपलायनम् ॥ दानमीश्वरभावश्चक्षात्रंकर्मस्वभावजम् ॥ ४३ ॥ शौर्यं । तेजः । धृतिः । दाक्ष्यम् । युद्धे । च । अपि । अपलायनम् । दानम् । ईश्वरभावः । च । क्षात्रम् । कर्म । स्वभावजम् ॥ ४३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन शौर्य तेज धृति दाक्ष्य तथा युद्धविषे भी अपलायन दान तथा ईश्वरभाव यहसर्व स्वभावजन्य क्षत्रियजातिकेविहित कर्महैं ॥ ४३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां अत्यंतबलवान्‌पुरुषोंकेभी प्रहारकरणेविषेप्रवृत्तिरूप जोविक्रमहै ताकानाम शौर्यहै ॥ और अन्यशत्रुवोंकरिकैनहींपराभवतारूप जोप्रागल्भ्य ताकानाम तेजहै ॥ और महान्‌विपत्तीकेप्राप्तहुएभी देहइंद्रियरूप संघातका जोअव्याकुलीभावहै ताकानाम धृतिहै ॥ और शीघ्रउत्पन्नहुएकार्योंविषेभी व्यामोहतैंरहितहोइकैप्रवृत्तिरूप जोदक्षभावहै ताकानाम दाक्ष्यहै ॥ और युद्धविषे महान्‌शस्त्रोंकेप्रहारहुएभी तिसयुद्धतैंजोपीछेनहींहटणाहै ताकानाम अपलायनहै ॥ और संकोचतैंरहितहोइकै सुवर्ण गौ गृह अन्न भूमि इत्यादिकधनविषे आपणेममत्वका परित्यागकरिकै जोब्राह्मणादिकोंकेममत्वकाआपादनहै ताका नाम दानहै ॥ और प्रजाकेपालनकरणेवासतै आपणे भृत्यादिकोंकेसमीप आपणेप्रभुशक्तिकाजोप्रगटकरणाहै ताकानामईश्वरभावहै ॥ अथवा शास्त्रनिषिद्धमार्गविषेप्रवृत्तहोणेहारेदुष्टप्राणीयोंकेनियमनकरणेकीजाशक्तिहै ताकानाम ईश्वरभावहै ॥ हेअर्जुन यह शौर्यतैंआदिलैके ईश्वरभावपर्यंत सर्वकर्म क्षत्रियजातिके शास्त्रविहित

कर्महैं ॥ कैसेहैंतेकर्म स्वभावजहैं ॥ अर्थात् सत्त्वगुणहैगौणजिसविषेऐसाजोप्रधानभूतरजोगुणहैतिसरजोगुणकेस्वभावजन्यहैं इति ॥ ४३ ॥ ❀ ॥ अब वैश्य शूद्र इनदोनोंके गुणस्वभावकृतकर्मोंकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यंवैश्यकर्मस्वभावजम् ॥ परिचर्यात्मकंकर्मशूद्रस्यापिस्वभावजम् ॥ ४४ ॥ कृषिगोरक्ष्यावाणिज्यम् । वैश्यकर्म । स्वभावजम् । परिचर्यात्मकम् । कर्म । शूद्रस्य । अपि । स्वभावजम् ॥ ४४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन कृषिगौवोंकारक्षणवाणिज्ययह स्वभावजन्य वैश्यकाकर्महै तथा शूद्रका द्विजातिपुरुषोंकाशुश्रूषारूप स्वभावजन्य कर्महै ॥ ४४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां व्रीहियवादिकअन्नोंकीउत्पत्तिवासतै जोभूमिकाविलेखनहै ताकानाम कृषिहै ॥ और गौआदिकपशुवोंकाजोपालनहै ताकानाम गोरक्ष्यहै ॥ और अन्नादिकपदार्थोंका क्रयविक्रयरूपजोव्यापारहै ताकानाम वाणिज्यहैं ॥ और वृद्धिवासतैधनकाप्रयोगरूपजोकुसीदहै ॥ ताकुसीदकाभी इसवाणिज्य विषेहीअंतर्भावजानणा ॥ यहतीनों वैश्यजातिकाकर्महै कैसाहै सोकर्म स्वभावजहै ॥ अर्थात् तमोगुणहैगौणजिसविषे ऐसाजो प्रधानभूतजोरजोगुणहै॥ तारजोगुणकेस्वभावजन्यहै इति ॥ अब शूद्रके गुणस्वभावकृतकर्मकूं कथनकरेहैं (परिचर्यात्मकंइति) तहां ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंकानाम द्विजातिहै ।। ऐसेद्विजातिपुरुषोंकीशुश्रूषारूपजोकर्महै ॥ सोकर्म शूद्रजातिका स्वभावजन्यकर्महै ॥ अर्थात् रजोगुणहैगौणजिसविषे ऐसाजो प्रधानभूत तमोगुणहै ॥ तिसतमोगुणकेस्वभावजन्यहै इति ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व (शमोदमस्तपःशौचम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै ब्राह्मणादिकच्यारिवर्णोंके स्वभावजन्य गौणनामाधर्म कथनकऱ्ये ॥ तिनगौणधर्मोंतैंभिन्न दूसरेभीधर्मशास्त्रोंविषेकथनकऱ्येहैं ॥ तेधर्म भविष्यपुराणविषे यहकहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (धर्मःश्रेयःसमुद्दिष्टंश्रेयोऽभ्युदयलक्षणम् ॥ सतुपंचविधःप्रोक्तोवेदमूलःसनातनः ॥ १ ॥ वर्णधर्मः स्मृतस्त्वेक आश्रमाणामतःपरम् ॥ वर्णाश्रमस्तृतीयस्तुगौणोनैमित्तिकस्तथा ॥ २ ॥ वर्णत्वमेकमाश्रित्ययोधर्मःसंप्रवर्त्तते ॥ वर्णधर्मःसउक्तस्तुयथोपनयनंनृप ॥ ३ ॥ यस्त्वाश्रमंसमाश्रित्यअधिकारःप्रवर्त्तते ॥ सखल्वाश्रमधर्मःस्याद्भिक्षादंडादिकोयथा ॥ ४ ॥ वर्णत्वमाश्रमत्वंचयोऽधिकृत्यप्रवर्त्तते ॥ सवर्णाश्रमधर्मस्तुमौंजाद्यामेखलायथा ॥ ५ ॥ योगुणेनप्रवर्त्तेतगुणधर्मःसउच्यते ॥ यथामूर्द्धाभिषिक्तस्यप्रजानांपरिपालनम् ॥ ६ ॥ निमित्तमेकमाश्रित्ययोधर्मःसंप्रवर्त्तते ॥ नैमित्तिकःसविज्ञेयःप्रायश्चित्तविधिर्यथा ॥ ७ ॥) अब यथाक्रमतैं इनसप्तश्लोकोंकाअर्थ वर्णनकरेहैं ॥ शास्त्रविहितधर्महीं इसपुरुषकेश्रेयकासाधनहोणेतैं श्रेयरूप कथनकऱ्याहै ॥ सोश्रेय स्वर्गादिक अभ्युदयरूपहै ॥ इसप्रकारका श्रेयरूपधर्म शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं पंचप्रकारका कथन

कन्याहै ॥ कैसाहैसोधर्म वेदहै मूलजिसका ॥ याकारणतैंहीं सोधर्म सनातनहै ॥ १ ॥ तहां एकतौं वर्णधर्म होवैहै ॥ और दूसरा आश्रमधर्म होवैहै ॥ और तीसरा वर्णआश्रमधर्म होवैहै ॥ और चौथा गौणधर्म होवैहै ॥ और पंचमा नैमित्तिकधर्म होवैहै ॥ २ ॥ तहां एकब्राह्मणादिरूपवर्णमात्रकूं आश्रयकरिकै जोधर्म प्रवर्त्त होवैहै सोवर्णधर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे उपनयनरूपधर्म ब्राह्मणादिरूपवर्णमात्रकूंआश्रयकरिकै प्रवर्त्तहोवैहै ॥ यातैं सोउपनयनरूपधर्म वर्णधर्म कह्याजावैहै ॥ ३ ॥ और जोधर्म केवलआश्रममात्रकूंआश्रयकरिकैप्रवर्त्तहोवैहै ॥ सोधर्म आश्रमधर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे भिक्षादंडादिरूपधर्म आश्रमकूंआश्रयकरिकैहीं प्रवर्त्तहोवैहै ॥ यातैं सोभिक्षादंडादिरूपधर्म आश्रमधर्म कह्याजावैहै ॥४॥ औरजोधर्म वर्णकूंतथाआश्रमकूं आश्रयकरिकैप्रवर्त्तहोवैहै सोधर्म वर्णाश्रमधर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे मौंजादिकमेखलारूपधर्म वर्णकूं तथाआश्रमकूं आश्रयकरिकैप्रवर्त्तहोवैहै ॥ यातैं सोमौंजादिकमेखलारूपधर्म वर्णाश्रमधर्म कह्याजावैहै ॥ ५ ॥ और जो धर्म किसीगुणकूंआश्रयकरिकैप्रवर्त्तहोवैहै ॥ सोधर्म गौणधर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे राज्याभिषेककूंप्राप्तहूएक्षत्रियका प्रजावोंकापालनरूपधर्म गुणकूंआश्रयकरिकैप्रवर्त्त होवैहै यातैं सोप्रजाकापालनरूपधर्म गौणधर्म कह्याजावैहै ॥ ६ ॥ और जोधर्म केवल निमित्तमात्रकूंआश्रयकरिकै प्रवर्त्तहोवैहै ॥ सोधर्म नैमित्तिकधर्म कह्याजावैहै जैसे पापकीनिवृत्तिवासतै कन्याजोप्रायश्चित्तरूपधर्महै ॥ सोधर्म पापरूपनिमित्तकूंआश्रयकरिकैप्रवर्त्तहोवैहै॥ यातैं सोप्रायश्चित्तरूपधर्म नैमित्तिकधर्म कह्याजावैहै इति ॥ ७ ॥ और हारीतऋषितैं च्यारिप्रकारकाधर्म कथनकरताभयाहै ॥ तहां हारीतवचनम् ॥ (अथाश्रमिणां पृथग्धर्मोविशेषधर्मःसमानधर्मःकृत्स्नधर्मश्चेति ॥ अर्थयह ॥ आश्रमीपुरुषोंका एकतौं पृथक्धर्म होवैहै ॥ और दूसरा विशेषधर्म होवैहै ॥ और तीसरा समानधर्म होवैहै ॥ और चौथा कृत्स्नधर्म होवैहै ॥ तहां जोधर्म एकहीं आश्रमविषे पृथक् पृथक् अनुष्ठानकऱ्याजावैहै ॥ सोधर्म पृथक् धर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारिवर्णोंका स्वस्वधर्महै और जोधर्म आपणेआपणेआश्रमविशेषविषेहीं अनुष्ठानकऱ्याजावैहै ॥ सोधर्म विशेषधर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी इनच्यारिआश्रमीयोंके आपणेधर्महैं ॥ और जोधर्म च्यारीवर्णोंका तथाच्यारिआश्रमोंका समानधर्महै ॥ सोधर्म समानधर्म कह्याजावैहै ॥ तहां च्यारिवर्णोंकेसमानधर्मतौं महाभारतविषे यहकहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (आनृशंस्यमहिंसाचाप्रमादःसंविभागिता ॥ श्राद्धकर्मातिथेयंचसत्यमक्रोधएवच ॥ १ ॥ स्वेषुदारेषुसंतोषःशौचंनित्यानसूयता ॥ आत्मज्ञानंतितिक्षाचधर्मःसाधारणोनृप ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ क्रूरभावतैंरहितपणा अहिंसा अप्रमाद भूतोंकेतांईअन्नादिकोंकाविभागदेणा श्राद्धकर्म गृहविषेप्राप्तहुएअतिथिकासन्मान सत्य अक्रोध स्वस्त्रीयोंविषेसंतोष शौच असूयातैंरहितपणा आत्मज्ञान तितिक्षा यह च्यारिवर्णोंके साधारण धर्महैं इति ॥ और सर्वआश्रमोंकेसाधारणधर्मतौं पूर्व (शमोदमस्तपःशौचम्) इसश्लोकके व्याख्यानविषे कथनकरिआयेहैं ॥ और मो

क्षकाहेतुभूत जोआत्मज्ञानहै ॥ तिसआत्मज्ञानकी उत्पत्तिकेप्रतिबंधकजेप्रत्यवायहैं ॥ तिनप्रत्यवायोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै जोनिष्कामकर्मोंकाअनुष्ठानहै ॥ सो कृत्स्नधर्म कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारतैं हारीतऋषिनैं च्यारिप्रकारकाधर्मकथनकऱ्याहै इति ॥ और शास्त्रोंविषे जैसे च्यारिहींवर्ण कथनकऱ्येहैं ॥ तैसे शास्त्रोंविषे च्यारिहींआश्रम कथनकऱ्येहैं ॥ तहां गौतमवचनम् ॥ (तस्याश्रमविकल्पमेकेब्रुवते ब्रह्मचारीगृहस्थोभिक्षुर्वैखानसइति ॥) अर्थयह ॥ वेदवेत्तापुरुष तिसअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मचारी गृहस्थ भिक्षु वैखानस यहच्यारिप्रकारका आश्रमविकल्प कथनकरेहैं॥ईहां भिक्षु इसशब्दकरिकै संन्यासीकाग्रहणकरणा॥ और वैखानस इसशब्दकरिकै वानप्रस्थकाग्रहणकरणा इति॥इसप्रकारकेच्यारिआश्रमोंकूं आपस्तंबऋषिभी कथनकरताभयाहै॥तहांआपस्तंबवचनम्॥ (चत्वारआश्रमा गार्हस्थ्यमाचार्यकुलंमौनंवानप्रस्थमितितेषुसर्वेषुयथोपदेशमव्यग्रोवर्त्तमानः क्षेमंगच्छतिइति ॥) अर्थयह ॥ गार्हस्थ्य आचार्यकुल मौन वानप्रस्थ यहच्यारिहीं आश्रमहोवेहैं ॥ इनच्यारोंतैंभिन्न पंचमाकोईआश्रम होवैनहीं ॥ ईहां गार्हस्थ्यम् इसशब्दकरिकै गृहस्थआश्रमकाग्रहणकरणा ॥ और आचार्यकुलम् इसशब्दकरिकै ब्रह्मचर्यआश्रमका ग्रहणकरणा ॥ और मौनम् इसशब्दकरिकै संन्यासआश्रमका ग्रहणकरणा ॥ तिनच्यारोंआश्रमोंकेमध्यविषे जिसजिसआश्रमकेप्रति शास्त्रनें जेजेधर्म विधानकरेहैं ॥ तिसतिसआश्रमविषेस्थितहोइकै यहअधिकारीपुरुष तिन तिनधर्मोंकूं श्रद्धापूर्वकअनुष्ठानकरताहुआ शुभगतिकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसीप्रकारकेच्यारिआश्रमोंकूं वसिष्ठमुनिभी कथनकरताभयाहै ॥ तहांवसिष्ठवचनम् ॥ (चत्वारआश्रमाब्रह्मचारिगृहस्थवानप्रस्थपरिव्राजकाः इति) ॥ अर्थयह ॥ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ परिव्राजक यहच्यारीहीं आश्रमहोवेहैं ॥ ईहां परिव्राजक इसशब्दकरिकै संन्यासीकाग्रहणकरणाइति ॥ इसप्रकार श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रोंविषे जैसे च्यारिवर्णआश्रम कथनकरेहैं ॥ तैसे तिनच्यारीवर्णआश्रमोंके पृथक्पृथक्धर्मभी कथनकऱ्येहैं ॥ तैसे अज्ञानीपुरुषोंकेप्रति तिनवर्णआश्रमधर्मोंका यथायोग्यफलभी शास्त्रोंविषे कथनकऱ्याहै॥ तहां मनुभगवान्नैंभी तिनवर्णआश्रमधर्मोंकाफल कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (श्रुतिस्मृत्युदितंधर्ममनुतिष्ठन्हिमानवः ॥ इहकीर्त्तिमवाप्नोति प्रेत्यचानुत्तमंसुखम्) ॥ अर्थयह ॥ श्रुतिस्मृतिकरिकैविधानकऱ्या जोवर्णआश्रमकाधर्महै ॥ तिसधर्मकूं अनुष्ठानकरताहुआ यहपुरुष इसलोकविषेतौं कीर्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मरणतैंअनंतर स्वर्गादिकउत्तमसुखकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ सोधर्मकाफल आपस्तंबऋषिनैंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांआपस्तंबवचनम् ॥ (सर्ववर्णानांस्वधर्मानुष्ठानेनपरमपरिमितंसुखं ततःपरिवृत्तौ कर्मफलशेषेणजातिंरूपंवर्णंबलंवृत्तंमेधांप्रज्ञांद्रव्याणिधर्मानुष्ठानमितिप्रतिपद्यंते) ॥ अर्थयह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारोंवर्णोंकूं आपणेआपणेधर्मकेअनुष्ठानकरिकै उत्कृष्टअपरिमितस्वर्गादिकसुख प्राप्तहोवैहै ॥ तिसस्वर्गादिकसुखकूंभोगिकै जबी तिन कर्मीपुरुषोंकी पुनःइसभूमिलोकविषेआवृत्तिहोवैहै ॥ तबी बाकी रह्येहुएकर्मशेषकरिकै तेकर्मीपुरुष इसलोकविषे जातिकूं तथारूपकूं तथावर्णकूं तथाबलकूं

तथावृत्तकूं तथामेधाकूं तथाद्रव्योंकूं तथाधर्मानुष्ठानकूं प्राप्तहोवैहैं इति ॥ इसप्रकारकाधर्मकाफल गौतमऋषिनैंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहां गौतमवचनम् ॥ (वर्णाश्रमाश्चधर्मनिष्ठाः प्रेत्य कर्मफलमनुभूय ततःशेषेण विशिष्टदेशजातिकुलरूपायुःश्रुतवृत्तवित्तसुखमेधसोजन्मप्रतिपद्यंते विष्वंचोविपरीतानश्यंति ॥) अर्थयह ॥ ब्राह्मणादिकच्यारिवर्ण तथाब्रह्मचर्यादिकच्यारिआश्रम आपणेआपणेधर्मविषेनिष्ठावालेहुए मरणतैंअनंतर स्वर्गादिकलोकोंविषे किंचित्कर्मोंकेसुखरूपफलकूंअनुभवकरिकै तिसतैंअनंतर परिशेषतैंरह्येहुएकर्मकारिकै श्रेष्ठदेश उत्तमजाति उत्तमकुल सुंदररूप आयुष् वेदोंकाअध्ययन वृत्त वित्त सुख मेधा इत्यादिकगुणोंयुक्तजन्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और शास्त्रनिषिद्धमार्गविषेप्रवृत्तहोणेहारेपापिष्ठपुरुषतौं नरकादिकोंविषेजन्मकूंप्राप्तहोइकै विनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् तेपापीपुरुष कृमिकीटादिभावकरिकै सर्वपुरुषार्थोंतैंभ्रष्टहोवैहैं इति ॥ इसप्रकारकाधर्मकाफल हारीतऋषिनैंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (काम्यैःकेचिद्यज्ञदानैस्तपोभिर्लब्ध्वालोकान्पुनरायांतिजन्म ॥ कामैर्मुक्ताःसत्ययज्ञाःसुदानास्तपोनिष्ठा अक्षयान्यांतिलोकान् ॥ १ ॥) अर्थयह ॥ केईकसकामपुरुषतौं काम्ययज्ञदानोंकरिकै तथाकाम्यतपोंकरिकै स्वर्गादिकलोकोंकूं प्राप्तहोइकै पुनः इसमनुष्यलोकविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और कामोंकरिकैमुक्तहुए तथासत्यरूपयज्ञवाले तथाश्रेष्ठदानवाले तथा तपविषेनिष्ठावाले ऐसेकेईकनिष्कामपुरुषतौं अक्षयलोकोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ईहां कामनाकेसद्भावतैं तथाकामनाके असद्भावतैं फलकाभेद दिखायाहै इति ॥ और भविष्यपुराणविषेतौं सोकर्मोंकाफल इसप्रकारतैं कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (फलंविनाप्यनुष्ठानंनित्यानामिष्यतेस्फुटम् ॥ काम्यानांस्वफलार्थंतुदोषघातार्थमेवतु ॥ ॥ १ ॥ नैमित्तिकानांकरणेत्रिविधंकर्मणांफलम् ॥ क्षयंकेचिदुपात्तस्यदुरितस्यप्रचक्षते ॥ २ ॥ अनुत्पत्तिंतथाचान्येप्रत्यवायस्यमन्वते ॥ नित्यांक्रियांतथाचान्येआनुषंगफलांविदुः ॥ ३ ॥) अर्थयह ॥ अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्मोंकातौं फलतैंविनाभी अनुष्ठान कऱ्याजावैहै ॥ और ज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्मोंकातौं तिसतिसस्वर्गादिकफलकीप्राप्तिवासतैहीं अनुष्ठानकऱ्याजावैहै ॥ और नैमित्तिककर्मोंकातौं दोषकीनिवृत्तिवासतैहीं अनुष्ठानकऱ्याजावैहै ॥ इसप्रकारतैं कर्मोंका तीनप्रकारकाहींफलहोवैहै ॥ और केईकऋषितौं कऱ्येहुएपापकर्मकानाशहीं तिननित्यकर्मोंकाफलमानेहैं ॥ और दूसरेकेईकऋषितौं प्रत्यवायकीअनुत्पत्तिहीं तिननित्यकर्मोंकाफल मानेहैं ॥ और अन्यकेईकआपस्तंबादिकऋषितौं तिननित्यकर्मोंका स्वर्गादिरूपआनुषंगिकफलहीं अंगीकारकरेहैं ॥ सोआनुषंगिकफल (तद्यथाम्रेफलार्थेनिर्मिते) इत्यादिकवचनकरिकै पूर्वकथनकरिआयेहैं इति ॥ ३ ॥ और (त्रयोधर्मस्कंधा यज्ञोऽध्ययनंदानमिति प्रथमस्तपएवद्वितीयो ब्रह्मचर्याचार्यकुलवासीतृतीयोऽत्यंतमात्मानमाचार्यकुलेऽवसादयन्निति) यहश्रुतितौं गृहस्थ वानप्रस्थ ब्रह्मचारी इनतीनआश्रमोंकूं कथनकरिकै पश्चात् (सर्वएतेपुण्यलोकाभवंति) इसवचनकरिकै तिनतीनोंआश्रमोंकूं अंतःकरणकीशुद्धिकेअभावहुए मोक्षकीअप्राप्ति कथनकरिकै पश्चात् शुद्धअंतःकरणवालेइनतीं

नोंहीं आश्रमोंकूं परिव्राजकभावकरिकै ज्ञाननिष्ठाकेप्राप्तहुए मोक्षकीप्राप्तिकूं (ब्रह्मसंस्थोऽमृतत्वमेति) इसवचनकारिकै कहतीभईहै ॥ इसप्रकारकीव्यवस्थाके सिद्धहुए ॥ जोमोक्षकीइच्छावान् ब्रह्मचारी वा गृहस्थ वा वानप्रस्थ फलकीइच्छाकापरित्यागकरिकै तथाभगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै शास्त्रविहित आपणे वर्ण आश्रमकेकर्मोंकूंकरैहै ॥ सोमुमुक्षु ब्रह्मचारी वा गृहस्थ वा वानप्रस्थ अवश्यकरिकै संसिद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) स्वेस्वेकर्मण्यभिरतःसंसिद्धिंलभतेनरः ॥ स्वकर्मनिरतःसिद्धिंयथाविंदतितच्छृणु ॥ ४५ ॥ स्वे । स्वे । कर्मणि । अभिरतः । संसिद्धिम् । लभते । नरः । स्वकर्मनिरतः । सिद्धिं । यथा । विंदति । तत् । शृणु ॥ ४५ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन यहमनुष्य आपणे आपणे कर्मविषे निष्ठावान्हुआ संसिद्धिकूं प्राप्तहोवैहै आपणेकर्मविषेनिष्ठावान्पुरुष जिसप्रकारतैं सं सिद्धिकूं प्राप्तहोवैहै तिसप्रकारकूं तूं श्रवणकर ॥ ४५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं तिसतिसवर्णआश्रमकेप्रति जोजोकर्म विधानकऱ्याहै ॥ तिसआपणे आपणेकर्मविषे अभिरतहुआ यहपुरुष अर्थात् तिसआपणेआपणेकर्मके सम्यक्अनुष्ठानपरायणहुआ यहवर्णाश्रमकाअभिमानीमनुष्य संसिद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् देहइंद्रियरूपसंघातकीअशुद्धिकेक्षयकरिकै सम्यक्ज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यताकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांवेदोंविषे जितनाकीकर्मकांडहै ॥ तिससर्वकर्मकांडका वर्णाश्रमकाअभिमानीमनुष्यहीं अधिकारीहोवैहै ॥ और देवादिकोंविषे सोवर्णआश्रमकाअभिमानहैनहीं ॥ यातैं कर्मकांडकरिकैप्रतिपादित तिनवर्णाश्रमकेधर्मोंविषे तिनदेवादिकोंकूंअधिकारहैनहीं ॥ इसअर्थके बोधनकरणेवासतैं ईहां श्रीभगवान्नैं मनुष्यकावाचक (नरः) यहशब्द कथनकऱ्याहै ॥ और वर्णाश्रमकेअभिमानकीअपेक्षातैं रहितसगुणब्रह्मकीउपासना वोंविषे तथानिर्गुणब्रह्मविद्याविषेतौ तिनदेवादिकोंकाभी अधिकारहै ॥ यहवार्त्ता देवताधिकरणविषे श्रीभाष्यकारोंनैं विस्तारतैंवर्णनकरीहै इति ॥ शंका ॥ हेभग वन् (कर्मणाबध्यतेजंतुः) इत्यादिकशास्त्रकेवचनोंतैं कर्मोंकूं बंधकाहेतुपणाहीं सिद्धहोवैहै ॥ यातैं बंधकेहेतुरूप तिनकर्मोंविषे मोक्षकाहेतुपणा कैसेसंभवैगा ॥ किंतु नहींसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ यद्यपि कर्म बंधकेहेतुहैं ॥ तथापि उपायविषेतैं तेकर्म मोक्षकेहेतुहोवैहैं ॥ इसप्रकारके उत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै (स्वकर्मनिरतःइति) हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष शास्त्रविहित आपणेवर्णआश्रमकर्मविषे निष्ठावालाहुआ जिसप्रकारतैं तिससंसिद्धिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिस प्रकारकूं तूंअबी श्रवणकर ॥ अर्थात् श्रवणकरिकै तिसप्रकारकूं तूं निश्चयकर इति ॥ ४५ ॥ ❋ ॥ अब श्रीभगवान् तिसप्रकारकूं कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) यतःप्रवृत्तिर्भूतानांयेनसर्वमिदंततम् ॥ स्वकर्मणातमभ्यर्च्यसिद्धिंविंदतिमानवः ॥ ४६ ॥ यतः । प्रवृत्तिः । भूता

नां । येन । सर्वम् । इदं । ततं । स्वकर्मणा । तम् । अभ्यर्च्य । सिद्धिं । विंदति । मानवः ॥ ४६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिस ईश्वरतैं आकाशादिकभूतोंकी उत्पत्ति होवैहै तथाजिसईश्वरनैं यह सर्वविश्व व्याप्तकन्याहै तिसईश्वरकूं स्वकर्मकरिकै संतुष्टकरिकै यहमनुष्य अंतःकरणकीशुद्धिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ४६ ॥ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मायाउपाधिकचैतन्यआनंदघनरूप तथासर्वज्ञरूप तथासर्वशक्तिसंपन्न तथासर्वजगत्का अभिन्ननिमित्तउपादानकरणरूप ऐसेजिसअंतर्यामी ईश्वरतैं आकाशादिकसर्वभूतोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ अर्थात् जैसे स्वप्नविषे रथादिकपदार्थोंकी मायामयी उत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे जिसअंतर्यामीईश्वरतैं इन आकाशादिकसर्वभूतोंकी मायामयीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तथा जिसएकअंतर्यामीईश्वरनैं आपणेसत्रूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै यहसर्वदृश्यप्रपंच तीनोंकालविषे व्याप्तकन्याहै ॥ अर्थात् जिसअंतर्यामीचैतन्यनै यहसर्वकल्पितप्रपंच आपणेअधिष्ठानस्वरूपविषे अंतर्भावकन्याहै॥ जिसकारणतैं कल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंअतिरिक्तहोवैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्प रज्जुरूपअधिष्ठानतैंअतिरिक्तहोवैनहीं ॥ तैसे अधिष्ठानचैतन्यविषेकल्पित यहसर्वप्रपंच तिसअधिष्ठानचैतन्यतैंअतिरिक्त है नहीं ।। तहां अंतर्यामीईश्वरतैंहीं सर्वजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय होवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ।। तहांश्रुति ।। (यतोवाइमानिभूतानिजायंते येनजातानिजीवंति यत्प्रयंत्यभिसंविशंति तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्मेति)।। अर्थयह ।। हेभृगु जिसकारणरूपवस्तुतैं यहआकाशादिकसर्वभूत उत्पन्नहोवैहैं ।। तथा उत्पन्नहुएतेसर्वभूत जिसकारणरूपवस्तुकरिकै जीवतेहैं ।। तथा विनाशकूंप्राप्तहूए तेसर्वभूत जिसकारणरूपवस्तुविषे लयकूंप्राप्तहोवैहैं ।। सो सर्वजगत्काअभिन्ननिमित्तउपादानकारणरूपवस्तुकूंहीं तूं ब्रह्मरूपजान ॥ ऐसेकारणरूपब्रह्मका तूं विचारकर इति ॥ इसश्रुतितैं तिसअंतर्यामीईश्वरतैंहींसर्वजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय प्रतीतहोवैहै ॥ और (मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरम्) इत्यादिकश्रुतितैं तिसअंतर्यामीईश्वरविषे मायारूपउपाधिकीप्रतीतिहोवैहै और (यःसर्वज्ञःसर्ववित्) इसश्रुतितैं तिसअंतर्यामीईश्वरविषे सर्वज्ञपणा प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं (यतःप्रवृत्तिर्भूतानांयेनसर्वमिदंततम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं श्रुतिप्रतिपादितअर्थहीं कथन कन्याहै इति ॥ ऐसेसर्वजगत्केउपादानकारणरूप तथानिमित्तकारणरूप अंतर्यामीईश्वरकूं यहअधिकारीपुरुष शास्त्रविहितआपणेवर्णआश्रमकेकर्मकरिकै संतुष्टकरिकै तिसअंतर्यामीईश्वरकेप्रसादतैं सिद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् ब्रह्मात्मैक्यज्ञाननिष्ठाकीयोग्यतारूप अंतःकरणकीशुद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और वर्णाश्रमकर्मोंकेअनधिकारी जेदेवादिकहैं ॥ तेदेवादिकतौं केवल उपासनामात्रकरिकैहीं तिससिद्धिकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ ४६ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं आपणेआपणेवर्णआश्रमकाधर्महीं इनमनुष्योंकूं परमेश्वरकेप्रसादकाहेतुहै ॥ इसकारणतैं इनअधिकारीमनुष्योंनैं तिसस्वधर्मकाहीं अनुष्ठानकरणा ॥ इसअर्थकूं अबश्रीभगवान्कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) श्रेयान्स्वधर्मोविगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ॥ स्वभावनियतंकर्मकुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषम् ॥४७॥श्रेयान्। स्वधर्मः। विगुणः।परधर्मात्। स्वनुष्ठितात्। स्वभावनियतं। कर्म। कुर्वन्। नं। आप्नोति। किल्बिषम् ॥४७॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सम्यक्अनुष्ठानकऱ्येहूए परधर्मतैं असम्यक्अनुष्ठानकऱ्याहूआ स्वधर्म अतिश्रेष्ठहोवैहै स्वभावजन्य कर्मकूं कर्ताहूआ यहपुरुष पापकूं नहीं प्राप्तहोता ॥ ४७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मंत्र द्रव्य देवता आदिकसर्वअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वक सम्यक् अनुष्ठानकऱ्याहूआ जोपरधर्महै ॥ तिसपरधर्मतैं किंचित्मंत्रादिकअंगोंतैंरहित असम्यक्अनुष्ठानकऱ्याहूआभीस्वधर्म अत्यंतश्रेष्ठहोवैहै ॥ यातैं यहयुद्धादिरूपधर्म यद्यपि हिंसाकरिकैयुक्तहै ॥ और भिक्षाअटनादिरूपधर्म ताहिंसादोषतैंरहित है ॥ तथापि तैंक्षत्रियराजानैं सोयुद्धादिरूपस्वधर्महीं अनुष्ठान करणेयोग्यहै ॥ सोभिक्षाअटनादिरूपपरधर्म तुमारेकूं अनुष्ठानकरणेयोग्य नहींहै ॥ यहवार्त्ता (स्वधर्मेनिधनंश्रेयःपरधर्मोभयावहः) इत्यादिकवचनकरिकै पूर्वभी हम तुमारेप्रति कथनकरिआयेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् यद्यपि युद्धादिक हमारा स्वधर्महै ॥ तथापि सोयुद्धादिकर्म बांधवोंकीहिंसाजन्य प्रत्यवायकाहेतुहै ॥ यातैं सोयुद्धादिरूपकर्म हमारेकूं अनुष्ठानकरणेयोग्यनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् तिसयुद्धरूप कर्मविषे प्रत्यवायकीहेतुताकूं निषेधकरेहै ॥ (स्वभावनियतमिति) हेअर्जुन पूर्व (शौर्यंतेजोधृतिर्दाक्ष्यम्) इत्यादिकवचनकरिकै कथनकऱ्याजो क्षत्रियराजाका गुणकृतस्वभावहै ॥ तिसस्वभावकरिकैजन्ययुद्धादिककर्मकूं करताहूआ यहक्षत्रियराजा बांधवोंकीहिंसानिमित्तकपापकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता (सुखदुःखेसमेकृत्वा) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वभी विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) इसवेदवचननैं यज्ञका अंगरूपकरिकै विधानकरीजा पशुकीहिंसाहै ॥ साहिंसावेदविहितहोणेतैं जैसे प्रत्यवायकाहेतुनहींहै ॥ तैसे वेदभगवान्नैं युद्धकाअंगरूपकरिकै विधानकरीजा बांधवादिकोंकीहिंसाहै ॥ साहिंसाभी वेदविहितहोणेतैं प्रत्यवायकाहेतुनहींहै ॥ यहवार्त्ता अनेकवार कथनकरिआयेहैं ॥ ४७ ॥ ❁ ॥ जिसकारणतैं शास्त्रविहितहिंसादिकोंकूं प्रत्यवायकाहेतुपणा नहींहै ॥ तथा परकाधर्म भयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा सामान्यदोषकरिकै सर्वकर्म दुष्टहींहैं ॥ तिसकारणतैं आत्मज्ञानतैंरहित वर्णआश्रमकाअभिमानीपुरुष स्वभावजन्य विहित कर्मकूं कदाचित्भी नहींपरित्यागकरै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सहजंकर्मकौंतेयसदोषमपिनत्यजेत् ॥ सर्वारंभाहिदोषेणधूमेनाग्निरिवावृताः ॥४८॥ सहजम्। कर्म। कौंतेय। सदोषम्। अपि। न। त्यजेत्। सर्वारंभाः। हि। दोषेण। धूमेन। अग्निः। इव। आवृताः ॥ ४८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकौंतेय स्वभा

वजन्य संदोष भी कर्मकूं यहपुरुष नहीं परित्यागकरै जिसकारणतैं सर्वहींधर्म धूमकरिकै अग्निकी न्यांई सामान्यदोषकरिकै आवृतहैं ॥ ४८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तस्वभावकरिकैजन्य जो स्ववर्णआश्रमकाकर्महै ॥ सोकर्मसदोषभीहोवै ॥ अर्थात् शास्त्रविहितहिंसारूपदोषकरिकैयुक्तभीहोवै ॥ ऐसेसदोषभी ज्योतिष्टोमयुद्धादिक स्वकर्मकूं अंतःकरणकीशुद्धितैंपूर्व तूं अर्जुन वाअन्यकोईपुरुष नहींपरित्यागकरै ॥ जिसकारणतैं आत्मज्ञानतैंरहित कोईभी अज्ञानीपुरुष एकक्षणमात्रभी कर्मोंकूंनहींकरिकै स्थितहोणेकूंसमर्थहोतानहीं ॥ किंतु सोअज्ञानीपुरुष यत्किंचित्कर्मकूंकरताहुआहीं स्थितहोवैहै ॥ हेअर्जुन यहपुरुष स्वधर्मकापरित्यागकरिकै परकेधर्मकूंअनुष्ठानकरताहुआभी दोषतैंमुक्तहोतानहीं ॥ काहेतैं जैसे यहलोकप्रसिद्धअग्नि धूमकरिकैआवृतहोवैहै ॥ तैसे जितनैंकी स्वधर्महैं ॥ तथाजितनैंकी परधर्महैं ॥ तेसर्वहींधर्म सत्त्वादिकतीनगुणरूपसामान्यदोषकरिकैव्याप्तहैं ॥ यातैं तेसर्वहींधर्म दोषयुक्तहींहैं ॥ यहवार्त्ता पूर्व (परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्चदुःखमेवसर्वंविवेकिनः) इसयोगसूत्रकरिकै कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं जैसे विषतैंउत्पन्नहुआकृमि विषकूं नहींपरित्यागकरैहै तैसे यहअनात्मज्ञपुरुष अगतितैं कर्मोंकूंकरताहुआ त्रिगुणात्मकसामान्यदोषकरिकै तथाबंधुवधादिनिमित्तकविशेषदोषकरिकै युक्तभी स्वभावजन्ययुद्धादिकर्मकूं कदाचित्भी नहींपरित्यागकरै ॥ जिसकारणतैं यहअज्ञानीपुरुष सर्वकर्मोंकेत्यागकरणेविषे समर्थहैनहीं ॥ और सर्वकर्मोंकेत्यागकरणेविषेसमर्थ जोशुद्धअंतःकरणवालापुरुषहै ॥ सोतौं तिनसर्वकर्मोंका परित्यागहींकरै ॥ इति ॥ ४८ ॥ ❀ ॥ तहां अशुद्धअंतःकरणवाला अनात्मज्ञपुरुष जो सर्वकर्मोंकेत्यागकरणेविषे समर्थनहींहै ॥ तौं तिनसर्वकर्मोंकेत्यागकरणेविषे कौंनपुरुष समर्थहै ॥ ऐसीजिज्ञासाकेप्राप्तहुए कहेहैं ॥ जोअधिकारीपुरुष नित्यअनित्यवस्तुकेविवेकवालाहै॥अर्थात् एकआत्माहीं नित्यहै आत्मातैंभिन्न देहादिकसर्वअनात्मपदार्थ अनित्यहैं इसप्रकारकेनित्यअनित्यवस्तुकेविवेकवालाहै॥ और विवेकवालाहोणेतैंहीं जोपुरुष वैराग्यवालाहै ॥ अर्थात् इसलोकके जितनैंकीविषयभोगहैं तथास्वर्गादिलोकोंके जितनैंकीविषयभोगहैं तिनसर्वविषयभोगोंविषे जोपुरुष रागतैंरहितहै ॥ और वैराग्यवाला होणेतैंहीं जोपुरुष शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधान इनषट्संपत्तिरूपसाधनकरिकैसंपन्नहै ॥ तहां विषयोंतैं मनकूंरोकणा याकूं शमकहेहैं ॥ और श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंतैंरोकणा याकूं दमकहेहैं ॥ और स्त्रीपुत्रधनादिकसाधनोंसहित सर्वकर्मोंकाजोपरित्यागहै ताकूं उपरतिकहेहैं ॥ और शीतउष्ण क्षुधापिपासा इत्यादिक द्वंद्वधर्मोंकाजोसहनहै ताकानाम तितिक्षाहै ॥ और वेदगुरुवोंकेवचनोंविषेजोविश्वासहै ताकानाम श्रद्धाहै ॥ और मनकेविक्षेपकीजानिवृत्तिहै ताकूं समाधानकहेहैं ॥ इसप्रकारके शमदमादिकषट्संपत्तिरूपसाधनकरिकै जोपुरुष संपन्नहै ॥ तथा जोपुरुष

भगवत्अर्पितनिष्कामककर्मोंकरिकै अशुद्धिकीनिवृत्तिद्वारा अंतःकरणकेशुद्धिकूंप्राप्तहुआहै ॥ तथा जोपुरुष शुद्धब्रह्मात्मऐक्यकीजिज्ञासाकूंप्राप्तहुआहै ॥ ऐसामुमुक्षु जनतैं स्वइष्टमोक्षकाहेतुभूतब्रह्मात्मऐक्यज्ञानकेसाधनरूप वेदांतवाक्योंकेश्रवणादिकोंकेकरणेवासतै सर्वविक्षेपोंकीनिवृत्तिद्वारा तिनश्रवणादिकोंकाअंगरूप तथाश्रुति स्मृतिकरिकैविहित ऐसेसर्वकर्मोंकेसंन्यासकूं अवश्यकरिकेकरै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषे तथास्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्मादेवंविच्छांतोदांतउपर तस्तितिक्षुःसमाहितोभूत्वात्मन्येवात्मानंपश्येत्) ॥ अर्थयह ॥ जिसकारणतैं शमदमादिकसाधनोंतैंरहितपुरुषकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ तिसकारणतैं यह अधिकारीपुरुष शमयुक्तहोइकै तथादमयुक्तहोइकै तथाउपरतिवालाहोइकै तथातितिक्षावालाहोइकै तथासमाधानवालाहोइकै आपणेअंतःकरणविषे आत्माकूं साक्षात्कारकरै ॥ ईहां उपरतः इसशब्दकरिकै सर्वकर्मोंकासंन्यास कथनकऱ्याहै ॥ अर्थात् शमदमादिकसाधनपूर्वक सर्वकर्मोंकेसंन्यासवालाहोइकै यहअधिकारी पुरुष आत्माकेसाक्षात्कारवासतै वेदांतवाक्योंकूं विचारकरै इति ॥ यहवार्त्ता अन्यश्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (संन्यस्यश्रवणंकुर्यात्) अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर विधिपूर्वक सर्वकर्मोंकासंन्यासकरिकैहीं वेदांतवाक्योंकाश्रवणकरै इति ॥ तहांस्मृति ॥ (सत्यानृतेसुखदुःखेविद्वा निमंलोकममुंचपरित्यज्यात्मानमन्विच्छेत्) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष सत्य अनृत सुख दुःख यहलोक परलोक इत्यादिकसर्वकापरित्यागकरिकै आत्म साक्षात्कारवासतै वेदांतशास्त्रकाविचारकरै इति ॥ इसप्रकारका परमहंसपरिव्राजकहीं (ब्रह्मसंस्थोऽमृतत्वमेति) इसश्रुतिनैं ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ इनतीनआ श्रमोंतैंविलक्षणरूपकरिकै प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ और इसप्रकारका परमहंससंन्यासीहीं परमहंसपरिव्राजककृतकृत्यगुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकेविचारकरणे विषेसमर्थहोवैहै ॥ तथा इसी मुमुक्षुपरमहंससंन्यासीकूं उद्देशकरिकै श्रीव्यासभगवान्नैं (अथातोब्रह्मजिज्ञासा) इत्यादिक च्यारिअध्यायरूप उत्तरमीमांसाशास्त्र प्रारंभकऱ्याहै ॥ इसप्रकारके शुद्धअंतःकरणवाले मुमुक्षुजनका अब श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) असक्तबुद्धिःसर्वत्रजितात्माविगतस्पृहः ॥ नैष्कर्म्यसिद्धिंपरमांसंन्यासेनाधिगच्छति ॥ ४९ ॥ असक्तबुद्धिः । सर्वत्र । जितात्मा । विगतस्पृहः । नैष्कर्म्यसिद्धिम् । परमाम् । संन्यासेन । अधिगच्छति ॥ ४९ ॥ (इतिपद०) ॥ हेअर्जुन सर्वत्र अस क्तबुद्धि तथाजितात्मा तथाविगतस्पृह ऐसाअधिकारीपुरुष परम नैष्कर्म्यसिद्धिकूं संन्यासकारिकै प्राप्तहोवैहै ॥४९॥ (इतिप०)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन आसक्तिकेनिमित्तरूप जे धन स्त्री पुत्र गृह इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तिनधनादिकपदार्थोंविषेभीजोपुरुष असक्तबुद्धिहै ॥ अर्थात् मैं इनधनादिक पदार्थोंकाहूं तथा यहधनादिकपदार्थ मेरेहैं इसप्रकारकेअभिष्वंगतैंरहितहैबुद्धिजिसकी ताकानाम असक्तबुद्धिहै ॥ अब तिसअसक्तबुद्धिपणेविषे हेतुकहेहैं (जिता

त्माइति) ईहां आत्माशब्दकरिकैअंतःकरणकाग्रहणकरणा ॥ सोअंतःकरण सर्वविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै वशकऱ्याहैजिसनैं ताकानाम जितात्माहै ॥ ऐसाजिता त्माहोणेतैंहीं जोपुरुष सर्वत्र असक्तबुद्धिहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् विषयरागकेविद्यमानहूए तिनविषयोंतैंअंतःकरणकीनिवृत्ति कैसेसंभवैगी ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (विगतस्पृहः इति) हेअर्जुन जोपुरुष देहजीवनकेहेतुभूतअन्नपानादिकभोगोंविषेभी इच्छातैंरहितहै ॥ अर्थात् सर्वदृश्यपदार्थोंविषे दोषदर्शनक रिकै तथानित्यबोधपरमानंदरूपमोक्षगुणोंकेदर्शनकरिकै जोपुरुष सर्वअनात्मपदार्थोंतैंविरक्तहूआहै ॥ इसप्रकारका जो शुद्धअंतःकरणवालापुरुष (स्वकर्मणातमभ्य र्च्यसिद्धिंविंदतिमानवः) इसपूर्वउक्तवचनकरिकैप्रतिपादित कर्मजन्य अपरमसिद्धिकूंप्राप्तहूआहै ॥ अर्थात् आत्मज्ञानकासाधनरूप जोवेदांतवाक्योंकाविचारहै ता विचारका अधिकाररूप तथाज्ञाननिष्ठाकीयोग्यतारूप ऐसीजा निष्कामकर्मजन्यअंतःकरणकीशुद्धिरूप अपरमसिद्धिहै तिसअपरमसिद्धिकूं जोपुरुष प्राप्तहूआहै ॥ सोशुद्धअंतःकरणवालाअधिकारीपुरुष शिखायज्ञोपवीतादिकसहित सर्वकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकरिकै परमनैष्कर्म्यसिद्धिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सोअधिकारी पुरुष संन्यासपूर्वकवेदांतविचारकरिकै परमनैष्कर्म्यसिद्धिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां (निष्कलंनिष्क्रियंशांतम्) इसश्रुतिनैं ब्रह्मकूं क्रियारूपकर्मतैंरहित कथनकऱ्याहै ॥ यातैं ब्रह्मकानाम निष्कर्महै ॥ तिसनिष्कर्मकूंविषयकरणेहारा जो वेदांतविचारतैंउत्पन्नहूआ आत्मज्ञानहै ॥ ताज्ञानकानाम नैष्कर्म्यहै ॥ अर्थात् अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेआत्मसाक्षात्कारकानाम नैष्कर्म्यहै ॥ ऐसीनैष्कर्म्यरूपजासिद्धिहै ॥ कैसीहैसानैष्कर्म्यसिद्धि परमाहै ॥ अर्थात् पूर्वउक्त निष्कामकर्मजन्य अंतःकर णकीशुद्धिरूप अपरमसिद्धिकाफलरूपहोणेतैं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ ऐसीआत्मसाक्षात्काररूप परमनैष्कर्म्यसिद्धिकूं यहअधिकारीपुरुष संन्यासपूर्वक श्रवणादिकसाधनों केपरिपाककरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ अथवा (संन्यासेन) इसवचनविषेस्थित तृतीयाविभक्ति इत्थंभूतलक्षणविषेहै ॥ ताकरिकैयहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ सर्वकर्मोंकासं न्यासरूप ऐसीजा नैष्कर्म्यसिद्धिहै ॥ अर्थात् ब्रह्मसाक्षात्कारकीयोग्यतारूप जानैर्गुण्यलक्षणसिद्धिहै ॥ कैसीहैसासिद्धि परमहै ॥ अर्थात् पूर्वउक्तअंतःकरणकीशु द्धिरूप सात्त्विकसिद्धिकाफलरूपहोणेतैं श्रेष्ठहै ॥ ऐसीसर्वकर्मोंकासंन्यासरूप परमनैष्कर्म्यसिद्धिकूं सोअसक्तबुद्धिजितात्मापुरुषहीं प्राप्तहोवैहै इति ॥ ४९ ॥ तहां पूर्व कथनकऱ्येजेसाधनहैं ॥ तिनसर्वसाधनोंकरिकैसंपन्न सर्वकर्मोंकेसंन्यासीकूं ब्रह्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे अब साधनोंकेक्रमकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सिद्धिंप्राप्तोयथाब्रह्मतथाप्नोतिनिबोधमे॥समासेनैवकौंतेयनिष्ठाज्ञानस्ययापरा॥५०॥सिद्धिं। प्राप्तः। यथा। ब्रह्म। तथा। आप्नोति। निबोध। मे। समासेन। एव। कौंतेय। निष्ठा। ज्ञानस्य। या। परा॥५०॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेकौंतेय सिद्धिंकूं प्राप्त

हूआ यहपुरुष जिंसप्रकारकरिकै ब्रह्मकूं साक्षात्कारकरैहै तिसँप्रकारकूं तूं मेरेवचनतैं संक्षेपकरिकै हीं निश्चयँकर तथातिस सिद्धिकूंप्राप्तहुएपुरुषकी जो ज्ञानकी परा निष्ठाहै तिसकूंभी तूंनिश्चयकर ॥ ५० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंसैं अंतर्यामीईश्वरकूंआराधनकरिकै तिसईश्वरकेप्रसादतै उत्पन्नहुईजा सर्वकर्मोंकेत्यागपर्यंत तथाज्ञानकेउत्पत्तिकी योग्यतारूप अंतःकरणकीशुद्धिरूप सिद्धिहै॥ऐसीसिद्धिकूंप्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष जैसे ब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै॥ अर्थात् जिसप्रकारकरिकै प्रत्यक्अभिन्नशुद्धब्रह्मकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ तिसप्रकारको तूंअर्जुन अनुष्ठानकरणेवासतै मेरेवचनतैं निश्चयकर ॥ शंका ॥ हेभगवन् बहुतविस्तारकरिकै कथन कऱ्याहुआ सोप्रकार हमारीबुद्धिविषे कैसेआरूढहोवैगा ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (समासेनैवइति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकेवचनतैं संक्षेपकरिकैहीं तूंतिसप्रकारकूं निश्चयकर ॥ नबहुतविस्तारकरिकै ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसप्रकारकेनिश्चयकरणेकरिकै क्यासिद्धहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (निष्ठा ज्ञानस्ययापराइति) हेअर्जुन श्रवणमननरूपविचारकरिकै उत्पन्नभयाजो आत्मज्ञानहै ॥ तिसज्ञानकीजा परिसमाप्तिरूपनिष्ठाहै ॥ अर्थात् तिसनिष्ठातैं अनंतरदूसराकोईसाधन अनुष्ठानकऱ्याजावैनहीं ॥ कैसीहैजानिष्ठा पराहैं ॥ अर्थात् अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ अथवा साक्षात्मोक्षकाहेतुहोणेतैं जानिष्ठा सर्वकेअं तविषेस्थितहै ॥ हेअर्जुन तिसपूर्वउक्तसिद्धिकूं प्राप्तहुए पुरुषकी इसप्रकारकी जाब्रह्मकीप्राप्तिरूप पराज्ञाननिष्ठाहै तिसज्ञाननिष्ठाकूंभी तूं मेरेवचनतैं संक्षेपकरिकै निश्चयकर इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (निष्ठाज्ञानस्ययापरा) यहब्रह्मकाहींविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ तहां या कहिये जोप्राप्यब्रह्मज्ञानकीपरानिष्ठाहै ॥ अर्थात् जिसब्रह्मकी अपेक्षाकरिकै दूसराकोई पदार्थ सर्वतैं अंतरज्ञेय रूपनहींहै ॥ ऐसे ज्ञानकी परानिष्ठारूप ब्रह्मकूं यहशुद्ध अंतःकरणवाला मुमुक्षु जिसप्रकारकरिकै साक्षात्कारकरैहै ॥ तिसप्रकारकूं तूं हमारेवचनतैं संक्षेपकरिकै निश्चयकर इति ॥ ५० ॥ ❁ ॥ अब श्रीभगवान् तिसप्रकार सहित इसज्ञाननिष्ठाका कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) बुद्ध्याविशुद्धयायुक्तोधृत्यात्मानंनियम्यच ॥ शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वारागद्वेषौव्युदस्यच ॥५१॥ बुद्ध्या । विशुद्धया । युक्तः । धृत्या । आत्मानं । नियम्य । च । शब्दादीन् । विषयान् । त्यक्त्वा । रागद्वेषौ । व्युदस्य । च ॥५१॥(इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन विशुद्ध बुद्धिकरिकै युक्तहुआ यहपुरुष धैर्यकरिकै इससंघातकूं नियमकरिकै तथा शब्दादिक विषयोंकूं परित्यागकरिकै तथा रागद्वेषकूं परित्यागकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ५१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वसंशयाविपर्ययोंतैंशून्यहोणेतैं विशुद्ध ऐसीजा अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेवेदांतवाक्योंजन्य ब्रह्मात्म ऐक्यविषयक बुद्धिकीवृत्तिहैं ॥ ता बुद्धिवृत्तिकरिकै सर्वदा युक्तहुआ यहअधिकारीपुरुष धैर्यरूपधृतिकरिकै शरीरइंद्रियसंघातरूपआत्माकूं नियमनकरिकै ॥ अर्थात् तिससंघातकूं शास्त्रनिषिद्धमार्गकीप्रवृत्तितैंनिवृत्तकरिकै अंतरआत्मापरायणकरिकै ॥ ईहां (आत्मानंनियम्यच) इसवचनाविषेस्थितजो चयहशब्दहै ॥ तिसचशब्दकरिकै योगशास्त्रविषे कथनकरनेहुए दूसरेसाधनोंकाभी समुच्चयकरणा ॥ तथा शब्दादिकविषयोंकूं परित्यागकरिकै ॥ अर्थात् शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहजेपंचविषयहैं ॥ जेशब्दादिक विषय आपणेभोगकरिकै इसभोक्तापुरुषके बंधनकरणेविषेसमर्थहैं ॥ तथा जेशब्दादिकविषय ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतै शरीरकीस्थितिमात्ररूपप्रयोजनविषे उपयोगीनहींहै ॥ तथा जेशब्दादिकविषय शास्त्रकरिकैभीनिषिद्धनहींहैं ॥ ऐसेशब्दादिकविषयोंकूंभी परित्यागकरिकै ॥ और जेशब्दादिकविषय इसशरीरकी स्थितिमात्रविषे उपयोगीहैं ॥ तिनविषयोंविषेभी रागद्वेषकूंपरित्यागकरिकै ॥ ईहां (रागद्वेषौव्युदस्यच) इसवचनविषेस्थितजो च यहशब्दहै ॥ तिसचशब्दतैं दूसरेभीजितनैंकीज्ञानकेविक्षेपकरणेहारेहैं तिनसर्वोकेपरित्यागका ग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार विशुद्धबुद्धिकरिकैयुक्तहुआ यहअधिकारीपुरुष धृतिसैं संघातकूं नियमनकरिकै तथाशब्दादिकविषयोंकापरित्यागकरिकै तथारागद्वेषादिकोंका परित्यागकरिकै विविक्तसेवीआदिकविशेषणोंकरिकैयुक्तहोवे ॥ सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारवासतै समर्थहोवेहैं ॥ इसरीतितैं इसश्लोकका तथाअगलेश्लोकका (ब्रह्मभूयायकल्पते) इसतृतीयश्लोककेवचनसाथि अन्वय करणा इति ॥ ५१ ॥ ❀ ॥

(मू०श्लो०) विविक्तसेवीलघ्वाशीयतवाक्कायमानसः ॥ ध्यानयोगपरोनित्यंवैराग्यंसमुपाश्रितः ॥ ५२ ॥ विविक्तसेवी । लघ्वाशी । यतवाक्कायमानसः । ध्यानयोगपरः । नित्यम् । वैराग्यम् । समुपाश्रितः ॥५२॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष एकांतदेशकासेवनकरणेहाराहै तथापरिमितभोजनकरणेहाराहै तथाजीत्येहैंवाक्कायमनजिसनैं तथानित्यहीं ध्यानयोगपरायणहै तथावैराग्यकूं प्राप्तहुआहै सोपुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारवासतैं समर्थहोवेहै ॥ ५२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ जनोंकेसंसर्गतैंरहित तथापवित्र ऐसाजो कोईवनहै ॥ अथवा पर्वतकीगुहादिकहै ताकानाम विविक्तदेशहै ॥ ऐसेविविक्तदेशकेसेवनकरणेकाहैस्वभावजिसका ताकानाम विविक्तसेवीहै ॥ अर्थात् चित्तकीएकाग्रताकेसिद्धिवासतै जोपुरुष तिसचित्तकेविक्षेपकरणेहारेपदार्थोंकेसंसर्गतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष लघुआशीहै ॥ तहां परिमितहित पवित्र ऐसेअन्नके भोजनकरणेकाहैस्वभावजिसका ताकानाम लघ्वाशीहै अर्थात् जोपुरुष निद्राआलस्यादिरूपचित्तकेलयक

रणेहारेआहारकेसेवनतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष यतवाक्कायमानसहै ॥ तहां बहिर्मुखप्रवृत्तितैं निरुद्धकऱ्येहैं वाक् काय मन यह तीनों जिसनैं ताकानाम यतवाक्कायमानसहै ॥ अर्थात् जोपुरुष यम नियम आसन इत्यादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहै ॥ तथा जोपुरुष नित्यहींध्यानयोगपरायणहै ॥ तहां चित्त विषे आत्माकारवृत्तियोंकी जाआवृत्तिहै ताकानाम ध्यानहै ॥ अर्थात् विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित आत्माकारसजातीयवृत्तियोंकाजोप्रवाहहै ताकानाम ध्यानहै ॥ और तिसध्यानकरिकै चित्तका जोसर्ववृत्तियोंनैंरहितपणेका संपादनहै ताकानाम योगहै ॥ इसीप्रकारका योगकास्वरूप (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः)इससूत्रकरिकै पतंजलिभगवान्नैंभी कथनकऱ्याहै ॥ जोपुरुष इसप्रकारके ध्यानके तथायोगके नित्यहीं अनुष्ठानपरायणहोवैहै ॥ तिसध्यानयोगकूंछोडिकै जोपुरुष कदाचित्भी मंत्रजपतीर्थयात्रादिकोंकेअनुष्ठानपरायणहोतानहीं ॥ तथा जोपुरुष वैराग्यकूंप्राप्तहुआहै ॥ तहां इसलोकके विषयोंविषे तथापरलोककेविषयोंविषे स्पृहाकाविरोधी जोचित्तका परिणामविशेषहै ताकानाम वैराग्यहै ॥ ऐसेवैराग्यकूं जोपुरुष विवेकपूर्वक प्राप्तहुआहै ॥ सोपुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारवासतै समर्थहोवैहै इति ॥ ५२ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) अहंकारंबलंदर्पंकामंक्रोधंपरिग्रहम् ॥ विमुच्यनिर्ममःशांतोब्रह्मभूयायकल्पते ॥ ५३ ॥ अहंकारम् । बलम् । दर्पम् । कामम् । क्रोधम् । परिग्रहम् । विमुच्य । निर्ममः । शांतः । ब्रह्मभूयाय । कल्पते ॥ ५३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अहंकारकूं तथाबलकूं तथादर्पकूं तथाकामकूं तथाक्रोधकूं तथापरिग्रहकूं परित्यागकरिकै ममतातैंरहितहुआ तथाविक्षेपतैंरहितहुआ यहपुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारवासतै समर्थहोवैहै ॥ ५३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां मैं महान्कुलविषेउत्पन्नहुआहूं ॥ तथा महान्पुरुषोंका मैंशिष्यहूं ॥ तथा मैं अतिविरक्तहूं ॥ दूसराकोई हमारेसमानहैनहीं ॥ इसप्रकारकाजो अभिमानहै ताकानाम अहंकारहै ॥ और श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रतैंविरुद्ध जोअसत् आग्रहहै ताकानाम बलहै ॥ यद्यपि बहुतस्थलविषे शरीरकेसामर्थ्यकूं बलकह्याहै ॥ तथापि ईहां बलशब्दकरिकै सोशारीरबल ग्रहणकरणानहीं ॥ जिसकारणतैं स्वाभाविकहोणेतैं सोशारीरबल त्यागकरणेकूंअशक्यहै ॥ तथा आत्मज्ञानकेसाधनोंकेसंपादनकरणेविषे अनुकूलहै॥ और हर्षकरिकैजन्य तथाधर्मकेअतिक्रमकरणैकाकारणरूप ऐसाजो मदहै ताकानाम दर्पहै ॥ यहवार्ता स्मृतिविषेभीकथनकरीहै ॥ (हृष्टोदृप्यतिदृप्तोधर्ममतिक्रामति ॥) अर्थयह ॥ हर्षकूंप्राप्तहूआ यहपुरुष मदरूपदर्पकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मदरूपदर्पकूंप्राप्तहूआ यहपुरुष धर्मका अतिक्रमणकरेहै इति ॥ और इसलोकके अथवा परलोकके विषयोंकीजा अभिलाषाहै ताकानाम कामहै ॥ और द्वेषकानाम क्रोधहै ॥ और स्पृहाकेअभा

वहूएभी शरीरकेरक्षणवासतै दूसरेलोकोंतैं प्राप्तकऱ्येहूए जेबाह्यभोगकेसाधनहैं तिनोंकानाम परिग्रहहै ॥ ऐसे अहंकारकूं तथाबलकूं तथादर्पकूं तथाकामकूं तथाक्रोधकूं तथापरिग्रहकूं परित्यागकरिकै ॥ तथा शास्त्रकीविधिपूर्वक शिखायज्ञोपवीतादिकोंकूं परित्यागकरिकै ॥ तथा शरीरकेनिर्वाहवासतैशास्त्रविहित दंड कमंडलु कौपीन कंथा आदिकोंकूंग्रहणकरिकै अर्थात् परमहंसपरिव्राजकहोइकै जोपुरुष निर्ममहूआहै ॥ अर्थात् देहकेजीवनमात्रविषेभी जोपुरुष ममताअभिमानतैंरहितहै ॥ इसकारणतैंहीं अहंकारममकारकेअभावकरिकै हर्षविषादतैंरहितहोणेतैं जोपुरुष शांतहै ॥ अर्थात् चित्तकेसर्वविक्षेपोंतैंरहितहै ॥ इसप्रकारका परमहंससंन्यासीहीं ज्ञानसाधनोंकेपरिपाकक्रमकरिकै ब्रह्मसाक्षात्कारवासतै समर्थहोवैहै ॥ अर्थात् अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेब्रह्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांपूर्व (वैराग्यंसमुपाश्रितः) इसवचनकरिकै विषयोंकीअभिलाषारूपकामकापरित्याग कथनकरिकै पुनः (कामंपरित्यज्य) इसवचनकरिकै जो तिसकामकापरित्याग कथनकऱ्याहै ॥ सोतिसकामकेपरित्यागकरणेविषे प्रयत्नकी अधिकताबोधनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै इति ॥ ५३ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारका परमहंससंन्यासी किससाधनक्रमकरिकै ब्रह्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिससाधनक्रमकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मानशोचतिनकांक्षति ॥ समःसर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिंलभतेपराम् ॥ ५४ ॥ ब्रह्मभूतः । प्रसन्नात्मा । न । शोचति । न । कांक्षति । समः । सर्वेषु । भूतेषु । मद्भक्तिम् । लभते । पराम् ॥ ५४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष ब्रह्मभूतहै तथाप्रसन्नात्माहै तथानहीं शोककरेहैं तथानहीं इच्छाकरेहै तथा सर्व भूतोंविषे समहै सोपुरुष परा मेरीभक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ५४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मभूतहै ॥ अर्थात् जोपुरुष वेदांतशास्त्रके श्रवणमननकेअभ्यासतैं अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेदृढनिश्चयवालाहै ॥ तथा जोपुरुष प्रसन्नात्माहै ॥ अर्थात् शमदमादिकसाधनोंकेअभ्यासतैं जोपुरुष शुद्धचित्तवालाहै ॥ इसीकारणतैंहीं जोपुरुष नष्टहुएपदार्थका शोकनहींकरेहै ॥ तथा अप्राप्तहुएपदार्थकीइच्छानहींकरेहै ॥ इसीकारणतैंहीं निग्रहअनुग्रहकेअनारंभतैं जोपुरुष सर्वभूतोंविषे समहै ॥ अर्थात् जैसे आपणेकूं सुखप्रियहोवै तथादुःख अप्रियहोवैहै ॥ तैसे जोपुरुष आपणेआत्माकीन्यांई सर्वप्राणीमात्रकेसुखकूंतौं प्रियदेखैहै तथादुःखकूं अप्रियदेखैहै ॥ अथवा (समःसर्वेषुभूतेषु) इसवचनका यह अर्थकरणा ॥ (ब्रह्मैवेदंसर्वम्) अर्थयह॥यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहै इसप्रकारकीबुद्धिकरिकै जोपुरुष जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज इनच्यारिप्रकारकेभूतोंविषे विषमभावतैंरहितहै इति ॥ इसप्रकारका ज्ञाननिष्ठसंन्यासी मैंपरमात्मादेवकीभक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् मैंनिर्गुणशुद्धब्रह्मविषयक जो विजातीयवृत्तियोंकेव्यव

धानतैंरहित सजातीयचित्तवृत्तियोंकीआवृत्तिरूपउपासनाहै ॥ जिसउपासनाकूं परिपक्वनिदिध्यासनकहेहैं ॥ तथा जाउपासना श्रवणमननकेअध्यासका फलरूपहै ऐसीनिदिध्यासनरूप मेरीभक्तिकूं सोअधिकारीपुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ कैसीहैसामेरीभक्ति पराहै अर्थात् व्यवधानतैंरहित ब्रह्मसाक्षात्काररूपफलकाजनकहोणेतैं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ अथवा परा कहिये (चतुर्विधाभजंतेमाम्) इसश्लोकविषेकथनकरीजा च्यारिप्रकारकीभक्तिहै तिसच्यारीप्रकारकीभक्तिविषे ज्ञानरूपअत्यंतभक्तिहै ॥ इसप्रकारकीपराभक्तिवालापुरुष श्रीभागवतविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (सर्वभूतेषुयःपश्येद्भगवद्भावमात्मनः ॥ भूतानिभगवत्यात्मन्येषभागवतोत्तमः) ॥ अर्थयह ॥ जिसकरिकै यहपुरुष स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंविषे एकभगवद्भावकूं देखेहै ॥ अर्थात् (ब्रह्मैवेदंसर्वम्) इसश्रुतिप्रमाणतैं सर्वभूतोंविषे अस्तिभातिप्रियरूपब्रह्मकूंहीं व्यापकदेखेहै ॥ तथा सर्वप्राणीयोंकाआत्मरूप जोभगवान्परब्रह्महै ॥ तिसपरब्रह्मविषे तिनसर्वभूतोंकूं कल्पितदेखेहै ॥ इसप्रकारका तत्त्ववेत्तापुरुषहीं सर्वभगवद्भक्तोंविषे उत्तमभक्तहै इति ॥ ५४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसनिदिध्यासनरूपभक्तिकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं किसफलकीप्राप्ति होवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसभक्तिकेफलकूं कथनकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) भक्त्यामामभिजानातियावान्यश्चास्मितत्त्वतः ॥ ततोमांतत्त्वतोज्ञात्वाविशतेतदनंतरम् ॥ ५५ ॥ भक्त्या । माम् । अभिजानाति । यावान् । यः । च । अस्मि । तत्त्वतः । ततः । माम् । तत्त्वतः । ज्ञात्वा । विशते । तदनंतरम् ॥ ५५ ॥ (इति पदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमात्मादेव जिसपरिमाणवालाहूं तथा जिसस्वरूपवाला हूं ऐसेमैंपरमात्माकूं तिसभक्तिकरिकै सोपुरुष यथावत् साक्षात्कारकरेहै इसप्रकार तिसभक्तितैं मैंपरमात्माकूं यथावत् साक्षात्कारकरिकै देहपाततैंअनंतर सोतत्त्ववेत्तापुरुष मैंपरब्रह्मविषे अभेदरूपतैं प्रवेशकरेहैं ॥ ५५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तिसनिदिध्यासनरूप ज्ञाननिष्ठानामाभक्तिकरिकै सोअधिकारीपुरुष मैंपरमात्मादेवकूं यथावत् स्वरूपतैं साक्षात्कारकरेहै ॥ अब तिस यथार्थस्वरूपकूं वर्णनकरेहैं ॥ (यावान्यश्चास्मि) तहां मैं अणुपरिमाणवालाहूं अथवा मैं देहकेतुल्य मध्यमपरिणामवालाहूं ॥ अथवा नैयायिकोंनैं कल्पनाकऱ्याजो आकाशकीन्यांई सर्वमूर्त्तद्रव्योंकेसाथि संयोगित्वरूप विभुत्वहै ॥ तिसविभुत्वका मैं आश्रयहूं ॥ अथवा सप्रपंचअद्वैतवादीयोंकीन्यांई मैं स्वगतभेदवालाहूं ॥ अथवा मैं अखंड एकरस सर्वत्रव्यापकहूं ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै श्रुतिविरुद्धपक्षोंकाबाधकरिकै सोपुरुष मैं परमात्मादेवकूं अखंड एकरस नित्य विभुरूपहीं जानेहै ॥ अणुरूप वामध्यमपरिमाणवाला वानैयायिकोंकेविभुपरिमाणवाला वास्वगतभेदवाला मैंपरमात्मादेवकूं जानतानहीं ॥ तथा मैं देहरूपहूं ॥ अथवा इंद्रिय

रूपहूं ॥ अथवा प्राणरूपहूं ॥ अथवा मनरूपहूं ॥ अथवा कोईककालस्थायीहूं ॥ अथवा क्षणिकविज्ञानरूपहूं ॥ अथवा शून्यरूपहूं ॥ अथवा कर्त्ताभोक्ता रूपहूं ॥ अथवा जडरूपहूं ॥ अथवा जडअजडरूपहूं ॥ अथवा चित्रूपहूं ॥ अथवा भोक्तारूपहूं ॥ अथवा कर्तृत्वभोक्तृत्वतैंरहित आनंदघनरूपहूं ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै श्रुतिविरुद्धसर्वपक्षोंकाबाधकरिकै सोअधिकारीपुरुष मैंपरमात्मादेवकूं परिपूर्ण सत्य ज्ञान आनंदघन सर्वउपाधियोंतैंरहित अखंड एकरस अद्वितीय अजर अमर अभय अशोक रूपहींजानेहै ॥ देहइंद्रियादिरूप मेरेकूंजानतानहीं ॥ इसप्रकारका तिसनिदिध्यासनरूपभक्तितैं मैंपरमात्मादेवकूं यथावत् जानिकै ॥ अर्थात् अखंडएकरसअद्वितीयआनंदरूप ब्रह्म मैंहींहूं इसप्रकारतैं मैंपरमात्मादेवकूंसाक्षात्कारकरिकै ॥ सोतत्त्ववेत्तापुरुष मैंपरमात्मादेवविषेहीं प्रवेशकरेहै ॥ अर्थात् तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुए तथाताअज्ञानकेदेहादिककार्योंकेनिवृत्तहुए सर्वउपाधियोंतैंरहितहुआ सोपरमहंससंन्यासी मैंनिर्गुणब्रह्मरूपहीं होवैहै ॥ तहां सर्वउपाधियोंतैंरहितहोइकै सोतत्त्ववेत्तासंन्यासी कवी ब्रह्मरूपहोवैहै ॥ ऐसीजिज्ञासाकेप्राप्तहुए कहेहैं (तदनंतरमिति) अर्थात् बलवान्प्रारब्धकर्मकेभोगकरिकै देहकेपातहुएतैंअनंतर सोतत्त्ववेत्तासंन्यासी देहादिकसर्वउपाधियोंतैंरहितहुआ ब्रह्मरूपहींहोवैहै ॥ यद्यपि (तदनंतरम्) इसवचनका ज्ञानतैं अनंतर याप्रकारकाअर्थ किसीटीकाकारनैं कऱ्याहै ॥ तथापि यहअर्थ संभवतानहीं ॥ काहेतैं आत्मज्ञान ब्रह्मविषेप्रवेश इनदोनोंका पूर्वउत्तरभावतौं (ज्ञात्वा) इसवचनविषेस्थित क्त्वा इसप्रत्ययकरिकैहींसिद्धहोवैहै ॥ (तदनंतरम्) यहपद व्यर्थहोवैगा ॥ यातैं (तदनंतरम्) इसवचनका देहपाततैंअनंतर यहअर्थहीं सम्यक्है इति ॥ तहां इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं (तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्षेऽथसंपत्स्ये) इसश्रुतिकाअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ इसश्रुतिका यहअर्थहै ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषकूं विदेहमोक्षकीप्राप्तिविषे तितनैंकालपर्यंतहीं विलंबहै ॥ जितनैंकालपर्यंत प्रारब्धकर्मकेभोगकरिकै इसदेहकापात नहींहोवैहै ॥ देहकेपातहुएतैंअनंतर सर्वउपाधियोंतैंरहितहुआ सोब्रह्मवेत्तापुरुष निर्गुणअद्वितीयब्रह्मकीप्राप्तिरूपविदेहमोक्षकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ जोकदाचित् तत्त्वज्ञानकेउत्पन्नहुएभी देहकेपातपर्यंत प्रारब्धकर्मोंकूं विदेहकैवल्यका प्रतिबंधक नहींमानिये ॥ तौं तत्त्वज्ञानकीप्राप्तिकालविषेहीं देहकापात होवैगा ॥ तहां ज्ञानकेसमकालहीं देहकापातनमानणे विषे एकतौं ब्रह्मविद्याकेसंप्रदायका उच्छेद प्राप्तहोवैगा ॥ और दूसरा जीवन्मुक्तिकीप्रतिपादकश्रुति असंगतहोवैगी ॥ साश्रुति यहहै ॥ (विमुक्तश्चविमुच्यते । भूयश्चांतेविश्वमायानिवृत्तिः) ॥ अर्थयह ॥ तत्त्वज्ञानकरिकै मुक्तहुआभी यहविद्वान्पुरुष प्रारब्धकर्मके भोगकरिकै देहपाततैंअनंतर पुनःविशेषकरिकैमुक्तहोवैहै इति ॥ और इसतत्त्ववेत्ता पुरुषकी अज्ञानरूपमाया पूर्व तत्त्वज्ञानकरिकैनिवृत्तहुईभी लेशरूपकरिकैरहीहुईसामाया पुनःदेहपाततैंअनंतर निवृत्तहोवैहै इति ॥ यहदोनोंश्रुति मुक्तपुरुषकीपुनःमुक्तिकूंकथनकरतीहूई तथानिवृत्तहूई सामाया पुनःनिवृत्तिकूंकथनकरतीहूई विद्वान्पुरुषकेजीवन्मुक्तिकूं कथनकरेहैं ॥ ते दोनोंश्रुति असंगतहोवैंगी ॥ यातैं तत्त्वज्ञा

नकेउत्पन्नहूएभी देहकेपातपर्यंत प्रारब्धकर्मोंकूं विदेहकैवल्यकाप्रतिबंधकपणा अंगीकारकरणा उचितहै ॥ यद्यपि जैसे दीपक अंधकारकाविरोधिहोवैहै यातैं सोदी
पक आपणेउत्पत्तिकालविषेहीं ताअंधकारकीनिवृत्ति करैहै तैसे तत्त्वज्ञानभी अज्ञानकाविरोधीहै ॥ यातैं सोतत्त्वज्ञानभी आपणेउत्पत्तिकालविषेहीं ताअज्ञानकूं
निवृत्तकरेहै ॥ और ता अज्ञानरूपउपादानकारणकेनिवृत्तिहूए ताकेकार्यरूप अहंकारदेहादिकभी उसीकालविषेनिवृत्तहोणेचाहियें ॥ तथापि तत्त्वज्ञानकरिकै उपा
दानकारणरूपअज्ञानकेनिवृत्तहूएभी ताअज्ञानकेकार्यरूप अहंकारदेहादिक उपादानकारणतैंविनाहीं प्रारब्धकर्मकेभोगपर्यंत स्थितहोवैहैं ॥ जिसकारणतैं तत्त्ववे
त्तापुरुषके अहंकारदेहादिकप्रत्यक्षहींदेखणेविषेआवैहै ॥ और । (नहिदृष्टेरनुपपन्नंनाम ॥) अर्थयह प्रत्यक्षप्रमाणसिद्धअर्थविषे किंचित्‌मात्रभी अनुपपत्तिहोवै
नहीं ॥ यहसर्वशास्त्रकारोंकानियमहै ॥ ऐसेप्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्ध तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके अहंकारदेहादिक किसीनैंनिषेधकरिसकीतेनहीं ॥ औरउपादानकार
णकेनिवृत्तहूएतैअनंतर कार्यकीस्थिति कहांभीदेखीतीनहीं ऐसीजोकोईशंकाकरै ॥ साशंकाभीसंभवतीनहीं ॥ काहेतैं समवायिकारणकेनाशतैं कार्यद्रव्यकेनाश कूं
अंगीकारकरणेहारे जेनैयायिकहैं ॥ तिननैयायिकोनैंभी उपादानकारणतैंरहित एकक्षणमात्र कार्यद्रव्यकीस्थिति अंगीकारकरीहै ॥ और तिन नैयायिकोंकेम
तविषे नित्यपरमाणुवोंविषेसमवेत जोद्व्यणुकरूपकार्यद्रव्यहै ॥ तिसद्व्यणुकका समवायिकारणकेनाशतैंनाशहोवैनहीं ॥ किंतु दोपरमाणुवोंकासंयोगरूप अस
मवायिकारणकेनाशतैंहीं ताद्व्यणुककानाशहोवैहै ॥ और जेनैयायिक सर्वत्र असमवायिकारणकेनाशकूंहीं कार्यद्रव्यकेनाशविषेहेतुकहेहैं ॥ तिननैयायिकोंकेमत
विषेतौं आश्रयकेनाशस्थलविषे उपादानतैंरहितहूआ कार्यद्रव्य दोक्षणपर्यंतस्थिररहेहै इसप्रकार नैयायिकोंनैं उपादानकारणकेनाशहूएभी कार्यद्रव्यकी एकक्ष
णपर्यंतस्थिति वा दोक्षणपर्यंतस्थिति अंगीकारकरीहै ॥ तैसे सिद्धांतविषेभी अज्ञानरूपउपादानकारणकेनिवृत्तहूएभी प्रारब्धकर्मरूपप्रतिबंधकेविद्यमानहूए अहंकार
देहादिरूपकार्यकी बहुतकालपर्यंतस्थिति किसीतैंभी निवृत्तहोइसकैनहीं ॥ और तत्त्ववेत्तापुरुषके अहंकारदेहादिकोंकीनिवृत्तिविषे प्रारब्धकर्मोंकूंप्रतिबंधकपणा
है ॥ यहअर्थ केवल स्वकल्पनामात्रतैं सिद्धनहींहै ॥ किंतु (तस्यतावदेवचिरम्) इसपूर्वउक्तश्रुतिकरिकैहींसिद्धहै ॥ तथा तत्त्ववेत्तापुरुषके अहंकारदेहादि
कोंकेस्थितिकीअनुपपत्तिरूपअर्थापत्तिप्रमाणकरिकैभीसिद्धहै ॥ किंवा तत्त्ववेत्तापुरुषके अहंकारदेहादिकोंकीनिवृत्तिविषे केवल तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकेहींप्रारब्धकर्म
प्रतिबंधकनहींहैं ॥ किंतु तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकेउपदेशकरिकै कृतार्थहोणेहारे शिष्यसेवकादिकोंकेअदृष्टभी प्रतिबंधकहै ॥ तिनप्रारब्धकर्मोंकेअभावकीअपेक्षाकरिकै
सोपूर्वसिद्धहींअज्ञानकानाश ताअज्ञानकेकार्यरूप अंतःकरणदेहादिकोंकूंनाशकरेहै ॥ यातैं तिन अंतःकरणदेहादिकोंकेनाशकरणेवासतै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं पुनः
ज्ञानकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (तीर्थेश्वपचगृहेवानष्टस्मृतिरपिपरित्यजन्देहम् ॥ ज्ञानसमकालमुक्तःकैवल्यंयाति

हतशोकः ॥) अर्थयह ॥ अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेज्ञानकीप्राप्तिकालविषेमुक्तहूआ तथानिवृत्तहूएहैंसर्वशोकजिसके ऐसाजोतत्त्ववेत्तापुरुषहै ॥ सोतत्त्ववेत्तापुरुष श्रीकाशीआदिकतीर्थोंविषे देहकूंपरित्यागकरताहुआ ॥ अथवा चांडालकेगृहविषे देहकूंपरित्यागकरताहुआ ॥ अथवा सन्निपातादिकरोगकेवशतैं शास्त्रअर्थकीस्मृतितैंरहितहोइकै देहकूंपरित्यागकरताहुआ ॥ सर्वप्रकारतैं विदेहकैवल्यकूंहींप्राप्तहोवैहै इति ॥ और अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेतत्त्वज्ञानकरिकैनिवृत्तहुआहै अज्ञानजिसका ऐसा जोब्रह्मवेत्तापुरुषहै ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषकूंभी नजानामि इसप्रकारकाप्रत्ययतौंहोवैहै ॥ परंतु जैसे अज्ञानीपुरुषका सोप्रत्यय अज्ञानतैंहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषका सोप्रत्यय अज्ञानतैंहोवैनहीं ॥ किंतु अज्ञानकेनाशकरिकैजन्य तथाउपादानभावतैंरहित तथासाक्षात्आत्माकेआश्रित तथातत्त्वज्ञानकेसंस्कारोंकरिकैनिवर्त्य तथाअंतःकरणादिकोंकेस्थितिकाअवधिरूप ऐसाजो अज्ञानकासंस्कारहै ॥ तिसअज्ञानकेसंस्कारतैंहीं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं नजानामि यहप्रत्यहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं विवरणादिकग्रंथोंविषे व्यवस्थाकरीहै॥तात्पर्ययह ॥ अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेअंत्यसाक्षात्कारतैंअनंतर (अहंब्रह्मनभवामि अहंब्रह्मनजानामि) ॥ अर्थयह ॥ मैंब्रह्मनहींहूं तथामैंब्रह्मकूंनहींजानताहूं इसप्रकारकाप्रत्ययतौं तत्त्ववेत्तापुरुषकूं कदाचित्भी होतानहीं ॥ परंतु तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं जो कदाचित् व्यवहारकालविषे अहंघटंनजानामि ॥अर्थयह॥ मैंघटकूंनहींजानताहूं इत्यादिकप्रत्ययहोवै॥तिसप्रत्ययकीसिद्धिवासतै सोअज्ञानका संस्कार कल्पनाकऱ्याहै ॥ यातैं ईहां किंचित्मात्रभी अनुपपत्तिहोवैंनहीं ॥ और तत्त्वज्ञानकरिकैअज्ञानकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर शास्त्रकारोंनैं जोअज्ञानकालेश अंगीकारकऱ्याहै ॥ तिसअज्ञानलेशमदकरिकैभी यहअज्ञानकासंस्कारहीं विवक्षितहै ॥ तिससंस्कारतैंभिन्न दूसराकोई अवयवादिरूपअर्थ तिसअज्ञानलेशपदकरिकैविवक्षितनहींहै ॥ काहेतैं घटपटादिकद्रव्योंकीन्यांई सोअज्ञान कोई सावयवद्रव्यहैनहीं जिससावयवताकरिकै तत्त्वज्ञानकरिकै कछुक अज्ञान निवृत्तहोवैहै कछुकअज्ञान बाकीरहेहै याप्रकारकीकल्पनाहोवै ॥ परंतु सोअज्ञान सावयवहैनहीं ॥ और अज्ञानकूंअनिर्वचनीयहोणेतैं जोकदाचित् तिसअज्ञानका कोईएकदेश अंगीकारकरीये ॥ तौं तिसअज्ञानकेएकदेशकी निवृत्तिवासतै पुनः अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेअंत्यज्ञानकीअपेक्षा अवश्यहोवैगी ॥ सोइसप्रकारकाज्ञान मरणकालविषे दुर्घटहींहै ॥ यातैं तिसअज्ञानकेएकदेशविषेभी पूर्वउत्पन्नहुएतत्वज्ञानकेसंस्कारकरिकैहींनाश्यता अंगीकार करणीहोवैगी ॥ ताकरिकै पूर्वउक्तसंस्कारपक्षतैं इसएकदेशपक्षविषे किंचित्मात्रभी विशेषतासिद्धनहींहोवैगी ॥ यातैं सापूर्वउक्त अज्ञानसंस्कारोंकीकल्पनाही श्रेष्ठहै ॥ इसप्रकारकेजीवन्मुक्तिकीअपेक्षाकरिकैहीं पूर्व श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति (उपदेक्ष्यंतितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः) इसप्रकारकावचन कथनकऱ्याथा ॥ तथा तत्ववेत्तास्थितप्रज्ञपुरुषकेलक्षण कथनकऱ्येथे ॥ यातैं (तदनंतरमांविशते) इसवचनकरिकै तत्त्ववेत्तापुरुषकूं देहपाततैंअनंतर विदेहकैवल्यकीप्राप्ति जोभगवाननै कथनकरीहै सोयुक्तहींहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (ततो

मांतत्वतोज्ञात्वाविशतेतदनंतरम्) इसउत्तरार्द्धविषे (मांतत्वतःज्ञात्वाततःभवतिअनंतरंतत्विशते) इसप्रकारतैं भवति इसपदके अध्याहारपूर्वक पदोंकीयोजनाक रिकै यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ ईहां (ततः) इसपदकरिकै सर्वत्रव्यापक मायाविशिष्ट कारणब्रह्मका ग्रहणकरणा ॥ और (तदितिवाएतस्यमहतोभूतस्यनाम भवति) इसश्रुतिविषे तत् यहनाम शुद्धब्रह्मकाकह्याहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारतैं मैंपरब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरिकै यहतत्ववेत्तापु रुष प्रथम सर्वात्माभूतकारणब्रह्मरूपहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यएवंवेदाहंब्रह्मास्मीतिसइदंसर्वंभवति) ॥ अर्थयह ॥ जोतत्ववेत्तापुरुष अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारतैं आत्माकूंसाक्षात्कारकरेहै ॥ सोतत्ववेत्तापुरुष सर्वरूपहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिनैं तत्ववेत्तापुरुषकूं प्रथम सर्वात्म्यरूप कारणब्रह्मभावकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और तिसकारणब्रह्मभावकीप्राप्तितैंअनंतर सोतत्ववेत्तापुरुष शुद्धब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै अर्थात् मुक्तपुरुषोंकूं मायाउपाधिककारणब्रह्मकीप्राप्तिद्वाराही निर्गुणशुद्धब्र ह्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसपक्षका विस्तारतैंप्रतिपादन ग्रंथांतरोंविषेस्पष्टहै इति ॥ ५५ ॥ ❁ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोपुरुष अनात्मज्ञहै तथाअशुद्धअंतःकरण वालाहै ॥ सोपुरुषताअंतःकरणकीशुद्धिपर्यंत आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूं कदाचित्भी नहींपरित्यागकरै ॥ और जोपुरुष शुद्धअंतःकरणवालाहै ॥ सोपुरुषतौं तिन सर्वकर्मोंकेसंन्यासकरिकैहीं आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता पूर्व आपनैं कथनकरी ॥ और सोसर्वकर्मोंकासंन्यास ब्राह्मणनैंहीं करणेयोग्यहै ॥ क्षत्रियवैश्यनैं सोसर्वकर्मोंकासंन्यास करणेयोग्यनहींहै ॥ इसअर्थकूंभी (कर्मणैवहिसंसिद्धिमास्थिताजनकादयः) इसवचनकरिकै आप कथनकरतेभयेहो ॥ तहां शुद्धहुआहै अंतःकरणजिनोंका ऐसेक्षत्रियादिकोंनैं क्याकर्महीं अनुष्ठानकरणेयोग्यहैं ॥ अथवा सर्वकर्मोंकासंन्यास करणेयोग्यहै ॥ तहां शुद्धअंतःकरणवाले क्षत्रियवैश्यनैं कर्महींकरणेयोग्यहैं यहप्रथमपक्षतौ संभवतानहीं ॥ काहेतैं (आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते ॥ योगारूढस्यतस्यैवशमःकारणमुच्यते) इत्यादिकवचनकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिकूंप्राप्तहुएपुरुषकूं कर्मोंकेअनुष्ठानकानिषेध पूर्वआप कथनकरिआयेहो ॥ और शुद्धअंतःकरणवाले क्षत्रियवैश्यनैं संन्यास करणेयोग्यहै ॥ यहदूस रापक्षभी संभवतानहीं॥ काहेतैं (स्वधर्मेनिधनंश्रेयःपरधर्मोभयावहः) इत्यादिकवचनोंकरिकै केवलब्राह्मणकाधर्मरूप जोसर्वकर्मोंकासंन्यासहै तिससंन्यासका क्षत्रियवै श्यकेप्रति आप निषेधकरिआयेहो ॥ और कर्मोंकाअनुष्ठान तथातिनकर्मोंकात्याग इनदोनोंप्रकारोंतैंविना तीसराकोईप्रकारहैनहीं ॥ जिसतीसरेप्रकारकूं तेशुद्धअंतः करणवालेक्षत्रियवैश्यादिक करैं ॥ यातैं कर्मोंकाअनुष्ठान तथा कर्मोंकात्यागरूपसंन्यास इनदोनोंका शुद्धअंतःकरणवालेक्षत्रियवैश्यकेप्रति प्रतिषेधहोणेतैं तथाअ न्यप्रकारकेअभावहोणेतैं एकप्रतिषेधकाअतिक्रमणतौं अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैंगा ॥ तहांशुद्धअंतःकरणवालेक्षत्रियवैश्यकूं कर्मोंकेअनुष्ठानतैं कर्मोंकात्यागहीं श्रेष्ठ है ॥ काहेतैं (कर्मणाबध्यतेजंतुः) इत्यादिकवचनोंविषे कर्मोंकूं बंधकाहेतुपणाहीं कथनकऱ्याहै ॥ ऐसेबंधकेहेतुरूपकर्मोंकेपरित्यागकरिकै इसपुरुषकूं मोक्षके

साधनोंकीपुष्कलताहीं प्राप्तहोवैहै ॥ और शुद्धअंतःकरणवालेक्षत्रियवैश्यनै तेकर्म अनुष्ठानकरणेयोग्यनहींहै ॥ काहेतैं तेकर्म चित्तकेविक्षेपकेहेतुहोणेतैं मोक्षकेसाधनरूपआत्मज्ञानके प्रतिबंधकहींहैं ॥ इसप्रकारके अर्जुनकेअभिप्रायकूंजानिकै श्रीभगवान् तिसअर्जुनकेप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वकर्माण्यपिसदाकुर्वाणोमद्व्यपाश्रयः ॥ मत्प्रसादादवाप्नोतिशाश्वतंपदमव्ययम् ॥ ५६ ॥ सर्वकर्माणि । अपि । सदा । कुर्वाणः । मद्व्यपाश्रयः । मत्प्रसादात् । अवाप्नोति । शाश्वतम् । पदम् । अव्ययम् ॥ ५६ ॥ (इतिपद०) ॥ हेअर्जुन सर्वकर्मोंकूं सदा करताहुआ भी मेरेशरणागतपुरुष मेरेअनुग्रहतैं शाश्वत अव्यय पदकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ५६ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष पूर्वउक्तनिष्कामकर्मोंकरिकै शुद्ध अंतःकरणवालाहुआहै ॥ सोशुद्धअंतःकरणवालापुरुष अवश्यकरिकै भगवत्शरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं निष्कामकर्मोंकरिकैजन्य जोअंतःकरणकीशुद्धिहै ताशुद्धिका भगवत्शरणकीप्राप्तिविषेहीं परिअवसानहै ॥ इसप्रकार निष्कामकर्मजन्यअंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक भगवत्शरणकूं प्राप्तहुआ जोअधिकारीपुरुषहै ॥ सोअधिकारीपुरुष जोकदाचित् ब्राह्मणहोवैहै ॥ तौं संन्यासकाप्रतिबंधकक्षात्रियत्व वैश्यत्व जातितैंरहितहोणेतैं सोब्राह्मण निःशंकहोइकै विधिपूर्वकसर्वकर्मोंकासंन्यासकरै ॥ और अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक तथासर्वकर्मोंकेसंन्यासपूर्वक भगवत्शरणकूं प्राप्तहुए तिसब्राह्मणकाभी इसजन्ममरणरूपसंसारतैंमोक्षतौं एकभगवत्केप्रसादतैंहींहोवैहै ॥ तिसभगवत्प्रसादतैंविना केवलकर्मोंकेत्यागमात्रतैं तिसअधिकारी ब्राह्मणका संसारतैंमोक्षहोवैनहीं ॥ और तिननिष्कामकर्मोंकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिकूंप्राप्तहुआ जोअधिकारीपुरुषहै ॥ सोअधिकारीपुरुष जोकदाचित् संन्यासकाअनधिकारी क्षत्रियवैश्यहोवै ॥ सोक्षत्रियवैश्यअधिकारीपुरुषतौं कर्मोंकूं अवश्यकरिकेकरै ॥ परंतु सोक्षत्रियवैश्य मद्व्यपाश्रयहुआ कर्मोंकूंकरै ॥ तहां मैंभगवान्वासुदेवहीहूं व्यपाश्रय कहिये शरण जिसका ताकानाम मद्व्यपाश्रयहै ॥ अर्थात् एकमैंपरमेश्वरकेशरणहोइकै मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकऱ्याहैसर्वात्मभाव जिसनैं ताकानाम मद्व्यपाश्रयहै ॥ ऐसामद्व्यपाश्रयहुआ यहक्षत्रियवैश्यादिकअधिकारीपुरुष संन्यासकाअनधिकारीहोणेतैं सर्वदासर्वकर्मोंकूंकरताहुआभी ॥ अर्थात् शास्त्रविहित स्ववर्णआश्रमकेधर्मरूपकर्मोंकूं अथवा लौकिककर्मोंकूं अथवा प्रतिषिद्धकर्मोंकूं करताहुआभी ॥ मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैं हिरण्यगर्भकीन्याई अहं ब्रह्मास्मि इसप्रकारके ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै शाश्वतअव्ययपदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् (तद्विष्णोः परमंपदम्) इसश्रुतिकरिकैप्रतिपादित जो मोक्षरूपपदहै जिस पदकूंप्राप्तहोइकै तत्त्ववेत्तापुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ तिसमोक्षरूपपदकूं सो अधिकारीपुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपद शाश्वतहै ॥ अर्थात् उत्पत्तिविनाशतैंरहितहोणेतैं नित्यहै ॥ तथा अव्ययहै ॥ अर्थात् परिणामभावतैंरहितहै ॥ यद्यपि इसप्रकारका भगवत्शरण अधिकारीपुरुष कदाचित्भी प्रतिषिद्धकर्मोंकूं

करतानहीं ॥ तथापि जोकदाचित् सोभगवत्शरण अधिकारीपुरुष तिनप्रतिषिद्धकर्मोंकूंकरैभी ॥ तौंभी मैंपरमेश्वरके अनुग्रहतैं प्रत्यवायकीअनुत्पत्तिकरिकै अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेमेरेसाक्षात्कारकरिकै सोअधिकारीपुरुष मोक्षकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं तिसभगवत्शरणताकीस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (सर्वकर्माण्यपिसदाकुर्वाणः) इसप्रकारकावचन कथनकऱ्याहै इति ॥ ५६ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं एकमैंपरमेश्वरकीशरणतामात्रहीं आत्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मोक्षकासाधनहै ॥ तिसतैंअन्य कर्मोंकाअनुष्ठान वाकर्मोंकासंन्यास मोक्षकासाधनहैनहीं ॥ तिसकारणतैं तूंक्षत्रियअर्जुन केवल मैंपरमेश्वरपरायणहींहोवउ ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) चेतसासर्वकर्माणिमयिसंन्यस्यमत्परः ॥ बुद्धियोगमुपाश्रित्यमच्चित्तःसततंभव ॥ ५७ ॥ चेतसा । सर्वकर्माणि । मयि । संन्यस्य । मत्परः । बुद्धियोगम् । उपाश्रित्य । मच्चित्तः । सततम् । भव ॥ ५७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन चित्त करिकै सर्वकर्मोंकूं मैंपरमेश्वरविषे समर्पणकरिकै मत्परहुआ तूं बुद्धियोगकूं स्वीकारकरिकै सर्वदा मच्चित्त होवउ ॥५७॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोककेदृष्टअर्थोंकीप्राप्तिकरणेहारे तथा स्वर्गादिकलोकोंकेअदृष्टअर्थोंकीप्राप्तिकरणेहारे जितनैंकी लौकिकवैदिककर्महैं ॥ तिनसर्वकर्मोंकूं विवेकयुक्तबुद्धिकरिकै मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकरिकै ॥ अर्थात् (यत्करोषियदश्नासियज्जुहोषिददासियत् ॥ यत्तपस्यसिकौंतेयतत्कुरुष्वमदर्पणम्) इसपूर्वश्लोकउक्त रीतिसैं तिनलौकिकवैदिकसर्वकर्मोंकूं मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकरिकै मत्परहूआतूं ॥ तहां मैंभगवान्वासुदेवहींहूं अत्यंतप्रियजिसकूं ताकानाम मत्परहै ॥ ऐसामत्पर हूआतूं॥पूर्वकथनकऱ्याजो कर्मफलकीसिद्धिअसिद्धिविषेसमत्वबुद्धिरूपबुद्धियोगहै॥ जोबुद्धियोग बंधकेहेतुरूपभीकर्मोंविषे मोक्षकेहेतुपणेकासंपादकहै॥ ऐसेबुद्धियोग कूं अनन्यशरणरूपतैंस्वीकारकरिकै सर्वदा मच्चित्तहोवउ ॥ तहां मैं भगवान् वासुदेवविषेहींहैचित्तजिसका दूसरेकिसीराजाविषे वाकामिनीआदिकोंविषे जिसका चित्तहैनहीं ताकानाम मच्चित्तहै ॥ इसप्रकारका मच्चित्त तूं अर्जुन सर्वदाहोवउ ॥ ईहां किसीमूलपुस्तकविषे (बुद्धियोगमपाश्रित्य) इसप्रकारकाभीपाठहोवैहै ॥ ऐसेपाठविषेभी सोपूर्वउक्तअर्थहींजानणा इति ॥ ५७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसमच्चित्तहोणेतैं कौंनप्रयोजनसिद्धहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूए श्रीभगवान् कहैहै ॥ अथवा इसपूर्वउक्तभक्तियोगके करणेविषेगुणकूं तथानकरणेविषेदोषकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) मच्चित्तःसर्वदुर्गाणिमत्प्रसादात्तरिष्यसि ॥ अथचेत्त्वमहंकारान्नश्रोष्यसिविनंक्ष्यसि ॥ ५८ ॥ मच्चित्तः । सर्वदुर्गाणि । मत्प्रसादात् । तरिष्यसि । अथचेत् । त्वम् । अहंकारात् । न । श्रोष्यसि । विनंक्ष्यसि ॥ ५८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन

मच्चित्तहुआ तूं मेरे प्रसादतैं दुस्तरकामक्रोधादिकोंकूंभी तरिजावैंगा औरजोंकदाचित् तूंअर्जुन अहंकारतैं मेरेवचनकूंनहीं श्रवणकरैगा तौतूं नष्टहोवैंगा ॥ ५८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मच्चित्तहुआतूं मेरेप्रसादतैं सर्वदुर्गोंकूं तरिजावैंगा ॥ तहां संसारदुःखकेसाधनरूप जेअतिदुस्तर कामक्रोधादिकहैं तिनोंकानाम दुर्गहै ॥ ऐसेकामक्रोधादिरूपसर्वदुर्गोंकूं तूंअर्जुन आपणेप्रयत्नतैंविनाहीं केवल मैं परमेश्वरकेअनुग्रहतैं सुखेनहीं अतिक्रमणकरैंगा ॥ और जो कदाचित् तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकेवचनोंविषेअविश्वासकरिकै मैंपंडितहूं इसप्रकारकेगर्वरूपअहंकारतैं तिसहमारेवचनकूं नहींश्रवणकरैंगा ॥ अर्थात् जोकदाचित् तूं हमारेवचनोंकेअर्थकूं नहींअनुष्ठान करैंगा ॥ तौ तूंअर्जुन नष्टहोवैंगा ॥ अर्थात् आपणीइच्छातैं युद्धादिकस्वधर्मकापरित्यागकरिकै संन्यासादिकपरधर्मकेअनुष्ठानतैं तूं सर्वपुरुषोंतैंभ्रष्टहोवैंगा इति ॥ ५८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् युद्धादिककर्मोंके करणेविषे अथवा नहींकरणेविषे मैं अर्जुन स्वतंत्रहूं ॥ यातैं तुमारेवचनके अर्थकूं मैंनहींकरूंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) यदहंकारमाश्रित्यनयोत्स्यइतिमन्यसे॥मिथ्यैवव्यवसायस्तेप्रकृतिस्त्वांनियोक्ष्यति॥५९॥यत् । अहंकारम् । आश्रित्य । न । योत्स्ये । इति । मन्यसे । मिथ्या । एव । व्यवसायः । ते । प्रकृतिः । त्वां । नियोक्ष्यति ॥ ५९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन तूं अहंकारकूं आश्रयकरिकै मैं नहीं युद्धकरूंगा इसप्रकार जो मानताहैं सो तुमारा निश्चय मिथ्या हीहै जिसकारणतैं तुमारेकूं प्रकृति अवश्य युद्धविषे प्रेरणाकरैंगी ॥ ५९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंधर्मात्माहूं यातैं इसयुद्धरूपक्रूरकर्मकूं मैंनहींकरूंगा इसप्रकारकेमिथ्याअभिमानकूंआश्रयकरिकै इसयुद्धकूं मैं नहींकरूंगा इसप्रकार जोतूं मानताहैं ॥ सोतुमारानिश्चय निष्फलहीहै ॥ जिसकारणतैं क्षत्रियजातिकाआरंभक रजोगुणस्वरूप जाप्रकृतिहैं ॥ साप्रकृति तुमारेकूं इसयुद्धरूपकर्मविषे अवश्यकरिकै प्रवर्त्तकरैंगी ॥ इसीकारणतैंहीं (प्रकृतिंयांतिभूतानिनिग्रहःकिंकरिष्यति) इसवचनकरिकैपूर्व सर्वजीवोंकीप्रवृत्ति आपणीआपणी प्रकृतिकेअधीन कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं तूंअर्जुन स्वतंत्रनहींहैं ॥ किंतु आपणीप्रकृतिकेअधीनहै इति ॥ ५९ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् अर्जुनका स्वप्रकृतिकेअधीनपणा निरूपणकरेहै ॥

(मू० श्लो०) स्वभावजेनकौंतेयनिबद्धःस्वेनकर्मणा ॥ कर्त्तुंनेच्छसियन्मोहात्करिष्यस्यवशोपितत् ॥ ६० ॥ स्वभावजेन । कौंतेय

निर्बद्धः । स्वेन । कर्मणा । कर्त्तुं । न । इच्छसि । यत् । मोहात् । करिष्यसि । अवशः । अपि । तत् ॥६०॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हे अर्जुन स्वभावजन्य आपणे कर्मकरिकै वशीकृतहुआतूं मोहकेवशतैं जिसयुद्धकूं करणेवासतैं नहीं इच्छताहै तिसयुद्धकूं तूं अवशहुआ भी करैगा ॥ ६० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्त क्षत्रियस्वभावकरिकैजन्य जेशौर्यादिक अनागंतुककर्महैं ॥ तिनकर्मोंकरिकैवशीकृतहुआ तूंअर्जुन मोहकेवशतैं जिसयुद्धकेकरणेकूं नहींइच्छताहैं ॥ अर्थात् मैंअर्जुन स्वतंत्रहूं यातैं जिसजिसअर्थकीइच्छाकरूंगा तिसीहीअर्थकूं संपादनकरूंगा इसप्रकारकेभ्रमरूपमोहकेवशतैं जोतूं बंधुवधादिकों कानिमित्तभूतइसयुद्धकेकरणेकूं नहींइच्छताहै ॥ तिसयुद्धरूपकर्मकूं तूंअर्जुन अवशहुआभी करैगा ॥ अर्थात् तिसयुद्धरूपकर्मकेकरणेकीनहींइच्छाकरताहुआभी तूं पूर्वउक्तस्वाभाविककर्मोंकेपरतंत्रहुआ तथाअंतर्यामीपरमेश्वरकेपरतंत्रहुआ तिसयुद्धकूं अवश्यकरिकैकरैंगा इति ॥ ६० ॥ ❁ ॥ तहां (अवशः) इसपूर्वउक्तवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे स्वभावरूपप्रकृतिकाअधीनपणा तथाअंतर्यामीईश्वरकाअधीनपणा सूचनकऱ्या ॥ तहां स्वभावरूपप्रकृतिकाअधीनपणातौं पूर्वश्लोकविषे प्रतिपादनकऱ्या ॥ अब अंतर्यामीईश्वरकाअधीनपणा स्पष्टकरिकै प्रतिपादनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) ईश्वरःसर्वभूतानांहृद्देशेऽर्जुनतिष्ठति ॥ भ्रामयन्सर्वभूतानियंत्रारूढानिमायया ॥ ६१ ॥ ईश्वरः । सर्वभूताना म् । हृद्देशे । अर्जुन । तिष्ठति । भ्रामयन् । सर्वभूतानि । यंत्रारूढानि । मायया ॥ ६१ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन अंतर्यामी ईश्वर यंत्रविषे आरूढ काष्ठमय प्रतिमावोंकीन्यांई सर्वप्राणीयोंकूं मायाकरिकै जहांतहां भ्रमणकरावताहुआ सर्वप्राणीयोंके हृदयदेशविषे स्थितहोवैहै ॥ ६१ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जीवोंकेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार तिनसर्वजीवोंकूं शुभअशुभकर्मविषेप्रवर्त्तक जोअंतर्यामीनारायणहै ॥ जोअंतर्यामीनारायण ॥ (यःपृथिव्यां तिष्ठन्पृथिव्या अंतरो यंपृथिवीनवेद यस्यपृथिवीशरीरं यःपृथिवीमंतरोयमयति ॥ यच्चकिंचिज्जगत्सर्वंदृश्यतेश्रूयतेपिवा ॥ अंतर्बहिश्चतत्सर्वंव्याप्यनारायणःस्थितः) ॥ इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै प्रतिपादितहै ॥ इनदोनोश्रुतियोंका यहअर्थहै ॥ जोअंतर्यामीईश्वर पृथिवीविषेस्थितहुआ तिसपृथिवीकेअंतरहै ॥ तथा जिस अंतर्यामीईश्वरकूं सापृथिवी नहींजानतीहै ॥ तथा जिसअंतर्यामीईश्वरका सापृथिवी शरीरहै ॥ तथाजोअंतर्यामीईश्वर तिसपृथिवीकूंप्रवर्त्तकरैहै सोहीअंतर्यामी ईश्वर तुमाराआत्माहै इति ॥ और जितना की सर्वजगत् देखणेविषेआवैहै तथाश्रवणकरणेविषेआवताहै ॥ तिसनामरूपात्मकसर्वजगत्कूं अंतर्बाह्यव्याप्यकरिकै

नारायण स्थितहै इति ॥ इसप्रकारका अंतर्यामीनारायणरूपईश्वर सर्वप्राणियोंके अंतःकरणरूपहृदयदेशविषे स्थितहै ॥ अर्थात् जैसे सामान्यतैं सर्वत्रव्यापक भी सूर्यकाप्रकाश दर्पणादिकस्वच्छउपाधियोंविषे विशेषरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जैसे सर्वद्वीपोंकाअधिपतिभीश्रीराम उत्तरकोशलविषे विशेषरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सामान्यतैं सर्वव्यापकहुआभी सोअंतर्यामीईश्वर तिनअंतःकरणोंविषे विशेषकरिकैअभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं तिसअंतर्यामीईश्वरकी हृदयदेशविषेस्थिति कथनकरीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअंतर्यामीईश्वर क्याकार्यकरताहुआ तिनसर्वप्राणीयोंकेहृदयदेश विषेस्थितहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (भ्रामयन्इति) हेअर्जुन सोअंतर्यामीईश्वर आपणीमायाकरिकै तिनसर्वप्राणीयोंकूं आपणेआ पणे पुण्यपापकर्मोंकेअनुसार तथापूर्वलेसंस्कारोंकेअनुसार जहांतहां शुभअशुभकर्मविषे प्रवर्त्तकरताहुआ तिनसर्वप्राणीयोंकेहृदयदेशविषे स्थितहोवैहै ॥ अब इसअर्थविषे दृष्टांतकूं कथनकरेहैं (यंत्रारूढानिइति) हेअर्जुन यंत्रविषेआरूढ जेकाष्ठरचित पुरुषअश्वादिरूपप्रतिमाहैं जेप्रतिमा अत्यंतपरतंत्रहैं ॥ तिनकाष्ठम यप्रतिमावोंकूं जैसे सूत्रधारीमायावीपुरुष भ्रमणकरावैहै ॥ तैसे यहअंतर्यामीईश्वरभी आपणीमायाकरिकै तिनसर्वप्राणीयोंकूं जहांतहां भ्रमणकरावैहै इति ॥ यातैं इसयुद्धकेकरणेकीनहींइच्छाकरताहुआभी तूंअर्जुन तिसअंतर्यामीईश्वरकीप्रेरणातैं अवश्यइसयुद्धकूंकरैंगा ॥ ईहां (हेअर्जुन) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे शुद्धअंतःकरणवत्त्व कथनकऱ्या ताकरिकै यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ शुद्धअंतःकरणवाला तूंअर्जुन ऐसेसर्वांतर्यामीईश्वरकेजानणेकूं योग्यहैं इति ॥ ॥ ६१ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् परतंत्रसर्वप्राणीयोंकूं जोकदाचित् अंतर्यामीईश्वरहीं प्रेरणाकरताहोवै ॥ तौ (स्वर्गकामोयजेत परदारान्नगच्छेत्) इ त्यादिकविधिनिषेधशास्त्रकूं तथासर्वपुरुषप्रयत्नकूं अनर्थकता प्राप्तहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) तमेवशरणंगच्छसर्वभावेनभारत ॥ तत्प्रसादात्परांशांतिंस्थानंप्राप्स्यसिशाश्वतम् ॥ ६२ ॥ तम् । एव । शर णम् । गच्छ । सर्वभावेन । भारत । तत्प्रसादात् । पराम् । शांतिम् । स्थानम् । प्राप्स्यसि । शाश्वतम् ॥६२॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेभारत सर्वप्रकारकरिकै तिसईश्वररूप आश्रयकूं हीं तूं आश्रयणकर तिसईश्वरकेप्रसादतैं तूं परा शांतिकूं तथा शांश्वत स्थानकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ ६२ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोअंतर्यामीईश्वर सर्वप्राणीयोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै तिनसर्वप्राणीयोंकूं शुभअशुभकार्यविषेप्रवर्तकरेहै ॥ ऐसेसर्वकेआश्रयरूपअं तर्यामीईश्वरकूंहीं इससंसारसमुद्रकेउत्तरणवासतै तूंसर्वभावकरिकै आश्रयणकर ॥ अर्थात् शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै सर्वप्रकारकरिकै

तिसईश्वरकूं तूं आश्रयणकर ॥ इसप्रकार जबी तूं अर्जुन सर्वप्रकारकरिकै तिसअंतर्यामीईश्वरकूंहीं आश्रयणकरैंगा ॥ तबी अंतर्यामीईश्वरकेअनुग्रहतैं तूंअर्जुन पराशांतिकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ अर्थात् तत्त्वज्ञानकीउत्पत्तिपर्यंत तिसईश्वरकेअनुग्रहतैं तूंकार्यसहितअविद्याकीनिवृत्तिरूप पराशांतिकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ तथा शाश्वतस्थानकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ तहां अद्वितीयस्वप्रकाशपरमानंदब्रह्मरूपकरिकै जोअवस्थानहै ताकानाम स्थानहै ॥ कैसाहैसोस्थान शाश्वतहै ॥ अर्थात् उत्पत्ति नाशतैंरहितहोणेतैं नित्यहै ॥ ऐसे नित्यस्थानकूं तूं प्राप्तहोवैंगा ॥ अर्थात् तिसईश्वरकेअनुग्रहतैंप्राप्तभयाजो अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारका तत्त्वज्ञानहै ॥ तिसतत्त्व ज्ञानतैं कार्यसहितअविद्याकीनिवृत्तिरूप तथापरमानंदकीप्राप्तिरूप मोक्षकूं तूं प्राप्तहोवैंगा ॥ ईहां किसीटीकाविषे (परांशांतिम्) इसवचनकरिकै समाधिका ग्रहण कऱ्याहै ॥ तिससमाधिकीप्राप्ति इसपुरुषकूं ईश्वरकेअनुग्रहतैंहींहोवैहै ॥ यहवार्त्ता (समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात्) इससूत्रकरिकै पतंजलिभगवान्‌नैंभी कथन करीहै इति ॥ ६२ ॥ ❀ ॥ अब इससर्वगीताशास्त्रकेअर्थकाउपसंहारकरताहुआ श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कहैहै ॥

(मू० श्लो०) इतितेज्ञानमाख्यातंगुह्याद्गुह्यतरंमया ॥ विमृश्यैतदशेषेणयथेच्छसितथाकुरु ॥ ६३ ॥ इति । ते । ज्ञानम् । आख्यातम् । गुह्यात् । गुह्यतरम् । मया । विमृश्य । एतत् । अशेषेण । यथा । इच्छसि । तथा । कुरु ॥ ६३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरनैं तुमारेतांई इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै गुह्यपदार्थतैंभी अत्यंतगुह्य आत्मज्ञान कथनकऱ्याहै यातैं ईसगीता शास्त्रकूं आदिअंत्यपर्यंत विचारकरिकै जिसप्रकार इच्छैताहोवै तिसप्रकार तूं कर ॥ ६३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन हमाराअनन्यभक्त तथाअत्यंतप्रिय ऐसाजोतूंअर्जुनहैं ॥ तिसतुमारेतांई मैंपरमआप्तसर्वज्ञपरमेश्वरनैं इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै मोक्षकासाधनरूप आत्मविषयकज्ञान कथनकऱ्याहै ॥ कैसाहैसोज्ञान गुह्यपदार्थतैंभी अत्यंतगुह्यहै ॥ अर्थात् परमरहस्यरूप ऐसाजो संन्यासपर्यंत निष्कामकर्मयोगहै ॥ तिसगुह्यकर्म योगतैंभी यहआत्मज्ञान गुह्यतर कहीये अत्यंतरहस्यरूपहै ॥ जिसकारणतैं तिससंन्यासपर्यंतकर्मयोगका यहआत्मज्ञान फलरूपहींहै ॥ साधनकीअपेक्षाकरिकै फलविषे रहस्यरूपता युक्तहींहै ॥ अथवा इसलोकविषे गुह्यराखणेयोग्य जे मंत्र तंत्र मणि रसायण आदिकपदार्थहैं ॥ तिनगुह्यपदार्थोंतैंभी यहआत्मज्ञान अत्यंत गुह्यहै ॥ काहेतैं तेमंत्रतंत्रादिक इसपुरुषकूं केवलसांसारिकअनित्यसुखकीहीं प्राप्तिकरेहैं ॥ और यहआत्मज्ञानतौ इसपुरुषकूं ब्रह्मानंदरूपनित्यसुखकीहीं प्राप्ति करेहै ॥ यातैं तिनमंत्रतंत्रादिकोंतैं इसआत्मज्ञानविषे अत्यंतगुह्यरूपता युक्तहीहै ॥ यातैं हेअर्जुन मैंपरमेश्वरनैं तुमारेतांई उपदेशकऱ्याजो यहगीताशास्त्रहै ॥ तिसगीताशास्त्रकूं पूर्वउत्तरवाक्योंकीएकवाक्यतापूर्वक आदिअंत्यपर्यंत समग्र विचारकरिकै पश्चात् आपणेअधिकारकेअनुसार जिसअर्थकेअनुष्ठानकरणेकी

तूं इच्छाकरताहोवैं ॥ तिसअर्थकेअनुष्ठानकूं तूंकर ॥ परंतुइसगीताशास्त्रकूं आदिअंत्यपर्यंत भलीप्रकारतैं नहींविचारकरिकै केवलआपणीइच्छामात्रकरिकै तुमारेकूं किंचित् भीकार्यकरणेयोग्यनहींहै ॥ ईहांश्रीभगवान्का यहतात्पर्यहै ॥ जोमुमुक्षु अशुद्धअंतःकरणवालाहै ॥ तिसमुमुक्षुजनकूंतौं प्रथम मोक्षकेसाधन भूतआत्मज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यताकेप्रतिबंधकपापकर्मोंकेनाशकरणेवासतै स्वर्गादिकफलकीइच्छाकापरित्यागकरिकै तथाभगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै आपणेवर्ण आश्रमकेधर्मोंकाहींअनुष्ठान करणेयोग्यहै ॥ तिननिष्कामकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै शुद्धहूआहैअंतःकरणजिसका ऐसासोअधिकारीपुरुष जोकदाचित् ब्राह्मणशरीर होवै ॥ तौं सोब्राह्मणअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानकीइच्छारूपाविविदिषाकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै आत्मज्ञानकेसाधनरूप वेदांतवाक्योंके विचारवासतै शास्त्रप्रतिपादितविधितैं शिखायज्ञोपवीतकेत्यागपूर्वकसर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंहींकरै ॥ सोसंन्यासकेग्रहणकरणेकाविधि आत्मपुराणके एकादशेअध्या यविषे हम विस्तारतैं निरूपणकरिआयेहैं ॥ यातैं ईहांलिख्यानहीं॥ तिससंन्यासतैं एकभगवत्शरणताकरिकै पूर्वउक्त विविक्तदेशसेवादिकज्ञानसाधनोंके अभ्यासतैं श्रवणमनननिदिध्यासनकरिकै आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै तिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और सर्वकर्मोंके संन्यासकरणेविषेअनधिकारी ऐसेजे क्षत्रियवैश्यादिकमुमुक्षुहैं ॥ तिनमुमुक्षुक्षत्रियवैश्यादिकोंनैंतौ अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतरभी आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूंहींकरणा ॥ यद्यपि अंतःकरणकीशुद्धिदास तैंहीं कर्मोंकाअनुष्ठानहोवैहै ॥ ताअंतःकरणकीशुद्धितैं अनंतर तिनकर्मोंकेअनुष्ठानका कोईप्रयोजन नहींहैं ॥ तथापि श्रुतिस्मृति रूपभगवत्की आज्ञाके पालनवासतै तथाअन्यलोकोंकूंशुभकर्मोंविषेप्रवर्त्तनरूपलोकसंग्रहवासतै तिनक्षत्रियवैश्यादिकोंनैं अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतरभी तिनकर्मोंकूंहींकरणा ॥ इसप्रकार निष्कामकर्मोंकेकरतेहूए तिनक्षत्रियवैश्यादिकमुमुक्षुजनोंकूं एकभगवत्शरणताकीप्राप्तिकरिकै पूर्वजन्मविषेकन्येहूए संन्यासादिकसाधनोंकेपरिपाकतैं अथवा हिर ण्यगर्भकिन्यांई संन्यासकीअपेक्षातैंविनाहीं केवल परमेश्वरकेअनुग्रहमात्रकरिकै अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेआत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अथ वातिनमुमुक्षुक्षत्रियवैश्यादिकोंकूं अगलेजन्मविषे ब्राह्मणशरीरकीप्राप्तिहोइकै तहां संन्यासादिकसाधनपूर्वक आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै॥इति ॥ हेअर्जुन इसप्रकारकेविचारकीयेहूए ईहां मोहकेप्राप्तिकाअवकाश होवैनहीं इति ॥ ६३ ॥ ❀ ॥ तहां अत्यंतगंभीरजो यहगीताशास्त्रहै ॥ तागीताशास्त्रके आदिअंत्यपर्यंत समग्र विचारकरणेतैंजन्यपरिश्रमकीनिवृत्तिकरणेवासतै आपहीं श्रीभगवान् कृपाकरिकै तिस सर्वगीताशास्त्रकेसारअर्थकूं संक्षेपकरिकै कथनकरेहै

(मू०श्लो०) सर्वगुह्यतमंभूयःशृणुमेपरमंवचः ॥ इष्टोसिमेदृढमितिततोवक्ष्यामितेहितम् ॥ ६४ ॥ सर्वगुह्यतमं । भूयः । शृणु । मे । परमं । वचः । इष्टः । असि । मे । दृढम् । इति । ततः । वक्ष्यामि । ते । हितम् ॥ ६४ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन

सर्वतैंअत्यंतगुह्य हमारे परम वचनकूं तूं पुनः भी श्रवणकर जिसकारणतैं हमारेकूं तूंअतिशयकरिकै प्रिय हैं तिसकारणतैं मैं तुमारे हितकूं कथन करूंहूं ॥ ६४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वहमनैं संन्यासपर्यंत निष्कामकर्मयोगकूं गुह्य कह्याथा ॥ तथा तिस निष्कामकर्मयोगतैं ज्ञानकूं गुह्यतर कह्याथा ॥ अब तिसीनिष्कामकर्मयोगतैं तथा ताकेफलभूतज्ञानतैं सर्वतैं गुह्यतम तथासर्वतैं उत्कृष्ट ऐसेंहमारेवचनकूं तूं पुनःभी श्रवणकर ॥ अर्थात् पूर्व तिसतिसप्रसंगविषे विस्तारतैंकथनकर्‍याहुआभी सोवचन केवल तुमारेअनुग्रहवासतै मैंभगवान् पुनः तिसवचनकूं संक्षेपकरिकैकथनकरताहूं तिसवचनकूं तूं श्रवणकर ॥ तहां गुह्य पदार्थतैं जोअतिगुह्यहोवैहै ताकानाम गुह्यतरहै ॥ और तागुह्यतरपदार्थतैंभी जोअतिगुह्यहोवैहै ताकानाम गुह्यतमहै ॥ हेअर्जुन किसीपदार्थकेलाभवासतै अथवा आपणीपूजावासतै अथवा आपणीख्यातिवासतै मैंपरमेश्वर सोवचन तुमारेतांई नहींकहताहूं ॥ किंतु तूंअर्जुन हमारेकूं जिसकारणतैं अतिशयकरिकैप्रियहै तिसकारणतैं तुमारेकरिकै नहींपूछाहुआभी मैंपरमेश्वर कृपाकरिकै तुमारे परमश्रेयरूपहितकूं कथनकरताहूं इति ॥ ६४ ॥ ❀ ॥ श्रीभगवान् तिसपरमश्रेयरूपहितकूंकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजीमांनमस्कुरु ॥ मामेवैष्यसिसत्यंतेप्रतिजानेप्रियोसिमे ॥ ६५ ॥ मन्मनाः । भव । मद्भक्तः । मद्याजी । माम् । नमः । कुरु । माम् । एव । एष्यासि । सत्यम् । ते । प्रतिजाने । प्रियः । असि । मे ॥ ६५ ॥ (इतिपदच्छेदः)

हेअर्जुन तूं मन्मना तथामेराभक्त तथामद्याजी होवेउ तथा मैंपरमेश्वरकूं नमस्कार कर ऐसेकरताहूआ तूं मैंपरमेश्वरकूं हीं प्राप्तहोवैंगा तुमारेसमीप मैं सत्य प्रतिज्ञाकरताहूं जिसकारणतै तूं हमारेकूं प्रिय है ॥ ६५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ॥ हेअर्जुन तूं मन्मना होवउ ॥ तहां मैंभगवान्वासुदेवविषेहींहैमनजिसका ताकानाम मन्मनाहै ॥ ऐसामन्मना तूं होवउ ॥ अर्थात् सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरकाहीं तूं चिंतनकर ॥ शंका ॥ हेभगवन् कंसशिशुपालादिकभी द्वेषकरिकै सर्वदा तुमाराहींचिंतनकरतेभयेहैं इसप्रकारतैं मैंभी तुमाराचिंतनकरूं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (मद्भक्तःइति) हेअर्जुन तूंमैंपरमेश्वरकाभक्त होवउ ॥ तहां परमप्रेमकरिकै मैंपरमेश्वरविषे जोअनुरागरूप अनुरक्तिहै ताकानाम मेरीभक्तिहै ॥ ऐसीमेरीभक्तिकरिकै तूं युक्तहोवउ ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरविषयकाअनुरागकरिकै सर्वदा मैंपरमेश्वरविषयक आपणेमनकूं तूंकर ॥ यद्यपि तेकंसशिशुपालादिक मनकरिकै सर्वदा मैंपरमेश्वरकाचिंतनकरतेभयेहैं तथापि तेकंसशिशुपालादिक परमप्रेमकरिकै मैंपरमेश्वरविषेअनुरागवालेहुए मैंपरमेश्वरकाचिंतन नहींकरतेभयेहैं ॥ किंतु केवलद्वेषकरिकैहीं मेराचिंतनकरतेभयेहैं ॥ यातैं तेकंसशिशुपालादिक मैंपरमेश्वरकेभक्त कह्येजातेनहीं ॥ और तूंअर्जुनतौ

मैंपरमेश्वरकाभक्तहुआ हमाराचिंतनकर ॥ शंका ॥ हेभगवन् तैंपरमेश्वरविषयक साअनुरागरूपभक्तिहीं किसउपायकरिकैप्राप्तहोवैहे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके हुए ॥ श्रीभगवान् तिसभक्तिकेउपायकूंकथनकरेहै ॥ (मद्याजीइति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषयक अनुरागरूपभक्तिकीप्राप्तिवासतै तूं मद्याजी होवउ ॥ तहां मैंभगवान्वासुदेवकेपूजनकरणेकाहै स्वभावजिसका ताकानाम मद्याजीहै ॥ अर्थात् सर्वकालविषे तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकेपूजापरायणहोवउ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूजनकरणेकीसामग्रीकेअभावहुए तिसअनुरागरूपभक्तिकीप्राप्तिवासतैं क्याउपाय करणेयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (मांनमस्कुरुइति) हेअर्जुन तिसपूजाकीसामग्रीकेअभावहुए मैंपरमेश्वरकूं तूंनमस्कारकर ॥ अर्थात् अत्यंतनिम्रतापूर्वक शरीरमनवाणीकरिकै तूं मैंपरमेश्वरकूंहीं आराधनकर ॥ ईहां (मद्याजी) इसपदकरिकै कथनकऱ्याजो पूजारूपअर्चनहै ॥ तथा (नमः) इसपदकरिकैकथनकऱ्याजो नमस्काररूपवंदनहै ॥ तेअर्चन वंदन दोनोंभाग वतधर्म दूसरेभीभागवतधर्मोंकेउपलक्षणहैं तेभागवतधर्म श्रीभागवतविषे यहकथनकऱ्येहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (श्रवणंकीर्त्तनंविष्णोःस्मरणंपादसेवनम् ॥ अर्चनंवंदनं दास्यंसख्यमात्मनिवेदनम्) ॥ अर्थयह ॥ विष्णुभगवान्का श्रवण तथाकीर्त्तन तथास्मरण तथापादोंकासेवन तथाअर्चन तथावंदन तथादासभाव तथासखाभाव तथाआत्माकाअर्पण यहनवभागवतधर्मकहेजावैहैं ॥इसीकूंहीं नवधाभक्तिभीकहेहैं इति ॥ हेअर्जुन इसप्रकारकेभागवतधर्मोंकाअनुष्ठानकरिकै सर्वदामैंपरमेश्वरविषे अनुरागकीउत्पत्तिकरिकै मैंपरमेश्वरकेचिंतनपरायणहुआ तूंअर्जुन मैंभगवान्वासुदेवकूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ अर्थात् तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकवेदांतवाक्योंतैं जन्य आत्मसाक्षात्कारकरिकै तूं अभेदरूपकरिकै मैंअद्वितीयनिर्गुणरूप परब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ हेअर्जुन इसउक्तअर्थविषे तूं संशयकूं मतकर ॥ मैंपरमेश्वर तुमारेआगेइसउक्तअर्थविषे सत्यप्रतिज्ञाकूंकरताहूं ॥ जिसकारणतैं तूं अर्जुन मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहैं ॥ तिसकारणतैं तैंप्रिय अर्जुनकेसाथि वंचनाकरणी हमारे कूंउचितनहींहै इति ॥ अथवा (सत्यंते) इसवचनविषे (सति अंते) इसप्रकारकापदच्छेदकरिकै यहअर्थकरणा ॥ प्रारब्धकर्मकेनाशहुए तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोवैंगा इति ॥ परंतु इसद्वितीयव्याख्यानतैं सोप्रथमव्याख्यानहीं समीचीनहै ॥ काहेतें (विशतेतदनंतरम्) इसवचनकरिकै पूर्व प्रारब्धकर्मके नाशहुएतैं अनंतर तत्त्ववेत्तापुरुषकूं ब्रह्मभावकीप्राप्ति कथनकरिआयेहैं ॥ तिसपूर्वउक्तअर्थकाहीं (मामेवैष्यसिसत्यंते) इसवचनकरिकैअनुवाद अंगीकारकरणाहोवैंगा ॥ तिसअनुवादकीअपेक्षाकरिकै अर्जुनकेविश्वासकीदृढताकरावणेहारा सोप्रथमव्याख्यानहीं समीचीनहै इति ॥ तहां इसलोककरिकै (यतःप्रवृत्तिर्भूतानांयेनसर्व मिदंततम् ॥ स्वकर्मणातमभ्यर्च्यसिद्धिंविंदतिमानवः) इसपूर्वउक्तश्लोकका व्याख्यानकऱ्या इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (मन्मनाभव) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ तहां मैंहींप्रत्यक्आत्मा आनंदघनपरिपूर्णब्रह्मरूपहूं इसप्रकारतैं प्रत्यक् अभिन्नब्रह्माकारहैमनजिसका ताकानाम मन्मनाहै ॥ ऐसामन्मना तूं

अर्जुन होवउ ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं ज्ञानकांडरूपतृतीयषट्कका जीवब्रह्मकाअभेदरूपअर्थ संक्षेपकरिकै कथनकऱ्या ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकीज्ञाननिष्ठा किसउपायकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (मद्भक्तःइति) हेअर्जुन तिसज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतै तूंमैंपरमेश्वरका अनन्यभक्तहोवउ ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं उपासनाकांडरूप द्वितियषट्कका भगवद्भक्तिरूपअर्थ संक्षेपकरिकैकथनकऱ्या ॥ शंका ॥ हेभगवन् अल्पपुण्यवालेपुरुषकूं साभगवद्भक्तिभी कैसेउत्पन्नहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (मद्याजीइति) तहां मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकेकरणेकाहै स्वभावजिसका ताकानाम मद्याजीहै ॥ ऐसामद्याजी तूंहोवउं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै तूं आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूं कर ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं कर्मकांडरूप प्रथमषट्कका निष्कामकर्मरूपअर्थ संक्षेपकरिकैकथनकऱ्या ॥ शंका ॥ हेभगवन् यज्ञादिककर्मोंकासाधनरूप जोधनहै तिसधनकेअभावतैं तथास्त्रीआदिकोंकेअभावतैं जोपुरुष तिनयज्ञादिककर्मोंकेकरणेविषे असमर्थहैं ॥ तिसपुरुषकूं साभगवद्भक्ति दुर्लभहींहोवैगी ॥ ताभक्तिकेदुर्लभतातैं ब्रह्माकारचित्तकीवृत्ति अत्यंतदुर्लभहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् अत्यंतसुलभउपायकूंकथनकरेहै (मांनमस्कुरुइति)हेअर्जुन तिनयज्ञादिककर्मोंकेकरणेकाअसामर्थ्यहुए तूं प्राकृतभक्तिकरिकैहीं प्रतिमादिकोंविषे मैंभगवान्कूं धूपदीपादिकसर्वउपचारोंकेसमर्पणपूर्वक नमस्कारादिकोंकरिकै आराधनकर ॥ तहां (यज्ञोवैनमः) इत्यादिकवचनकरिकै आश्वलायनऋषि नमस्कारकूंभी यज्ञरूप कहताभयाहै ॥ अब सोपानक्रमतैं नमस्कार निष्कामकर्म भगवद्भक्ति इनतीनसाधनोंकीप्राप्तिपूर्वक ज्ञाननिष्ठाकूंप्राप्तहुएपुरुषकेफलकूंकथनकरेहैं (मामेवैष्यसिइति) हेअर्जुन इसप्रकार साधनसंपत्तिपूर्वक ज्ञाननिष्ठाकूंप्राप्तहुआतूं सर्वजगत्केकारणरूप तथासर्वकेईश्वररूप तथासर्वशक्तिसंपन्न तथाअखंडएकरस ऐसेमैंतत्पदार्थपरमेश्वरकूंहीं प्राप्तहोवैगा ॥ जैसे दर्पणादिकउपाधिकेनिवृत्तहुए प्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जैसे घटरूपउपाधिकेनिवृत्तहुए घटाकाश महाकाशभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकूंहींप्राप्तहोवैंगा ॥ अब इसउक्तअर्थविषे अर्जुनकेदृढविश्वासकरावणेवासतै श्रीभगवान् शपथकरिकैकहेहै (सत्यंतेप्रतिजानेइति) हेअर्जुन अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकीज्ञाननिष्ठावालाहुआतूं मैंपरमात्मादेवकूंहीं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैगा इसप्रकारकीसत्यप्रतिज्ञाकूं मैं तुमारेआगे करताहूं ॥ जिसकारणतैं तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकूंअत्यंतप्रियहै ॥ इसकारणतैं वंचनाकरणेकेअयोग्यतैंअर्जुनकेप्रतिमैंभगवान् यहसत्यप्रतिज्ञा करूंहूं इति ॥ ६५ ॥ ❀ ॥ तहां (ईश्वरःसर्वभूतानांहृद्देशेऽर्जुनतिष्ठति ॥ तमेवसर्वभावेनशरणंगच्छ) यहजोवचनपूर्वकथनकऱ्याथा ॥ अब तिसीवचनकेअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज ॥ अहंत्वासर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुचः ॥ ६६ ॥ सर्वधर्मान् । परित्य

ज्य । मां । एकम् । शरणम् । व्रज । अहम् । त्वा । सर्वपापेभ्यः । मोक्षयिष्यामि । मा । शुचः ॥ ६६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन सर्वधर्मोंकूं परित्यागकरिके एक मैंपरमेश्वररूप शरणकूं तूं प्राप्तहोवउ मैंपरमेश्वर तुमारेकूं सर्वपापोंतें मुक्तकरूंगा तूं मंत शोककर ॥ ६६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां केईकधर्मतौं वर्णधर्महोवैहैं ॥ और केईकधर्मतौं आश्रमधर्म होवैहैं ॥ और केईकधर्मतौं सामान्यधर्म होवैहैं ॥ तहां श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैंब्राह्मणादिकवर्णमात्रकेप्रति जेधर्म विधानकऱ्येहैं ॥ तेधर्म वर्णधर्म कह्येजावैहैं ॥ और तिसशास्त्रनै ब्रह्मचर्यादिकआश्रममात्रकेप्रति जेधर्म विधानकऱ्येहैं ॥ तेधर्म आश्रमधर्म कह्येजावैहैं ॥ और तिसशास्त्रनै वर्णआश्रमदोनोंकेप्रति साधारणरूपतैं विधानकऱ्येजेधर्महैं ॥ तेधर्म सामान्यधर्म कह्येजावैहैं ॥ ते तीनोंप्रकारकेधर्म इसीअध्यायविषे पूर्व विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ तिनसर्वधर्मोंकूं परित्यागकरिके अथवा जितनैंकी वियमान धर्महैं तथा जितनैंकी अवियमान धर्महैं ॥ तिन सर्व धर्मोंकूं परित्यागकरिके ॥ अर्थात् स्वरूपनैं तिन धर्मोंकेवियमानहुएभी यहधर्महीं हमारा शरणरूपहै इसप्रकार स्वशरणतारूपतैं तिनधर्मोंकूं नहींस्वीकारकरिके तूं अर्जुन सर्वधर्मोंकेअधिष्ठानरूप तथासर्वधर्मोंकेफलप्रदातारूप मैंअद्वितीयईश्वररूपशरणकूं प्राप्तहोवउ ॥ अर्थात् तेपूर्वउक्तधर्महोवो ॥ अथवा नहींहोवो ॥ अन्यकीअपेक्षावाले तिनधर्मोंकरिके क्याप्रजोजन सिद्धहोवैहै ॥ और अन्यकीअपेक्षातेरहित ऐसाजो भगवत्काअनुग्रहहै ॥ तिसभगवत्केअनुग्रहतैंहीं मैंकृतार्थ होवैंगा ॥ इसप्रकारके निश्चयकरिके तिनधर्मोंविषे अतिआदरकूंनकरिके मैंपरमानंदघनमूर्त्तिश्रीभगवान्वासुदेवकूंहीं तूं निरंतरभावनाकरिके भज ॥ अर्थात् यहपरमात्मदेवकाचिंतनहीं परमतत्त्वहै ॥ इसतैंपरेदूसराकोईअधिकतत्त्वहैनहीं ॥ इसप्रकारकेविचारपूर्वक प्रेमकीउत्कटताकरिके सर्वअनात्मचिंतनतैंशून्य तथा तैलधाराकीन्याई अनवच्छिन्न ऐसीमनकीवृत्तियोंकरिकैं तूं मैंपरमात्मादेवकूं निरंतर चिंतनकर ॥ ईहां (मामेकंशरणंव्रज) इतनैंवचनमात्रकरिकेहीं सर्वधर्मोंकेत्यागकालाभ होइसकेहै ॥ यातैं पुनः (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिके जोतिनसर्वकर्मोंकेनिषेधकाअनुवादकऱ्याहै ॥ सो अनुवाद परमेश्वरविषे सर्वधर्मकार्योंकीकारिताके लाभवासतैकऱ्याहै ॥ अर्थात् मैं अंतर्यामीपरमेश्वरकूंहीं सर्वधर्मकार्योंकीकारिताहोणेतैं मैंपरमेश्वरकेशरणागतपुरुषकूंअवश्यकरिकै तिनधर्मोंकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ इतनेकहणेकरिके इसप्रकारकेव्याख्यानकाभी खंडनकऱ्या ॥सोव्याख्यानयहहै॥ (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इतनैंकहणेकरिके केवलधर्ममात्रकापरित्याग प्रतीतहोवैहै ॥ अधर्मकात्याग प्रतीतहोवैनहीं ॥और ईहां धर्मअधर्मदोनोंकापरित्याग विवक्षितहै॥यातैं ईहां धर्मपद धर्मअधर्मरूपकर्ममात्रकाबोधकहै ॥ ऐसेधर्मअधर्मरूपकर्ममात्रकूं परित्यागकरिके मैंपरमेश्वररूपशरणकूं तूं प्राप्तहोवउ इति ॥ सोइसप्रकारकाव्याख्यान संभवतानहीं ॥ का

हेतैं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं स्वरूपतैंतिनकर्मोंकात्याग विधाननहींकऱ्या ॥ किंतु स्वरूपतैं तिनकर्मोंकेविद्यमानहूएभी तिनकर्मोंविषे अतिआदरकूंनकरिकै एकभगवत्शरणमात्र ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी इनच्यारिआश्रमीयोंकेप्रति साधारणरूपतैं विधानकऱ्याहै ॥ तहां तिनच्यारि आश्रमीयोंका शास्त्रप्रतिपादित स्वधर्मविषेतौं अतिआदर संभवहोइसकेहै ॥ यातैं तिनकर्मोंविषें अतिआदरकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान्नै (सर्वधर्मान्परित्यज्य) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ और अनर्थरूपफलकीप्रातिकरणेहाराजोअधर्महै ॥ तिसअधर्मविषे किसीभीबुद्धिमान्पुरुषका आदर संभवतानहीं ॥ तथा तिनअधर्मोंकापरित्याग दूसरेप्रतिषेधशास्त्रोंकरिकैभीप्राप्तहै ॥ यातैं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनविषेस्थित धर्मपदकूं धर्मअधर्मसाधारणकर्ममात्रकाउपलक्षणमानिकै इसवचनकूं अधर्मके त्यागकाबोधक अंगीकारकरणा संभवतानहीं ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥ शास्त्रप्रतिपादित वर्णआश्रमकेधर्मोंकूं जैसे स्वर्गादिरूपअभ्युदयकीकारणता शास्त्रविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे तिनधर्मोंकूं मोक्षकीकारणताभी होवैंगी ॥ इसप्रकारकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतैहीं श्रीभगवान्नैं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ कोई स्वरूपतैं तिनकर्मोंकेपरित्यागवासतै श्रीभगवान्नैं सोवचन नहींकह्याहै ॥ तहां जोकोईवादी यहवचनकहै ॥ (सर्वधर्मान्परित्यज्य)इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं सर्वधर्मअधर्मरूपकर्मोंकापरित्यागहीं विधानकऱ्याहै ॥ सोयहकहणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं शास्त्रविहित सर्वधर्मोंकात्यागतौं संन्यासकेविधायकवचनोंकरिकैहीं प्राप्तहै ॥ तैसे अधर्मोंकात्यागभी प्रतिषेधशास्त्रकरिकैहीं प्राप्तहै और जोअर्थ पूर्व किसीभी प्रमाणकरिकै नहींप्राप्तहोवैहै तिसीहींअर्थका विधानहोवैहै ॥ अन्यप्रमाणकरिकैप्राप्तअर्थका विधानसंभवैनहीं ॥ यातै (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं धर्मअधर्मरूपसर्वकर्मोंकात्याग विधाननहींकऱ्याहै ॥ और जोकोईवादी यहवचनकहै (सर्वधर्मान्परित्यज्य) यहभगवान्कावचनभी सर्वकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासका विधायकहींहै सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (मामेकंशरणंव्रज) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नै एकभगवत्शरणतामात्रहीं विधानकरीहै यातैं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) यहवचन केवल अनुवादमात्रहींहै ॥ कर्मोंकेत्यागकाविधायकनहींहै॥और सर्वशास्त्रोंका परमरहस्यईश्वरशरणताहींहै ॥ याकारणतैं श्रीभगवान्नैं तिसईश्वरशरणताविषेहीं इसगीताशास्त्रकीपरिसमाप्तिकरीहै ॥ तिसईश्वरशरणतातैंविना तिससंन्यासकाभी आपणेफलविषे परिअवसानंहोवैनहीं ॥ किंतु तिसईश्वरशरणताकीप्राप्तिकरिकैहीं तिससंन्यासका आपणेफलविषेपरिअवसानहोवैहै ॥ किंवा क्षत्रियहोणेतैं संन्यासआश्रमकाअनधिकारी जोअर्जुनहै ॥ तिसअर्जुनकेप्रति (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै सर्वकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकाउपदेश संभवताभीनहीं ॥ काहेतैं जोपुरुष जिसधर्मके करणेविषे अधिकारीहोवैहै ॥ तिसपुरुषकेप्रतिहीं तिसधर्मकाउपदेश संभवैहै ॥ तिसधर्मकेअनधिकारीपुरुषकेप्रति तिसधर्मकाउपदेश संभवैनहीं ॥ और जोकोइ

वादी यहवचनकहै ॥ ईहां श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेव्याजकरिकै अधिकारीब्राह्मणोंकेप्रतिहीं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै संन्यासकाविधानकऱ्याहै ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (वक्ष्यामितेहितम् त्वांमोक्षयिष्यामिसर्वपापेभ्यः त्वंमाशुचः) इसप्रकारके उपक्रमउपसंहारवाक्योंविषे अर्जुनकेप्रतिहीं यहउपदेश प्रतीतहोवैहै ॥जोकदाचित् अर्जुनके व्याजकरिकै संन्यासकेअधिकारीब्राह्मणोंकेप्रतिहीं यह भगवान्‌काउपदेश अंगीकारकरिये ॥ तौं तेउपक्रमउपसं हारवाक्य असंगतहोवैंगे ॥ यातैं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास विधाननहींकऱ्याहै ॥ किंतु वर्णआश्रमके धर्मोंकीन्याईं संन्यासधर्मोंविषेभी अनादरकारिकै एकभगवत्‌शरणतामात्रविषेहीं श्रीभगवान्‌का तात्पर्यहै इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सर्वधर्मोंविषे नहींआदर करिकै तूं एकमैंपरमेश्वरकेशरणकूं प्राप्तहुआहै ॥ इसकारणतैं सर्वधर्मकार्योंकाप्रवर्त्तक मैंपरमेश्वर तुमारेकूं बंधुवधादिनिमित्तक तथासंसारकेहेतुभूत ऐसे सर्व पापोंतैं प्रायश्चित्तैंविनाहीं मुक्तकरूंगा ॥ तात्पर्ययह ॥ (धर्मेणपापमपनुदति) इसश्रुतिविषे धर्मकूं पापनिवृत्तिकाहेतु कथनकऱ्याहै॥ सोधर्मरूप मैंपरमेश्वरहींहूं॥ यातैं प्रायश्चित्तैंविनाहीं मैंधर्मरूपपरमेश्वर तुमारेकूं तिनसर्वपापोंतैंमुक्तकरूंगा ॥ इसकारणतैं तूंशोककूंमतकर ॥ अर्थात् इसयुद्धविषेप्रवृत्तहुए मैंअर्जुनका बंधु वधादिनिमित्तक प्रत्यवायतैं किसप्रकार निस्तारहोवैंगा इसप्रकारकेशोककूं तूं मतकर इति ॥ तहां (मामेकंशरणंव्रज) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं भगवत शरणका विधानकऱ्या ॥ सोभगवत्‌शरण शास्त्रविषे तीनप्रकारका कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (तस्यैवाहंममैवासौसएवाहमितित्रिधा ॥ भगवच्छरणत्वं स्यात्साधनाभ्यासपाकतः) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकूं साधनोंकेअभ्यासकेपरिपाकतैं तीनप्रकारका भगवत्‌शरण प्राप्तहोवैहै ॥ तहां एकतौं तिसपरमे श्वरकाहीं मैंहूं इसप्रकारका भगवत्‌शरण होवैहै॥और दूसरा यहपरमेश्वर मेराहींहै इसप्रकारका भगवत् शरण होवैहै ॥ और तीसरा सोपरमेश्वर मैंहींहूं इसप्रका रका भगवत्‌शरण होवैहै॥तहां प्रथम भगवत्‌शरणतौं मृदु कह्याजावैहै॥जैसे (सत्यपिभेदापगमेनाथतवाहंनमामकीनस्त्वम्॥सामुद्रोहितरंगः क्वचनसमुद्रोनतारंगः॥) ॥ अर्थयह ॥ हेसर्वजगत्‌केनाथ परमेश्वर ॥ जैसे समुद्रका तथातरंगोंका भेदनहींहै॥तौंभी समुद्रकेतरंगकहेजावैहैं॥कोई समुद्र तरंगोंका कह्याजावैनहीं ॥ तैसे तुमारा तथाहमारा यद्यपि भेदनहींहैं ॥ तथापिमैंतुमाराहीहूं ॥ तूं परमेश्वर हमारानहींहै इति॥इत्यादिकवचनोंविषे सोप्रथम भगवत्‌शरण कथनकऱ्याहै ॥ और दूसरा भगवत्‌शरण मध्यम कह्याजावैहै ॥ जैसे (हस्तमुत्क्षिप्ययातोसि बलात्कृष्णकिमद्भुतम् ॥ हृदयाद्यदिनिर्यासि पौरुषंगणयामिते ॥) अर्थयह ॥ हेकृष्ण भगवान् बलात्कारसे हमारेहस्तकूंछुडाइकै तूं जाताभयाहै ॥ इसकरिकै तुमारा कोईअद्भुतपौरुष सिद्धनहींहोता ॥ जबी तूं हमारेहृदयतैं निकसिजावैंगा ॥ तबी मैं तुमारेपौरुषकूं मानउगा ॥ सोहमारेहृदयतैं कदाचित्‌भी तूं जाणेवालानहींहैं इति ॥ इत्यादिकवचनोंविषे सोदूसरा भगवत् शरण कथनकऱ्याहै ॥ और

तीसराभगवत्‌शरण अतिमात्र कह्याजावैहै ॥ जैसे (सकलमिदमहंचवासुदेवः परमपुमान्परमेश्वरःसएकः ॥ इतिमतिरचलाभवत्यनंते हृदयगतेव्रजतान्विहाय दूरात्) ॥ अर्थयह ॥ यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् तथामैं वासुदेवरूपहींहैं ॥ सोपरमपुरुषपरमेश्वर एकअद्वितीयरूपहींहै ॥ इसप्रकारकीअचलमति जिनपुरुषोंकी हृदयदेशविषेस्थितपरमात्मादेवविषे होवैहै ॥ हेदूत ऐसेसर्वत्रब्रह्मदृष्टिवालेपुरुषोंकेसमीप तुमनैं कदाचित्‌भी नहींजाणा ॥ किंतु ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंकूं दूरतैंपरित्यागकरिकैं तूं गमनकर ॥ यह दूतकेप्रति यमराजाकावचनहै इति ॥ इत्यादिकवचनोंविषे सोतीसरा भगवत्‌शरण कथनकऱ्याहै ॥ इसप्रकारकी भगवत्‌शरणरूपभूमिकाविषे अंबरीष प्रह्लाद गोपी आदिक बहुतभक्तजन दृष्टांतरूपकरिकैकथनकऱ्येहैं ॥ यहतीनोंप्रकारका भगवत्‌शरण भक्तिरसायननामाग्रंथविषे श्रीमधुसूदनस्वामीनैं विस्तारतैंवर्णनकऱ्याहै इति ॥ तहां इसगीताशास्त्रविषे श्रीभगवान्‌कूं कर्मनिष्ठा ज्ञाननिष्ठा भगवद्भक्तिनिष्ठा यहतीनोंनिष्ठा परस्पर साध्यसाधनभावकूं प्राप्तहुई विवक्षितहैं ॥ तेतीनोंनिष्ठा पूर्व बहुतविस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ और यहअष्टादशअध्याय सर्वगीताशास्त्रका उपसंहाररूपहै ॥ यातैं ईहां प्रथम सर्वकर्मोंकेसंन्यासपर्यंतकर्मनिष्ठातौं (स्वकर्मणातमभ्यर्च्यसिद्धिंविंदतिमानवः) इसवचनविषे उपसंहारकरीहै ॥ और दूसरी संन्यासपूर्वक श्रवणादिकसाधनोंकेपरिपाकसहित ज्ञाननिष्ठातौं (ततोमांतत्त्वतोज्ञात्वाविशतेतदनंतरम्) इसवचनविषे उपसंहारकरीहै ॥ और तीसरीभगवद्भक्तिनिष्ठातौं उक्तदोनोंनिष्ठावोंका साधनरूपभीहै तथाफलरूपभीहै ॥ यातैं सातीसरी भगवद्भक्तिनिष्ठा श्रीभगवान्‌नैं अंतविषे (सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज) इसवचनविषे उपसंहारकरीहै इति ॥ और श्रीभाष्यकारभगवान्‌तौं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसवचनकरिकै श्रीभगवान् सर्वकर्मोंकेसंन्यासकाअनुवादकरिकै (मामेकंशरणंव्रज) इसवचनकरिकै ज्ञाननिष्ठाका उपसंहारकरताभयाहै इसप्रकारकाव्याख्यान करतेभयेहैं ॥ तथा दूसरेभीअनेकप्रकारकेदुर्मतोंका खंडनकरतेभयेहैं ॥ सोसर्वप्रसंग ईहां ग्रंथकेविस्तारभयतैं लिख्यानहीं इति ॥ ६६ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान्‌नैं (सर्वधर्मान्परित्यज्य) इसश्लोकपर्यंत सर्वगीताशास्त्रकाअर्थ समाप्तकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् इसब्रह्मविद्यारूपगीताशास्त्रके संप्रदायविधिकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) इदंतेनातपस्कायनाभक्तायकदाचन ॥ नचाशुश्रूषवेवाच्यंनचमांयोभ्यसूयति ॥ ६७ ॥ इदम् । ते । न । अतपस्काय । न । अभक्ताय । कदाचन । न । च । अशुश्रूषवे । वाच्यम् । न । च । माम् । यः । अभ्यसूयति ॥ ६७ ॥ (इतिप०) ॥

हेअर्जुन तुमारे हितवासतैं हमनैंकथनकऱ्याहुआ यहगीताशास्त्र इंद्रियोंकेनिग्रहतैंरहितपुरुषकेतांई कदाचित्‌भी नहीं उपदेश

करणेयोग्यहै तथा भक्तितैंरहितपुरुषकेतांईभी नहीं उपदेशकरणेयोग्यहै तथा शुश्रूषातैंरहितपुरुषकेतांईभी नहीं उपदेशकरणेयो
योग्यहै तथा जोपुरुष मैंपरमेश्वरविषयक असूयाकरेहै तिसकेतांईभी नहीं उपदेशकरणेयोग्यहै ॥ ६७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तुमारे जन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्तिकरणेवासतै मैंसर्वज्ञ परमआप्त परमेश्वरनैं सर्वशास्त्रोंके अर्थकारहस्यरूप जोयहगीताशास्त्र उपदेशकन्याहै ॥ सोयहगीताशास्त्र अतपस्कपुरुषकेतांई कदाचित्भी नहींउपदेशकरणेयोग्यहै ॥ तहां जोपुरुष शब्दादिकविषयोंतैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेनिग्रहतैंरहितहै ताकानाम अतपस्कहै ॥ ऐसेइंद्रियोंकेनिग्रहतैंरहितपुरुषकेतांई यहगीताशास्त्र किसीभीअवस्थाविषे नहींउपदेशकरणेयोग्यहै ॥ अर्थात् ॥ महान्संकटकेप्राप्त हूएभी ऐसेअजितइंद्रियपुरुषकेतांई यहगीताशास्त्र नहींउपदेशकरणेयोग्यहै ॥ ईहां (कदाचन) इसपदका वक्ष्यमाणतीनोंपर्यायोंविषे संबंधकरणा ॥ हे अर्जुन जोपुरुष इंद्रियोंकेनिग्रहवालातौंहैं ॥ परंतुब्रह्मविद्याकेउपदेष्टागुरुविषे तथाईश्वरविषे भक्तितैंरहितहै ॥ ऐसेअभक्तपुरुषकेतांईभी यहगीताशास्त्र कदाचित् भीनहींउपदेशकरणेयोग्यहै ॥ हेअर्जुन जोपुरुष इंद्रियोंकेनिग्रहवालाभीहै तथाभक्तिवालाभीहै ॥ परंतु जोपुरुष गुरुकी पादप्रक्षालनादिसेवारूपशुश्रुषातैंरहितहै ऐसेपुरुषकेतांईभी यहगीताशास्त्र कदाचित्भी नहींउपदेशकरणेयोग्यहै ॥ हेअर्जुन जोपुरुष इंद्रियोंकेनिग्रहवालाभीहै तथाभक्तिवालाभीहै तथाशुश्रूषावालाभीहै परंतु जोपुरुष मैं भगवान्वासुदेवकूं मनुष्यमानिकै तथाअसर्वज्ञत्वादिकगुणोंवालामानिकै असूयाकरेहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरविषे आत्मप्रशंसादिकदोषोंकाआरोपणकरिकै हमारेईश्वरपणेकूं नहींसहनकरताहूआ जोपुरुष हमारेद्वेषकूंहींकरेहै ॥ ऐसे मैं परमेश्वरकीउत्कृष्टताकूंनहींसहनकरणेहारेपुरुषकेतांईभी यहगीताशास्त्र कदाचित्भी नहींउपदेशकरणेयोग्यहै ॥ किंतु जोपुरुष मनसहितश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेनिग्रहरूपतपवालाहै ॥ तथा गुरुईश्वरविषे भक्तिवालाहै ॥ तथा गुरुकीसेवारूपशुश्रूषावालाहै ॥ तथा मैंपरमेश्वरविषे अनुरागवालाहै ॥ ऐसेअधिकारीपुरुषकेतांईहीं यहगीताशास्त्र उपदेशकरणेयोग्यहै ॥ तहां इसश्लोकविषे एकनकारकेकथन करणेकरिकैहीं उक्तअर्थकीसिद्धि होइसकेहै ॥ ताएकनकारकूंनकहिकै श्रीभगवान्नैं जोईहां च्यारिनकारकथनकन्येहैं ॥ सो एकएकविशेषणकेअभावहूएभी इस गीताशास्त्रकेउपदेशकीअयोग्यताकेबोधनकरणेवासतै कथनकन्येहैं ॥ और (मेधाविनेतपस्विनेवाविद्यादेया) अर्थयह शास्त्रकेअर्थधारणकरणेकीशक्तिवाले मेधावीपुरुषकेतांई अथवा इंद्रियोंकेनिग्रहवाले तपस्वीपुरुषकेतांई यहब्रह्मविद्या देणेयोग्यहै ॥ इसवचनविषे विद्याकेअधिकारीका विकल्प देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं शुश्रूषा गुरुभक्ति भगवत्अनुरक्ति इनतीनविशेषणोंयुक्त तपस्वीपुरुषकेतांई यहविद्या देणेयोग्यहै ॥ अथवा तिनतीनविशेषणोंयुक्त मेधावीपुरुषकेतांई यहविद्या देणेयोग्यहै ॥ तहां विद्याकीप्राप्तिविषे मेधा तप इनदोनोंकूं पाक्षिकत्वहूएभी भगवत्अनुरक्ति गुरुभक्ति शुश्रूषा इनतीनोंका सर्वत्र नियमहींहै ॥ इसप्रकार श्रीभा

प्यकारभगवान् कथनकरतेभयेहैं ॥ तहां इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याजो विद्याउपदेशकेसंप्रदायकाप्रकारहै ॥ सोप्रकार श्रुतिविषेभी कथनकऱ्याहै॥ तहांश्रुति ॥ (विद्याहवैब्राह्मणमाजगाम गोपायमाशेवधिष्टेहमस्मि ॥ असूयकायानृजवेऽयताय नमाब्रूयाअवीर्यवतीतथास्याम्॥ यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः ॥) अर्थयह ॥ एककालविषे अनधिकारीपुरुषोंकूंप्राप्तहोइकै खेदकूंप्राप्तहुई वेदविद्या विद्याकेउपदेष्टाब्राह्मणोंकेसमीपजाइ कै यहवचन कहतीभई ॥ हेब्राह्मणोंतुम हमारेकूंगुह्यराखो ॥ ताकरिकै मैंविद्या तुमारेकूं भोगमोक्षदोनोंकीप्राप्तिकरूंगी ॥ और जोकदाचित् लोकोंकेऊपरिकृपादृष्टिकरिकै तुम हमारेकूं गुह्यनहींराखिसकतेहोवौ ॥ तौभीं जोपुरुष गुणोंविषेदोषोंकाआरोपणरूपअसूयादोषवालाहै ॥ तथा ऋजुभावतैंरहितहै ॥ तथा मनसहितइंद्रियोंकेनिग्रहतैंरहितहै ॥ तथा गुरुकीसेवाभक्तितैंरहितहै ॥ ऐसेअनधिकारीपुरुषकेतांई तुमोंनैं कदाचित्भी हमाराउपदेश नहींकरणा ॥ जोतुम धनादिकपदार्थोंकेलोभकरिकैऐसेअनधिकारीपुरुषोंकेतांई हमाराउपदेशकरौंगे ॥ तौंमैंवंध्यास्त्रीकीन्यांई निष्फलहोवौंगी ॥ किंतु जोपुरुष असूयादोषतैंरहितहै ॥ तथा ऋजुभाववालाहै ॥ तथाइंद्रियोंकेनिग्रहरूपतपवालाहै ॥ तथा गुरुकीसेवाभक्तिवालाहै ॥ तथा ईश्वरविषेअनुरागवालाहै ॥ ऐसेअधिकारीपुरुषोंकेतांई तुमोंनैं हमारा उपदेशकरणा इति ॥ किंवा जिसपुरुषकी परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै ॥ तथा जैसे परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै॥ तैसेहीं ब्रह्मविद्याकेउपदेष्टागुरुविषेपरमभक्तिहै ॥ तिसमहात्मापुरुषकूंहीं यहवेदांतप्रतिपादित अर्थ बुद्धिविषे प्रकाशमानहोवैहैं इति ॥६७॥ ❀ ॥ इसप्रकार इसब्रह्मविद्यारूपगीशास्त्रकेसंप्रदायविधिकूंकथनकारिकै ॥ अब श्रीभगवान् तिससंप्रदायकेप्रवर्त्तकपुरुषकेफलकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यइमंपरमगुह्यंमद्भक्तेष्वभिधास्यति ॥ भक्तिंमयिपरांकृत्वामामेवैष्यत्यसंशयः ॥ ६८ ॥ यः । इमम् । परमम् । गुह्यम् । मद्भक्तेषु । अभिधास्यति । भक्तिं । मयि । परां । कृत्वा । माम् । एव । एष्यति । असंशयः॥६८॥(इतिपदच्छेदः)
हेअर्जुन जोपुरुष मैंपरमेश्वरविषे परा भक्तिकूं करिकै इस परम गुह्य शास्त्रकूं मेरेभक्तोंविषे स्थापनकरेहै सोपुरुष मैंपरमेश्वरकूंहीं प्राप्तहोवैहै इसअर्थविषे संशयनहींहै ॥ ६८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तुमाराहमारासंवादरूप जोयहगीताशास्त्रहै ॥ कैसाहैयहगीताशास्त्र परमहै ॥ अर्थात् मोक्षरूप निरतिशयपुरुषार्थका साधनहोणेतैं सर्वतैं उत्कृष्टहै ॥ पुनःकैसाहैयहगीताशास्त्र गुह्यहै ॥ अर्थात् सर्वशास्त्रोंकेरहस्य अर्थकाप्रतिपादकहोणेतैं जिसीकिसीपुरुषकेतांई उपदेशकरणेयोग्यनहींहै ॥ ऐसेइसपरमगुह्यगीताशास्त्रकूं जोसंप्रदायकप्रवर्त्तक विद्वान्पुरुष मैंपरमेश्वरकेभक्तोंविषे स्थापनकरेहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरविषेअनुरागरूपभक्तिवालेपुरुषोंविषे जोविद्वान्पुरुष

इसगीताशास्त्रकूं पाठरूपतैं तथाअर्थरूपतैं स्थापनकरेहै ॥ ईहां (मद्भक्तेषु) इसवचनकरिकै जोपुनः भक्तिकाग्रहणकऱ्याहै ॥ सोपूर्वउक्त तपस्वीआदिकतीनविशेषणोंतैंरहितपुरुषकूंभी भगवद्भक्तिमात्रकरिकै पात्ररूपताकेसूचनकरणवास्तैहै इति ॥ तहां सोसंप्रदायकाप्रवर्त्तक विद्वान्पुरुष क्याबुद्धिकरिकै यहगीताशास्त्रातिनभक्तजनोंविषे स्थापनकरेहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (भक्तिमयिपरांकृत्वाइति) अधिकारीभक्तजनोंकेतांई जोहमनै यहगीताशास्त्र उपदेशकरीताहै सोयह हमनैं परमगुरुरूपभगवान्की शुश्रूषाहींकरीतीहै ॥ इसप्रकारकानिश्चयकरिकै जोविद्वान्पुरुषहमारेभक्तोंकेतांई यहगीताशास्त्र उपदेशकरेहै ॥ सोउपदेशकरतापुरुष मैंभगवान्वासुदेवकूं प्राप्तहींहोवैहै ॥ अर्थात् सोविद्वान्पुरुष इसजन्ममरणरूपसंसारतैं शीघ्रमुक्तहींहोवैहै॥हेअर्जुन इसअर्थविषे तुमनैं कदाचित्भी संशयनहींकरणा ॥ अथवा (भक्तिमयिपरांकृत्वामामेवैष्यत्यसंशयः) इसवचनका यहअर्थकरणा ॥ मैंपरमेश्वरविषे पराभक्तिकूंकरिकै सर्वसंशयोंतैंरहितहुआ सोविद्वान्पुरुष मैं परमेश्वरकूं अवश्यप्राप्तहींहोवैहै इति ॥ अथवा सोविद्वान्पुरुष मैंपरमेश्वरविषे पराभक्तिकूंकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ अन्यकिसीलोककूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (यइमंपरमंगुह्यम्) इसश्लोकका यहअर्थ कऱ्याहै ॥ जोपुरुष भगवद्भक्तितैंरहितहुआभी केवलआपणेमानपूजाकीइच्छावालाहुआ इसपरमरहस्यरूपगीताशास्त्रकूं मैंपरमेश्वरकेभक्तोंविषे प्राप्तकरेहै ॥ सोपुरुषभी तिसपुण्यविशेषकेप्रभावतैं मैंचिदेकरसपरमेश्वरविषे अद्वैतभावनारूप उपासनारूपभक्तिकूं करिकै ॥ अर्थात् तिसउपासनारूपपराभक्तिविषे अतिआदरकूंप्राप्तहोइकै तथातिसपरमभक्तिकूंअनुष्ठानकरिकै ॥ मैंपरमात्माकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेआत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमुक्तिकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ हेअर्जुन इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहकैमुतिकन्याय सूचनकऱ्या ॥ परमेश्वरकेभक्तिकेलेशमात्रतैंभीरहित ऐसेजे अजामिलादिक हुएहैं तेअजामिलादिक आपणेपुत्रविषे स्नेहकेवशतैं तिसपुत्रके नारायण इसनामकरिकै परमेश्वरकास्मरण करतेभयेहैं ॥ तिसनारायणनामकेउच्चारणमात्रतैं प्रसन्नताकूंप्राप्तहुआ परमेश्वर तिनअजामिलादिकोंकेतांई शुभगतिकीप्राप्ति करताभयाहै ॥ जबी नारायणनामकेउच्चारणमात्रकरिकैहीं अजामिलादिक शुभगतिकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तबी जोपुरुष वाणीकरिकै इसगीताशास्त्रकेरहस्यअर्थकूं प्रतिपादनकरेहै ॥ तिसपुरुषकूं भगवद्भक्तिलाभादिकक्रमकरिकै कृतकृत्यताहोवैहै याकेविषे क्याकहणाहै इति ॥ ईहां किसीकमूलपुस्तकविषे (यइमंपरमंगुह्यम्) इसवचनकेस्थानविषे (यइदंपरमंगुह्यम्) इसप्रकारकाभीपाठहोवैहै ॥ इसप्रकारकेपाठविषेभी सोपूर्वउक्तअर्थहींजानणा इति ॥ ६८ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) नचतस्मान्मनुष्येषुकश्चिन्मेप्रियकृत्तमः ॥ भवितानचमेतस्मादन्यःप्रियतरोभुवि ॥ ६९ ॥ नं । चं । तस्मात् ।

मनुष्येषु । कश्चित् । मे । प्रियकृत्तमः । भविता । न । च । मे । तस्मात् । अन्यः । प्रियतरः । भुवि ॥ ६९ ॥ (इतिपद०)
हेअर्जुन तथा सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे तिसपुरुषतैं अन्य कोईभीमनुष्य मैंपरमेश्वरविषयक अतिशयप्रीतिवाला नहींहै नहींहो
वैगा तथा मैंपरमेश्वरकूंभी तिसतैं अन्यपुरुष इसपृथिवीविषे अत्यंतप्रिय नहींहै ॥ ६९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकेभक्तोंविषे इसगीताशास्त्रकेसंप्रदायकीप्रवृत्तिकरणेहाराजोविद्वान्पुरुषहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषतैंअन्य सर्वमनुष्योंकेमध्यविषेकोईभी मनुष्य मैंपरमेश्वरविषयक अतिशयप्रीतिवाला इसवर्त्तमानकालविषेहैनहीं ॥ तथा पूर्वकोई हुआनहीं ॥ तथा आगेकोईहोवैगानहीं ॥ किंतु सोसंप्र दायकाप्रवर्त्तक विद्वान्पुरुषहीं मैंपरमेश्वर विषयक अतिशयप्रीतिवालाहै ॥ हेअर्जुन केवल सोविद्वान्पुरुषहीं मैंपरमेश्वरविषयक अतिशयप्रीतिवालानहींहैं ॥ किंतु मैंपरमेश्वरकूंभी तिससंप्रदायप्रवर्त्तक विद्वान्पुरुषतैंअन्य कोईभीपुरुष अतिशयप्रीतिकाविषयक पूर्वनहींहोताभयाहै ॥ तथा अबी इसभूमिलोकविषेहै नहीं तथा आगेहोवैगानहीं किंतु सोसंप्रदायकाप्रवर्त्तकविद्वान्पुरुषहीं मैंपरमेश्वरकूं अतिशयप्रीतिकाविषयहै ॥ इति ॥ ६९ ॥ ❀ ॥ तहां (यइमं परमंगुह्यम्) इत्यादिकदोश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान्नैं इसब्रह्मविद्यारूपगीताशास्त्रकेअध्यापककेफलकूं कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् इसगीताशास्त्रकेअध्ययन करणेहारेपुरुषकेफलकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अध्येष्यतेचयइमंधर्म्यंसंवादमावयोः ॥ ज्ञानयज्ञेनतेनाहमिष्टःस्यामितिमेमतिः ॥ ७० ॥ अध्येष्यते । च । यः ।
इमम् । धर्म्यं । संवादम् । आवयोः । ज्ञानयज्ञेन । तेन । अहम् । इष्टः । स्याम् । इति । मे । मतिः ॥ ७० ॥ (इतिपदच्छेदः)॥
हेअर्जुन पुनः जोपुरुष तुमहैंमदोनोंके संवादरूप तथाधर्म्यरूप इसगीताशास्त्रकूं अध्ययनकरैगा तिसपुरुषकरिकै मैंपरमेश्वर ज्ञान
यज्ञकरिकै पूजित होवंउहूं इसप्रकारका मैंपरमेश्वरका निश्चयहै ॥ ७० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मोक्षकेप्राप्तिकाकारणरूपजोआत्मज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानरूपधर्मकाकारणहोणेतैं धर्म्यरूप अथवा धर्मतैं अविरुद्धहोणेतैंधर्म्यरूप जोयह तुमारा हमारासंवादरूप गीताशास्त्रहै ॥ इसगीताशास्त्रकूं जोअधिकारीपुरुष अध्ययनकरैगा ॥ अर्थात् जपरूपकरिकैपाठकरैगा ॥ तिसपाठकरणेहारेपुरुषकरिकै मैंपरमेश्वर ज्ञानयज्ञकरिकै पूजितहोउंगा ॥ अर्थात् इसगीताशास्त्रकेचतुर्थअध्यायविषे द्रव्ययज्ञादिकसर्वयज्ञोंतैं श्रेष्ठरूपकरिकैकथनकऱ्याजो ज्ञानरूपयज्ञहै ॥ तिसज्ञानरूप यज्ञकरिकै मैंपरमेश्वर तिसपाठकपुरुषकरिकै पूजितहोवउंगा ॥ इसप्रकारका मैंपरमेश्वरकानिश्चयहै ॥ यद्यपि यहपुरुष इसगीताशास्त्रकेअर्थकूंनहींजानताहुआहीं

इसगीताशास्त्रकेपाठमात्रकूंकरेहै ॥ तथापि तिसपाठकूंश्रवणकरणेहारे मैंपरमेश्वरकूं यहपुरुष इसगीताकेपाठकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहै याप्रकारकी बुद्धिहोवैहै ॥ इसकारणतैं सोपाठकपुरुष तिसपाठमात्रतैंभी ज्ञानयज्ञकेफलरूपमोक्षकूं अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीउत्पत्तिद्वारा प्राप्तहोवैहै ॥ जबी यहपुरुष इसगीताशास्त्रकेपाठमात्रतैंभी परंपराकरिकै मोक्षरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी इसगीताशास्त्रकेअर्थकेअनुसंधानपूर्वक इसगीताशास्त्रकूंपठनकरताहुआ यहपुरुष साक्षात्‌हीं तिसमोक्षरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ तहां (श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप) इसवचनकरिकै पूर्वचतुर्थअध्यायविषे द्रव्यमयादिकसर्वयज्ञोंतैं ज्ञानयज्ञकीश्रेष्ठता कथनकरीआयेहैं इति ॥ ७० ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व इसगीताशास्त्रके वक्तापुरुषकेफलकूं तथा अध्ययनकरणेहारेपुरुषकेफलकूंकथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् इसगीताशास्त्रकेश्रोतापुरुषकेफलकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रद्धावाननसूयश्चशृणुयादपियोनरः ॥ सोपिमुक्तःशुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥७१॥श्रद्धावान् । अनसूयः ।
च । शृणुयात् । अपि । यः । नरः । सः । अपि । मुक्तः । शुभान् । लोकान् । प्राप्नुयात् । पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥
हेअर्जुन जो पुरुष श्रद्धावान्‌हुआ तथा असूयादोषतैंरहितहुआ इसगीताशास्त्रकूं केवल श्रवणमात्रहीं करेहै श्रोतापुरुष भी सर्वपा
पोंतैंमुक्तहुआ पुण्यकर्मवालापुरुषोंके शुभ लोकोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ७१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन लोकोंऊपरिकरुणाकरिकै इसगीताशास्त्रका ऊँचैस्वरतैंपाठकरणेहारा जो अन्यपुरुषहै ॥ तिसअन्यपुरुषकेमुखतैं जोकोईपुरुष आस्तिक्यबुद्धिरूपश्रद्धावान्‌हुआ तथादोषकाआरोपणरूपअसूयादोषतैंरहितहुआ इसगीताशास्त्रकूं केवल श्रवणमात्रहींकरेहै ॥ अर्थात् यहपुरुष इसगीताशास्त्रका ऊँचैस्वरकरिकै पाठ किसवासतैकरताहै अथवा यहपुरुष इसगीताशास्त्रका असंबद्ध पाठकरताहै इत्यादिकदोषोंकूं वक्तापुरुषविषे नहीं आरोपणकरताहुआ जोपुरुष श्रद्धावान्‌होइकै इसगीताशास्त्रके केवल पाठमात्रकूंभी श्रवणकरेहै ॥ सो केवल पाठमात्रकाश्रोतापुरुषभी सर्वपापोंतैंमुक्तहुआ अश्वमेधादिकपुण्यकर्मोंकेकरणेहारेधर्मात्मापुरुषोंके शुभलोकोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् जिनउत्तमलोकोंकूं अश्वमेधादिकपुण्यकर्मोंकेकरणेहारेपुरुष प्राप्तहोवैहैं ॥ तिनउत्तमलोकोंकूंहीं सोगीताकेपाठमात्रकूं श्रवणकरणेहारापुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ ईहां (शृणुयादपि सोपि) इसवचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिकै श्रीभगवान्‌नैं यहकैमुतिकन्याय सूचनकऱ्या ॥ इसगीताशास्त्रकेअर्थज्ञानतैंरहितकेवल अक्षरमात्रकाश्रोतापुरुषभी जबी उत्तमलोकोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तबी इसगीताशास्त्रकेअर्थज्ञानपूर्वक इसगीताशास्त्रकाश्रवणकरणेहारापुरुष तिनउत्तमलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ तहां इसप्रकारकाफल श्रीभागवतविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहां

श्लोक ॥ (वासुदेवकथाप्रश्नःपुरुषांस्त्रीन्पुनातिहि ॥ वक्तारंपृच्छकंश्रोतुंस्तत्पादसलिलंयथा) अर्थयह ॥ परमेश्वररूपवासुदेवकीकथाकाजोप्रश्नहै ॥ सोप्रश्न तीनपुरुषोंकूं पावनकरेहै ॥ एकतौं वक्तापुरुषकूं पावनकरेहै ॥ और दूसरा प्रश्नकरणेहारेपुरुषकूं पावनकरेहै ॥ और तीसरा श्रोतापुरुषोंकूं पावनकरेहै ॥ जैसे विष्णुकेपादकाउदक पावनकरेहै इति ॥ ७१ ॥ ❀ ॥ तहां जबपर्यंत शिष्यकूं संशयविपर्ययरहित आत्मज्ञानकीउत्पत्तिहोवै ॥ तबपर्यंत ब्रह्मवेत्ताकृपालुगुरुवोंनैं उपदेशकरणेकाप्रयास करणा ॥ इसप्रकारकेगुरुकेधर्मकीशिक्षाकरणेअर्थ सर्वज्ञभीश्रीकृष्णभगवान् अर्जुनकेप्रति अबीतुमारेकूंउपदेशकीअपेक्षानहींहै इसअर्थके जनावणेवासतै पूछेहै ॥

(मू० श्लो०) कच्चिदेतच्छ्रुतंपार्थत्वयैकाग्रेणचेतसा ॥ कच्चिदज्ञानसंमोहःप्रनष्टस्तेधनंजय ॥ ७२ ॥ कच्चित् । एतत् । श्रुतं । पार्थ । त्वया । एकाग्रेण । चेतसा । कच्चित् । अज्ञानसंमोहः । प्रनष्टः । ते । धनंजय ॥ ७२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपार्थ तुमनैं यहगीताशास्त्र एकाग्र चित्तकरिकै क्यां श्रवणकऱ्या हेधनंजय तुमारा अज्ञानकृतसंमोह क्यां नष्टहूआ यहतूं हमारेप्रतिकहु ॥ ७२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमआप्तसर्वज्ञपरमेश्वरनैं तुमारेतांई उपदेशकऱ्याजो यहब्रह्मविद्यारूपगीताशास्त्रहै ॥ सोयहगीताशास्त्र तुमनैं एकाग्रचित्तकरिकै क्याश्रवण कऱ्या ॥ अर्थात तुमनैंयहगीताशास्त्र क्याअर्थसहितनिश्चयकऱ्या ॥ हेधनंजय इसगीताशास्त्रकेश्रवणकरिकै तुमारा अज्ञानकृतविपर्ययरूपसंमोह अज्ञानरूपकारण सहित क्यानष्टहूआ ॥ तापर्त्ययह ॥ सो अज्ञानकृतसंमोह कदाचित् अबपर्यंतभी तुमारा नष्टनहींहूआहोवै ॥ तौं मैंभगवान् वासुदेवतुमारेतांई पुनःभी उपदेशकरूं ॥ यहआपणेचित्तकावृत्तांत तूं हमारेआगेकथनकर इति ॥ ईहां (कच्चित्) यहदोनोंशब्द प्रश्नकेवाचकहैं ॥ तहां अनात्मारूपदेहादिकोंविषे जोआत्मत्वबुद्धिहै ॥ तथास्वधर्मरूपयुद्धविषे जोअधर्मत्वबुद्धिहै ॥ सोविपर्ययहीं ईहां अज्ञानकृतसंमोह जानणा इति ॥ ७२ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार श्रीभगवान्करिकै पूछाहूआ अर्जुन मैं अबी कृतार्थहूआहूं यातैं हमारेकूं पुनःउपदेशकीअपेक्षानहींहै इसप्रकारके आपणेअभिप्रायकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ नष्टोमोहःस्मृतिर्लब्धात्वत्प्रसादान्मयाच्युत ॥ स्थितोस्मिगतसंदेहःकरिष्येवचनंतव ॥ ७३ ॥ नष्टः । मोहः । स्मृतिः । लब्धा त्वत्प्रसादात् । मया अच्युत । स्थितः । अस्मि । गतसंदेहः । करिष्ये । वचनं । तव ॥ ७३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअच्युत मैंअर्जुननैं तुमारेप्रसादतैं आत्मज्ञानरूपस्मृति पांईहै ताकरिकै हमारा सोमोह नष्टहोताभयाहै याकारणतैं सर्वसंशयोंतैं रहितहूआ मैंतुमारीशासनाविषे स्थित हूंवाहूं सो तुमारा वचन मैंकरूंगा ॥ ७३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ अच्युत अर्थात् यहकृष्णभगवान् हमारा आत्मारूपहींहै इसप्रकारतैं आत्मारूपकरिकैनिश्चितहोणेतैं वियोगहोणेकेअयोग्य हेकृष्ण ॥ हमारा सोअ ज्ञानकृतविपर्ययरूपमोह नष्टहोताभयाहै हेअर्जुन सोतुमारा विपर्ययरूपमोह किसकरिकैनष्टहोताभयाहै ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ अर्जुन तामोहनाशकेकारणकूं कथनकरेहै (स्मृतिर्लब्धात्वत्प्रसादान्मया इति) हेभगवन् जिसकारणतैं मैंअर्जुननैं तुमारे इसब्रह्मविद्यारूपगीताशास्त्रकेउपदेशतैं सर्वसंशयोंतैंरहित अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकाआत्मज्ञानरूपस्मृति पाईहै ॥ इसकारणतैं सर्वप्रतिबंधतैंशून्य तिसआत्मज्ञानकरिकै सोहमारा अज्ञानकृत विपर्ययरूपमोह नष्टहोताभयाहै ॥ तहां (स्मृतिलंभेसर्वग्रंथीनांविमोक्षः) ॥ अर्थयह ॥ मैंहींपरब्रह्मरूपहूं इसप्रकारकीस्मृतिकेप्राप्तहुए इसपुरुषके सर्वचिज्जडग्रंथियोंकाविनाशहोवैहे ॥ इसश्रुतिकेअर्थ कूंअनुभवकरताहुआ अर्जुन कहेहैं (स्थितोस्मिगतसंदेहःइति) हेभगवन् तिसआत्मज्ञानरूपस्मृतिकीप्राप्तिकरिकै मैंअर्जुन सर्वसंदेहोंतैंरहितहुआ तुमारेयुद्धकीकर्त्त व्यतारूपशासनाविषे स्थितहुवाहूं ॥ हेभगवन् जबपर्यंत हमाराजीवनहै ॥ तबपर्यंत मैंअर्जुन तुमारेवचनकूं सत्यकरूंगा ॥ अर्थात् तैंपरमगुरुरूपभगवान्‌की आज्ञाकूं मैं अवश्यकरिकै पालनकरूंगा ॥ इसप्रकार श्रीभगवान्‌कृतउपदेशकेप्रयासकीसफलताकेकथनकरिकै अर्जुन श्रीभगवान्‌कूं संतुष्टकरताभया ॥ इतनैंक हणेकरिकै इसगीताशास्त्रकेअध्ययनकरणेहारेपुरुषकूं श्रीभगवानकेप्रसादतैं मोक्षरूपफलपर्यंत आत्मज्ञान अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहे इसप्रकारका इसगीताशास्त्रकाफल उपसंहारकऱ्या ॥ जैसे (तद्धास्यविजज्ञौ) इसश्रुतिविषे मोक्षपर्यंतआत्मज्ञानरूपफलकाउपसंहारकऱ्याहै इति ॥ ईहां (गतसंदेहः) इसवचनकरिकै अर्जुननैं देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे आत्मत्वबुद्धिरूपमोहकानाश दिखाया ॥ और (करिष्येवचनंतव) इसवचनकरिकै अर्जुननैं स्वधर्मरूपयुद्धविषेअधर्मत्वबुद्धिरूपमो हकानाश दिखाया ॥ तहां देहादिकअनात्मपदार्थोंविषेआत्मत्वबुद्धिरूपमोहतौं सर्वप्राणीमात्रविषेविद्यमानहोणेतैं साधारणमोह कह्याजावैहे ॥ और युद्धरूपस्व धर्मविषेअधर्मत्वबुद्धिरूपमोहतौं केवल अर्जुनविषेहीं विद्यमानहोणेतैं असाधारणमोह कह्याजावैहे ॥ इसदोनोंप्रकारकेमोहकेनिवृत्तकरणेवास्तैहीं श्रीभगवान्‌नैं अर्जुनकेप्रति यहगीताशास्त्र उपदेशकऱ्याहै ॥ सोप्रकार गीताशास्त्रकेद्वितीय अध्यायकेआदिविषे कथनकरिआयेहैं इति ॥ ७३ ॥ ❀ ॥ तहां इतनैंपर्यंत इसगीताशास्त्रकेअर्थकूंसमाप्तकरिकै ॥ अब संजय पूर्वउक्तकथाकेसंबंधकूंअनुसंधानकरताहुआ धृतराष्ट्रकेप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) संजयउवाच ॥ इत्यहंवासुदेवस्यपार्थस्यचमहात्मनः ॥ संवादमिममश्रौषमद्भुतंरोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥ इति । अहम् । वासुदेवस्य । पार्थस्य । च । महात्मनः । संवादम् । इमम् । अश्रौषम् । अद्भुतम् । रोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र मैंसंजय महानुभाव वासुदेवके तथा अर्जुनके इस अद्भुत रोमहर्षण संवादकूं पूर्वउक्तप्रकारतैं श्रवणकरताभयाहूं ॥ ७४ ॥ (इतिप०) ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र मैंसंजय महानुभाव श्रीवासुदेवके तथाअर्जुनके इसपूर्वउक्तगीताशास्त्ररूपसंवादकूं श्रवणकरताभयाहूं ॥ कैसाहैयहसंवाद अद्भुतहै ॥ अर्थात् चित्तकूंअत्यंतविस्मयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ पुनःकैसाहैयहसंवाद रोमहर्षणहै ॥ अर्थात् लोकोंविषेअसंभाव्यमानहोणेतैं तथाअद्भुतरसवालाहोणेतैं शरीरकेरोमों कूं खडाकरणेहाराहै इति ॥ ७४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेसंजय दूरदेशविषेस्थित श्रीकृष्णभगवान्अर्जुनकेसंवादकूं तूंईहांबैठा कैसे श्रवणकरताभयाहै ॥ जिस कारणतैंसमीपस्थितपुरुषकाहीं वचन श्रवणकरणेविषेआवैहै ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ संजय आपणेविषे तिससंवादकेश्रवणकरणेकीयोग्यताकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानिमंगुह्यमहंपरम् ॥ योगंयोगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतःस्वयम् ॥ ७५ ॥ व्यासप्रसादात् । श्रुतवान् । इमम् । गुह्यं । अहम् । परम् । योगम् । योगेश्वरात् । कृष्णात् । साक्षात् । कथयतः । स्वयम् ॥ ७५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र श्रीव्यासकेप्रसादतैं मैंसंजय ईस परम गुह्य योगकूं साक्षात्आपहीं कथनकरतेहुए योगेश्वर कृष्णभगवान्तैं साक्षात् श्रवणकरताभयाहूं ॥ ७५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र श्रीव्यासभगवान्नैं हमारेकूं प्राप्तकऱ्येजे दिव्यचक्षुश्रोत्रादिकहैं ॥ यहहीं श्रीव्यासभगवान्का हमारेपरिप्रसादहै ॥ तिसव्यासभगवान्के प्रसादतैं मैंसंजय इससंवादकूं साक्षात्आपणेपरमेश्वररूपकरिकैकथनकरतेहुए सर्वयोगीजनोंकेईश्वररूप श्रीकृष्णभगवान्तैं साक्षातहीं श्रवणकरताभयाहूं ॥ कोईपरं पराकरिकै मैं तिससंवादकूं नहींश्रवणकरताभयाहूं ॥ इतनैंकहणेकरिकै संजयनैं आपणीअहोभाग्यता सूचनकरी ॥ कैसाहैसोसंवाद गुह्यहै ॥ अर्थात् सर्वशास्त्रोंकारहस्यरूपहोणेतैं जिसीकिपुरुषकेताईं नहींदेणेयोग्यहै ॥ पुनःकैसाहैसंवाद परहै ॥ अर्थात् मोक्षकासाधनहोणेतैं सर्वतैंश्रेष्ठहै ॥ पुनःकैसाहैसंवाद योगहै ॥ अर्थात् नियमपूर्वक चित्तके निरोध रूपयोगकाहेतु होणेतैं योगरूपहै ॥ अथवा ज्ञानयोगरूपहै ॥ ईहां किसीमूलपुस्तकविषे (श्रुतवानिमं) इस वचनकेस्थानविषे (श्रुतवानेतत्) इसप्रकारकाभीपाठ होवैहै ॥ सोपाठभीसमीचीनहींहै इति ॥ ७५ ॥ ❀ ॥ अब संजय तिससंवादकेस्मरणजन्य आपणे आह्लादकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) राजन्संस्मृत्यसंस्मृत्यसंवादमिममद्भुतम् ॥ केशवार्जुनयोःपुण्यंहृष्यामिचमुहुर्मुहुः ॥ ७६ ॥ राजन् । संस्मृत्य । संस्मृत्य । संवादम् । इमम् । अद्भुतं । केशवार्जुनयोः । पुण्यं । हृष्यामि । च । मुहुः मुहुः ॥ ७६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र श्रीकृष्ण अर्जुनके ईस पुण्यरूप अद्भुत संवादकूं स्मरणकरिकै स्मरणकरिकै मैं वारंवार हर्षकूंप्राप्तहोवुंहूं ॥ ७६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र श्रीकृष्णभगवान्का तथाअर्जुनका जोयह गीताशास्त्ररूपसंवादहै ॥ कैसाहै यह संवाद अद्भुतहै ॥ अर्थात् चित्तकूंविस्मयकोप्राप्तिकर णेहाराहै ॥ पुनः कैसाहै यहसंवाद पुण्यहै अर्थात् केवल श्रवणमात्रकरिकेभी सर्वपापोंकूंनाशकरणेहाराहै ॥ ऐसेअद्भुतसंवादकूं मैंसंजय केवलश्रवणहीं नहींकरता भयाहूं ॥ किंतु तिसश्रवणकऱ्येहुएसंवादकूं अबी पुनः पुनः स्मरणकरिकै वारंवार हर्षकूंभीप्राप्तहोताहूं ॥ अथवा (हृष्यामि) इसवचनका यहअर्थकरणा ॥ तिससंवादकूं पुनः पुनः स्मरणकरिकै वारंवार हमारेशरीरकेरोम खडेहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वअनेकजन्मोंविषे हमनैं ऐसाकौंनपुण्यकर्मकऱ्याहै ॥ तथाऐसा कौंनतपकऱ्याहै तथा ऐसाकौंनदानकऱ्याहै ॥ जिसकेप्रभावतैं यह कृष्णभगवान् अर्जुनकासंवादरूप गीताशास्त्र हमारेकूंश्रवणहुआहै ॥ तिसपुण्यविशेषकूं मैं जानिसकतानहीं इति ॥ ७६ ॥ ❁ ॥ तहां श्रीकृष्णभगवान् अर्जुनकेप्रति ध्यानकरणेवासतै जोआपणा विश्वरूपनामा सगुणरूपदिखावताभयाहै ॥ तिस विश्वरूपकूंस्मरणकरताहुआ संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) तच्चसंस्मृत्यसंस्मृत्यरूपमत्यद्भुतंहरेः ॥ विस्मयोमेमहान्राजन्हृष्यामिचपुनःपुनः ॥ ७७ ॥ तत् । च । संस्मृत्य । संस्मृत्य । रूपम् । अत्यद्भुतम् । हरेः । विस्मयः । मे । महान् । राजन् । हृष्यामि । च । पुनः । पुनः ॥ ७७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र पुनः कृष्णभगवान्के तिस आति अद्भुत विश्वरूपकूं स्मरणकरिकै स्मरणकरिकै हमारेकूं महान् विस्मय होवैहै इसकारणतैंहींमै पुनःपुनः हर्षकूंप्राप्तहोवूंहूं ॥ ७७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ धृतराष्ट्र श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति ध्यानकरणेवासतै दिखायाजो आपणा विश्वरूपनामा सगुणरूपहै ॥ तिसश्रीकृष्णभगवान्के अतिअद्भुत विश्व रूपनामा सगुणरूपकूं पुनः पुनःस्मरणकरिकै हमारेकूं महान् विस्मय होवैहै ॥ इसीकारणतैंहीं मैंसंजय पुनः पुनः हर्षकूंप्राप्तहोवुंहूं इति ॥ ७७ ॥ ❁ ॥ हेधृतराष्ट्र तूं आपणेदुर्योधनादिकपुत्रोंकेविजयादिकोंकीआशाकापरित्यागकरिकै इनपांडवोंकेसाथि मिलापकर ॥ इसअर्थकूं अब संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरेहै॥

(मू० श्लो०) यत्रयोगेश्वरःकृष्णोयत्रपार्थोधनुर्धरः ॥ तत्रश्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥ इतिश्रीमद्भग०सूपनि० ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेमोक्षसंन्यासयोगोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ यत्र । योगेश्वरः । कृष्णः । यत्र । पार्थः । धनुर्धरः । तत्र । श्रीः । विजयः । भूतिः । ध्रुवा । नीतिः । मतिः । मम ॥ ७८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र जिसप

क्षविषे योगेश्वर कृष्णभगवान्है तथा जिसपक्षविषे धनुषकूंधारणकरणेहारा अर्जुनहै तिसपक्षविषे श्री विजय भूतिः नीति अवश्यहोवैंगी इसप्रकारका हमारा निश्चयहै ॥ ७८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र जिसयुधिष्ठिरकेपक्षविषे सर्वयोगसिद्धियोंकाईश्वर तथासर्वज्ञ तथासर्वशक्तिसंपन्न तथाभक्तजनोंकेदुःखकूंनष्टकरणेहारा नारायणनामवाला श्रीकृष्णभगवान् स्थितहै ॥ तथा जिसयुधिष्ठिरके पक्षविषे गांडीवनामाधनुषकूंधारणकरणेहारा नरनाम अर्जुन स्थितहै ॥ तिसनरनारायणकरिकैआश्रितयुधिष्ठिरकेपक्षविषे श्री विजय भूति नीति यहच्यारों अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैंगे ॥ तहां राज्यलक्ष्मीकानाम श्रीहै ॥ और शत्रुवोंकेपराजयनिमित्तक जोउत्कर्षहै ताकानाम विजयहै ॥ और उत्तरउत्तर राज्यलक्ष्मीकीजावृद्धिहै ताकानाम भूतिहै ॥ और न्याय्यकानाम नीतिहै ॥ हेधृतराष्ट्र इसप्रकारका हमारा निश्चयहै सोहमारानिश्चय यथार्थहींहै ॥ यातैं तूं आपणेदुर्योधनादिकपुत्रोंकेविजयकीव्यर्थआशाकूं परित्यागकरिकै भगवत्करिकैअनुगृहीत तथालक्ष्मीविजयादिकोंकरिकै युक्तऐसेयुधिष्ठिरादिकपांडवोंकेसाथि मिलापकूंहींकर इति ॥ ७८ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ कांडत्रयात्मकंशास्त्रंगीताख्यंयेननिर्मितम् ॥ आदिमध्यांतषट्केषुतस्मै भगवतेनमः ॥ १ ॥ कालकूटसमोदोषोयस्यकंठेलवायते ॥ गुणोपिवाकलामात्रोयस्यभूषायतेसतः ॥ तमहंपुरुषंवंदेऽविद्यादोषहरंपरम् ॥ २ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमत्स्वाम्युद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायामष्टादशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १८ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति अष्टादशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १८ ॥

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां "श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रणालयाधिपतिना खेमराज श्रीकृष्णदास इत्यनेन-स्वकीये "श्रीवेंकटेश्वर" मुद्रणागारे मुद्रितम् ।

संवत् १९५३, शके १८१८, सन् १८९६.

इति स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाटीकासहितभगवद्गीता समाप्ता